www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इक्कीसवीं सदी के लिए हमें क्या करना होगा ?

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

— श्रीराम शर्मा आचार्य

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

VICHARKRANTI PUSTAKALAY
SURAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इक्कीसवीं सदी के लिए हमें क्या करना होगा?

लेखक :
पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

प्रकाशक :
युग निर्माण योजना
गायत्री तपोभूमि, मथुरा
फोन (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९

पुनरावृत्ति सन् २००६ मूल्य : १०.०० रुपया

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रकाशक :
युग निर्माण योजना
गायत्री तपोभूमि, मथुरा-३

लेखक
पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

प्रथम संस्करण सन् १९९०
पुनरावृत्ति सन् २००६

मूल्य : १०.०० रुपये

मुद्रक
युग निर्माण योजना प्रेस
गायत्री तपोभूमि, मथुरा-३
फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

विषयानुक्रम

१.	इस बार का वसंत पर्व एवं उसकी उपलब्धियाँ	५
२.	माथापच्ची निरर्थक नहीं गई	११
३.	तपने और तपाने की आवश्यकता क्यों पड़ी?	१४
४.	हम बिछुड़ने के लिए नहीं जुड़े हैं	२०
५.	अध्यात्म अविश्वस्त सिद्ध हुआ तो	२५
६.	प्रगति के त्रिविध अवलंबन	३२
७.	समय संपदा का श्रेष्ठतम सदुपयोग	४०
८.	प्रगति के चार चरण	४७
९.	युग चेतना का प्रसारण	४९
१०.	सत्संग प्रशिक्षण एवं संगठन	५४
११.	महान लक्ष्य की विकेंद्रीकरण योजना	५९
१२.	तीर्थ प्रक्रिया का पुनर्जीवन	६४
१३.	सृजनशिल्पियों का समर्थ शिक्षण	७३
१४.	सहस्रकुण्डी महायज्ञों का देशव्यापी सरंजाम	८०
१५.	महिलाओं की महानता उभरे	८७
१६.	युग प्रतिभाएँ इस तरह आगे आएँ	९४
१७.	यह सरल है, कठिन नहीं	१०१
१८.	शेष जीवन का उत्सर्ग	१०४
१९.	अपने को बदल क्यों न दें?	१०७
२०.	दीपयज्ञों की अति सरल एवं अत्यंत प्रेरक प्रक्रिया	१०९

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इस बार का वसंत पर्व एवं उसकी उपलब्धियाँ

लंबी मंजिल लगातार चलकर पार नहीं की जाती। बीच में सुस्ताने के लिए विराम भी देना पड़ता है। रेलगाड़ी जंक्शन पर खड़ी होती है। पुराने मुसाफिर और असबाब उतारे जाते हैं। नए चढ़ाए जाते हैं। ईंधन भरने और सफाई करने की भी आवश्यकता पड़ती है। आर्थिक वर्ष पर पुराना हिसाब-किताब जाँचा जाता है और नया बजट बनता है। भ्रूण माता के गर्भ में रहकर अंग-प्रत्यंगों को इस योग्य बना लेता है कि शेष जीवन उसके बाद काम में लगाया जा सके। किसान हर साल नई फसल बोने और काटने का क्रम जारी रखता है। ये सब कृत्य लगातार नहीं होते, बीच में विराम के क्रम भी चलते रहते हैं। फौजियों की टुकड़ी भी कूच के समय में बीच-बीच में सुस्ताती है।

ब्रह्मकमल की एक फुलवारी अस्सी वर्ष तक हर साल एक नया पुष्प खिलाने की तरह अपनी मंजिल का एक विराम निर्धारण पूरा कर चुकी। अब नई योजना के अनुरूप नयी शक्ति संग्रह करके नया प्रयास आरंभ किया जाना है। यह विराम प्रत्यावर्तन लगभग वैसा ही है, जैसे वयोवृद्ध शरीर को त्यागकर नए शिशु के रूप में नया जन्म लिया जाता है और नए नाम से संबोधन किया जाता है।

सभी को तो नहीं पर साथ में जुड़े हुए लोगों को इसका संकेत था। इसलिए उन्हें भूतकाल के आश्चर्यजनक रहस्यों और भविष्य के अभूतपूर्व निर्धारणों के संबंध में अधिक कुछ जानने की उत्सुकता एवं जिज्ञासा उभरी। समय रहते उन्होंने प्रत्यक्ष पूछताछ करने की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आतुरता प्रदर्शित की। सन् १९९० का वसंत पर्व आने के कई महीने पूर्व आत्मीयजनों के हरिद्वार आने का तांता लग गया। आगमन का उद्देश्य वह लाभ उठाने का था, जो किसी बड़े व्यवसायी के कारोबार में भागीदार बन जाने वालों को सहज ही मिलने लगता है। अनुसंधान-अन्वेषण भी एक कारण रहा है। रहस्यों का पता लगाने का सहज कुतूहल भी इस उत्साह का निमित्त कारण हो सकता है। जो हो, पिछले छह महीने इसी ऊहापोह में बीते हैं। इस बीच इतने प्रज्ञापुत्रों का आगमन हुआ, जितना कि इस आश्रम के निर्माण से लेकर अब तक के पूर्व वर्षों में कभी भी नहीं हुआ। बहुसंख्य परिजनों के आगमन से भी अधिक महत्त्वपूर्ण बात यह रही कि जिज्ञासुओं ने आग्रहपूर्वक वह सब उगलवा लिया, जो रहस्यमय समझा जाता है। महत्त्वपूर्ण स्थानांतरों के अवसर पर सहज सौम्यता इसके लिए बाध्य भी तो करती ही है कि चलते समय तो गोपनीयता का, आश्चर्य-असमंजस का समाधान कर ही दिया जाए। सो कुशल क्षेम, सहज आतिथ्य के अतिरिक्त ऐसा भी बहुत कुछ पूछा-बताया गया जिनका तनिक दूर रहने वालों को अनुभव भी नहीं था। जो आ नहीं सके उन्हें भी उन रहस्यमयी चर्चाओं की जानकारी प्राप्त करने से वंचित न रहना पड़े, यह विचार करते हुए आवश्यक रहस्यों को लिपिबद्ध कर देना उचित समझा गया, ताकि उपयोगी जानकारी से वे लोग भी वंचित न रहें, जो अब तक न सही, अगले दिनों संपर्क में आएँगे और अतीत के संबंध में उपयोगी जानकारी प्राप्त करने के लिए उत्सुक होंगे। कारण कि इस रहस्योद्घाटन में उनका भी तो ऐसा लाभ सन्निहित है जो सफल लोगों के, महामानवों के सहचरों को सहज मिलता रहता है।

अनुमान सभी को यह था कि इस तंत्र की प्रायः सभी महत्त्वपूर्ण गतिविधियों का प्रथम दिन वसंत पंचमी है, तो उस मुहूर्त को विशेष महत्त्व देने वाले आगंतुकों की संख्या निश्चय ही पहले दिनों की अपेक्षा निश्चित रूप से अधिक रहेगी। हुआ भी ठीक ऐसा ही।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आश्रम की परिधि और आगंतुकों के लिए साधनों की तुलनात्मक दृष्टि से कमी होने के कारण शांतिकुंज के आश्रमवासी इस तात्कालिक समस्या से निपटने में जुट गए। भूमि न मिल सकी, तो जितना स्थान पास में था उसे बहुमंजिला और सघन बनाया गया। लगभग सारा काम श्रमदान से हुआ और जितनों के लिए जगह थी उससे प्रायः ढाई-तीन गुनों के लिए जगह बना दी गई। भोजन व्यवस्था के लिए बड़े आधुनिक यंत्र-उपकरण नए सिरे से लगाए गए और ऊपरी मंजिल पर बने भोजनालय से नीचे खाद्य पदार्थ लाने के लिए एक गुड्स लिफ्ट को फिट किया गया। बिछाने के लिए फर्शों का अतिरिक्त प्रबंध किया गया। फिर भी असुविधा रहने की आशंका थी, पर काम किसी प्रकार चल गया, जैसे कि ईश्वर पर आश्रित लोगों का चल जाया करता है। इस बार वसंत पर्व न केवल आयोजन की दृष्टि से वरन स्वजनों के साथ आत्मीयता भरे परामर्श देने की दृष्टि से भी अनुपम रहा। लोगों ने इतना कुछ ऐसा-कुछ पाया जिसकी आशा या संभावना कदाचित थोड़ों को ही रही होगी।

सुनना अधिक-कहना कम, करना अधिक-बताना कम, सिखाना कम-सीखना अधिक जिनकी जीवन शैली रही हो, वे इतने गंभीर प्रसंगों को इतनी सरलतापूर्वक बता देंगे। इस स्थिति का प्रावधान पाकर आगंतुकों में से अधिकांश को भारी संतोष हुआ। प्रश्नों की, जिज्ञासुओं की झड़ी लगी रही। इतनों को एक व्यक्ति इतना कुछ प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से बता सकता है, यह प्रसंग भी अपने आप में अद्भुत रहा।

अधिकांश जिज्ञासुओं ने एक जिज्ञासा प्रधान रूप से प्रकट की कि साधन रहित एकाकी व्यक्ति सीमित समय में इतने भारी और इतने व्यापक काम कर सकता है, इसका रहस्य क्या है? पूछने वालों को उन सर्वविदित बातों का तो पता ही था जो कानों से सुनी और आँखों से देखी गई हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मूल प्रश्न था युग चेतना उभारने वाला इतना साहित्य कैसे सृजा गया? उसका अनेक भाषाओं में अनुवाद और प्रकाशन-प्रसार कैसे संपन्न हुआ? इतना बड़ा परिवार कैसे संगठित हो गया, जिसमें पाँच लाख पंजीकृत और इससे पाँच गुना अधिक सामयिक स्तर पर सम्मिलित उच्चस्तरीय व्यक्तियों का समुदाय जुड़ता चला गया और साथ चलता रहा? एक व्यक्ति के तत्त्वावधान में २४०० आश्रम-देवालय कैसे बन सके? शांतिकुंज, ब्रह्मवर्चस, गायत्री तीर्थ धाम जैसे बहुमुखी सेवा कार्य में संलग्न संरचनाओं की इतनी सुव्यवस्था कैसे बन सकी? सुधारात्मक और सृजनात्मक आंदोलन की देशव्यापी, विश्वव्यापी व्यवस्था कैसे बन गई? 'रोता आए हँसता जाए' वाला उपक्रम अनवरत रूप से कैसे चलता रहा? आदि-आदि ऐसे विदित-अविदित अगणित क्रिया-कलाप इन अस्सी वर्षों में घटित हुए हैं, जिनको इतने सुचारु रूप से चलाने की सूत्रसंचालक जैसे एक नगण्य एवं साधारण से व्यक्तित्व से आशा ही नहीं की जा सकती, फिर भी वे कैसे संपन्न होते चले गए?

जड़ी-बूटी चिकित्सा पर आधारित आयुर्वेद की नए सिरे से शोध कैसे बन पड़ी व मनोरोगों के निवारण और मनोबल के संवर्द्धन की ब्रह्मवर्चस प्रक्रिया कैसे चलती रही? सात पत्रिकाओं का संपादन-संचालन एकाकी प्रयास से कैसे चल पड़ा? लाखों शिक्षार्थी हर वर्ष प्रशिक्षण पाने से किस प्रकार लाभान्वित होते रहे? सृजनात्मक आंदोलनों को इतनी गति कैसे मिल सकी जितनी कि अनेकानेक संगठन और समुदाय भी नहीं उपलब्ध कर सके?

उपर्युक्त प्रत्यक्षदर्शी कृत्यों को जिन्होंने अंकुरित, पल्लवित और फलित होते देखा है, उनका समाधान एक उत्तर से हुआ है कि सर्वशक्तिमान सत्ता की इच्छा और प्रेरणा के अनुरूप अपने व्यक्तित्व,कर्तृत्व, मानस और श्रम को समर्पित कर सकने वालों से ऐसा कुछ बन पड़ना तनिक भी कठिन नहीं है। एक छोटी सी चिनगारी के ईंधन के अंबार से मिल जाने पर प्रचंड अग्निकांड बन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सकता है। पारस को छूकर लोहे का सोना बनने वाली उक्ति प्रसिद्ध है। फिर भगवान के साथ रहने की, सर्वतोभावेन जुड़ने वालों की स्थिति वैसी क्यों नहीं हो सकती जैसी कि बिजली के विशाल उत्पादन केंद्र के साथ जुड़ जाने पर छोटे-मोटे यंत्र-उपकरणों की होती है और वे सहज ही चलते रहते हैं। बताया जाता रहा है कि यह सब कुछ मात्र कठपुतली के खेल की तरह होता रहा। श्रेय लकड़ी के खिलौने को नहीं, बाजीगर की उस कलाकारिता को मिलना चाहिए, जो परदे के पीछे रहकर उँगलियों में बँधे तारों के सहारे अद्‌भुत हलचल करके उन्हें चलने लायक बनाता और नचाता रहता है।

कुछ का समाधान तो हो गया, पर हजारों जिज्ञासु संदेह ही प्रकट करते रहे और पूछते रहे कि जब लाखों की संख्या में गिने जा सकने वाले भगवद्‌भक्त गई-गुजरी उपहासास्पद अवांछनीयताओं के बीच ही जीवन व्यतीत करते हैं, तब एक व्यक्ति ने ऐसा क्या किया जिससे उसे भगवान के अनुदान-अनुग्रह द्रोपदी को वस्त्र, सुदामा को गुरुकुल, नरसी मेहता को हुंडी तथा हनुमान, अर्जुन जैसे किन्हीं बिरलों को भगवत्सखा होने के रूप में मिले। संदेह सही भी था, पर जो उत्तर दिया गया, वह भी कम समाधान कारक नहीं था। पात्रता के अनुरूप उपलब्धियों का हस्तगत होना एक ऐसी वास्तविकता है जिसे हर कहीं चरितार्थ होते देखा जा सकता है। खोटे सिक्के ही सर्वत्र ठुकराए जाते हैं। खरे सोने की कीमत तो कहीं भी उठाई जा सकती है। भगवान से जो अपना स्वार्थ साधना चाहता है, उस प्रपंची-पांखडी को सदैव भगवान को उलाहना देने और निरंकुश कहते रहने की शिकायत रहती है। जिसने अपना सब कुछ पति के सामने सौंप दिया उस पत्नी को अपने पति की समूची संपत्ति, सहायता और सद्‌भावना मिलकर रहती है।

स्रष्टा की एक ही अपेक्षा है कि सुरदुर्लभ मानव तन तथा जीवन पाने वाला प्राणी उपलब्ध विभूतियों के सहारे स्रष्टा के विश्व उद्यान

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

को हरा-भरा रखने के लिए वफादार माली की भूमिका निभाए तो कोई कारण नहीं कि उसे आत्मसंतोष, लोक का सम्मान, श्रेय, यश तथा स्वामी का समुचित अनुग्रह-अनुदान प्राप्त न हो। इस तथ्य की परीक्षा करनी हो तो संसार में जन्मे अब तक के महामानवों की जीवनचर्या को साक्षी देने के लिए आमंत्रित किया जा सकता है। पुण्य और परमार्थ को उस बीज की तरह विकसित होते देखा जा सकता है जो आरंभ में राई के बराबर होता है, पर कुछ ही समय में विशालकाय बरगद वृक्ष की तरह उत्कर्ष के उच्च शिखर तक जा पहुँचता है। ईश्वर का अजस्र अनुदान प्राप्त करने का एक ही तरीका है और रहेगा कि स्वार्थ को परमार्थ में बदल दिया जाए,धर्मधारणा और सेवा-साधना को जीवनचर्या का अविच्छिन्न अंग बनाया जाए, भिखारी बनकर नहीं उदारचेता दानवीर बनकर भगवान के दरवाजे पर पहुँचा जाए और अनुदान का प्रतिदान असंख्य गुनी मात्रा में वापस लौटाया जाए।

'साधना से सिद्धि' प्राप्त होने के रहस्य का उद्घाटन करने के इच्छुकों में से प्रत्येक को यही जताया और जनाया गया है कि सत्प्रवृत्तियों के संवर्द्धन हेतु अपने को प्रखर, प्रामाणिक, साहसी और उदारचेता बनाया जाए, तो उतने भर से अनेकानेक कर्मकांडों की आवश्यकता पूरी हो जाती है और बदले में वह मिल जाता है, जो सच्चे भगवद् भक्तों को मिलना चाहिए। साधना अपने आप को संयमी और सुसंस्कृत बनाने की की जाती है। इसके लिए स्रष्टा की एकमात्र इच्छा को पूरा करना पड़ता है कि संयमशील, उदारचेता स्तर का परमार्थ परायण जीवन जिया जाए। साधु, ब्राह्मण, संत, सुधारक और शहीद इसी स्तर के होते रहे हैं। उनकी साधारण-सी पूजा उपासना भी तिल से ताड़ और राई से पर्वत बनती देखी जा सकती है। ईश्वर समर्पित मनुष्य ही देव मानव कहलाते हैं और उन्हीं में वे सिद्धियाँ-विभूतियाँ प्रकट होती हैं जिनके बारे में एक व्यक्ति के माध्यम से बन पड़े अनेकानेक महान कार्यों की चर्चा एवं पूछताछ की जाती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

माथापच्ची निरर्थक नहीं गई

इस बार का वसंत पर्व एक प्रकार का ब्रह्म यज्ञ रहा। शांतिकुंज की भूमि पर उन दिनों यही समुद्र मंथन होता रहा और जिज्ञासुओं को यह पता चल सका कि मनुष्य का निजी पुरुषार्थ नगण्य है। उसकी इच्छा-आकांक्षा तृष्णा, वासना और अहंता से आगे नहीं बढ़ती। उसी छोटे दायरे में वह कूपमंडूक एवं गूलर के भुनगे की तरह अपनी बहुमूल्य जीवन संपदा को विसर्जित कर देता है। पूजा-पत्री छिटपुट पूजा-पाठ तक, तनिक से उपहार मनुहार तक सीमित रखकर वह स्वयं संतुष्ट रहता एवं उसे ईश्वर उपासना मानकर मन बहलाता, पास-पड़ोस वालों को बहकाता रहता है। ऐसी दशा में प्रवंचना की विडंबना उन्हें मात्र निराशा ही प्रदान करती है, जो अपने को भक्तजनों की श्रेणी में गिन लेते हैं।

शक्ति के स्रोत ईश्वर के साथ जुड़कर मनुष्य भी हिमालय से निकलने वाली गंगा की तरह अपना और संसार का भला करने में समर्थ होता है। जिन सफलताओं के संबंध में चर्चा होती रहीं, वे मात्र सर्वविदित, सुपरिचित एवं दृश्यमान हैं। इस शृंखला में अभी और कुछ कहीं अधिक जानने योग्य शेष रह जाता है, जिसको आँखों से नहीं देखा गया, कानों से नहीं सुना गया, वरन उसे समयानुसार फिर कभी पूछे और बताए जाने के लिए सुरक्षित रख लिया गया है। संक्षेप में व्यक्ति विशेष के द्वारा बन पड़े एवं चमत्कारी कहे जाने वाले कार्यों के संबंध में इतना ही पूछना-बताया जाना सीमित रहा कि शक्ति स्रोत से जुड़ने के लिए अपनी क्षुद्रता को महापुरुष के चरणों पर समर्पित करने और उनकी महानता को मान्यताओं, भावनाओं, संवेदनाओं, आकांक्षाओं एवं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

क्रियाकलापों में कस लेने का सघन साहस यदि सच्चे अर्थों में किया जा सके, तो अपने को ईश्वर के हाथों सौंपे जाने के बदले में उसके अनुदान और सिद्धि-संपदा को सहज खरीद पाना संभव है। मात्र पूजा-पाठ की राई-रत्ती चिन्ह पूजा अभीष्ट प्रयोजन की पूर्ति नहीं कर सकती। यही समझा-समझाया जा सकता है, साधना से सिद्धि का रहस्य और मार्ग सदा से यही समझा-समझाया जाता रहा है।

वसंत पर्व के महासत्संग ने अनजाने में भक्ति के साथ शक्ति के जुड़े होने का रहस्य समझाया है, जिसकी जिज्ञासुओं को शाब्दिक जानकारी तो थी, पर न कभी श्रद्धा जगती थी और न विश्वास परिपक्व होता था। मात्र जानकारी भर को पर्याप्त समझते थे, क्रिया रूप में कुछ परमार्थ जैसा करने के लिए साहस नहीं जुटा पाते थे। उन्होंने इस बार तथ्य को गंभीरतापूर्वक समझा। साथ ही यह भी अनुभव किया कि शरीरबल, बुद्धिबल, मनोबल, धनबल आदि क्षमताओं और सामर्थ्यों का कितना ही बाहुल्य क्यों न हो! आत्मबल की तुलना में उन सबकी सम्मिलित क्षमता भी नगण्य है। शांतिकुंज परिकर द्वारा अब तक जो घटित हुआ है, उसके मूल में तप ही एकमात्र वास्तविकता है और यदि कोई ऐसा ही ओजस्वी, तेजस्वी, वर्चस्वी एवं तपस्वी बनना चाहता है, तो ऋद्धियों और सिद्धियों को प्राप्त करने के लिए कस्तूरी के मृग की तरह भटकने की क्या आवश्यकता है? मात्र पूजा के सहारे दैवी अनुकंपा के रूप में मिलने वाले अनुदानों की जो अपेक्षा करते हैं, उन्हें मृगतृष्णा में भटकते हुए के समान खीझ, थकान और निराशा के अतिरिक्त और कुछ हाथ नहीं लगता।

बीज अपने बलबूते वृक्ष नहीं बन जाता। उसे खाद-पानी भी चाहिए। व्यक्तित्व की प्रामाणिकता और व्यवहार में उच्चस्तरीय उदारता का समावेश ही वह आधार है, जिसके बलबूते किसी को भी साधारण परिस्थितियों में रहते हुए भी असाधारण स्तर का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

देवमानव बनने का अवसर मिल सकता है। वसंत पर्व के दिन इस संदर्भ में चलता रहा, शंका समाधान निरर्थक नहीं गया। रहस्योद्घाटन की जानकारी प्राप्त करके जिज्ञासा की तुष्टि भर नहीं हुई, वरन सहस्रों ने निश्चयपूर्वक संकल्प लिया कि वे अगले दिनों राजमार्ग पर चलेंगे। शेष जीवन को सच्चे अर्थों में सार्थक बनाएँगे। ईश्वर की आशा-अपेक्षा पूरी करेंगे और बदले में उसे सच्चे साथी-सहचर की भूमिका निभाते हुए निहाल कर देने के लिए बाध्य करेंगे।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तपने और तपाने की आवश्यकता क्यों पड़ी?

प्रस्तोता के जीवन में घटित घटनाओं में से कुछ की जानकारी और प्रयत्नों की प्रतिक्रिया का तारतम्य समझ लेने के उपरांत अनेकानेक आगंतुकों ने अपनी जानकारी के आधार पर कई बातें पूछीं कि अगले दिनों आप एकांतवास की साधना करेंगे और कठोर तपश्चर्या में निरत रहने का संकल्प साधेंगे–ऐसा क्यों? जब धर्मधारणा और सेवा-साधना से ही ईश्वर भक्ति का प्रयोजन बहुत अंशों में पूरा हो जाता है, तो एकांत तपश्चर्या की अति कष्टसाध्य प्रक्रिया अपनाने का क्या प्रयोजन? इससे तो आपका जनसंपर्क, कार्यक्रमों का नियोजन, मार्गदर्शन एवं सेवा-सहयोग की अन्यान्य क्रिया-प्रक्रियाएँ जो इन दिनों चलती हैं, वे भी न बन पड़ेंगी? आपको कष्टसाध्य उपक्रम अपनाकर अनेक असुविधाओं से भरी जीवनचर्या बितानी पड़ेगी और संपर्क में आने वाले जो निरंतर लाभ उठाते रहते हैं, उनसे उन्हें वंचित रहना पड़ेगा?

प्रश्न समझदारी का था। वैसी ही जिज्ञासा अन्य अनेकों के मन में उठ रही थी। वियोगजन्य व्यथा उन्हें भी कष्ट दे रही थी। इसलिए उपस्थितजनों में से प्रत्येक व्यक्ति इसका कारण और समाधान जानने के लिए उत्सुक था।

प्रश्न अधिक गंभीर और उलझन भरा था। इसलिए उस संबंध में चर्चा के अवसर पर मात्र उन्हें ही सम्मिलित रखा गया जिन्हें अध्यात्म विद्या को पृष्ठभूमि के साथ पहले से भी गहराई स्तर तक समझने का अवसर मिलता रहा है।

कहा गया है कि अब तक जो सेवा और साधना चलती रही है, उसका प्रभाव स्थूल जगत तक, पदार्थ जगत तक मार्गदर्शन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और सीमित अनुदान दे सकने जितनी क्षमता अर्जित करा सकता है। पर अगले समय असाधारण रूप से विकट है। उसके लिए इतनी सीमित क्षमता पर्याप्त न होगी। विशिष्ट स्तर की प्रचंडता उत्पन्न करने के लिए उच्चस्तरीय तपश्चर्या से कम में काम नहीं चलता। भगीरथ, दधीचि, ध्रुव, सप्तऋषि स्तर की उस तपश्चर्या की आवश्यकता पड़ती है, जो प्रत्यक्ष शरीर में अधिक बढ़ी-चढ़ी क्षमता उत्पन्न करने तक सीमित न रहे, वरन सूक्ष्म शरीर, कारण शरीर की गहराई में प्रवेश करके उच्चस्तरीय प्राणचेतना का ऐसा भंडार संचय कर सके, जो विषम परिस्थितियों से लोहा ले सके और असाधारण दिव्य उत्पादन में अपनी सामर्थ्य का परिचय दे सके, सूक्ष्म जगत में संव्याप्त विकृतियों को भी बुहार सके।

इन दिनों विकृतियों और विपन्नताओं के घटाटोप छाए हुए हैं। अकाश प्रदूषण से भर गया है। जलवायु में विषाक्तता की मात्रा इतनी बढ़ गई है कि इससे प्रकृति ने विद्रोह खड़ा कर दिया है। विविध प्रकार के प्रदूषण अपने-अपने क्षेत्र में ऐसे संकट खड़े कर रहे हैं, जो विदित व्यावहारिक उपाय-उपचारों से नियंत्रण में नहीं आ रहे हैं। दुर्भिक्ष, युद्धोन्माद, राजनीतिक विग्रह, अपराधों की बाढ़, विचार विकृति का तूफान-प्रवाह मिल-जुलकर ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न कर रहे हैं, जिससे अपनी धरती पर जीवधारियों का निर्वाह कठिन हो जाए; शरीरिक-मानसिक रोगों की अभिवृद्धि नियंत्रण से बाहर हो जाए एवं शालीनता का व्यवहार और प्रचलन खोज पाना दुर्लभ हो जाए। अनाचारजन्य उपद्रवों की रोकथाम का उपाय-उपचार असफल रहने लगे। व्यक्ति और समाज को पग-पग पर विपत्तियों का सामना करना पड़े।

वास्तुत अवांछनीयता को हटाने के लिए असाधारण प्रवाह विनिर्मित करना आवश्यक होगा। देवत्व को पराजित होने से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बचाने के लिए उसी दिव्य शक्ति का अवतरण होना चाहिए जो महाकाली की तरह दैत्य सत्ता से लोहा ले सके, उसे परास्त कर सके। मनुष्य को ऐसा-वरदान मिले इसके लिए प्रचंड तप के अतिरिक्त और कोई मार्ग नहीं। तप शक्ति से ही देवसत्ता का अवतरण संभव होता रह सकता है। ऋषि-तपस्वियों द्वारा अनेक बार का उपचार इन दिनों भी अपनाए जाने की आवश्यकता पड़ गई है। सो उसे पूरा करने के लिए ऐसे दुस्साहसपूर्ण कदम उठाए जा रहे हैं।

नवयुग का अवतरण अपने समय की 'सतयुग की वापसी' है। इसलिए जितना मानवी पुरुषार्थ आवश्यक है, उससे अधिक दैवी सहयोग चाहिए।

सत्प्रयोजनों में आसुरी शक्तियाँ सदा आक्रमण करती और विघ्न उपस्थित करती हैं। विश्वामित्र के यज्ञ को असफल करने में निरत सुबाहु, मारीच, ताड़का आदि के उपद्रवों का सामन करने के लिए राम-लक्ष्मण की सहायता आमंत्रित की गई थी। कालनेमि, अहिरावण और सुरसा हनुमान को असफल करने जा रहे थे। इन सबका सामना दिव्यशक्ति के माध्यम से ही संभव हो सका। अगले दिनों भी ऐसी ही प्रचंड सामर्थ्य उपार्जित की जानी है।

भस्मासुर, वृत्रासुर, महिषासुर, अघासुर आदि ने दैवी योजनों में कितने विघ्न उत्पन्न किए थे-यह सर्वविदित है। इस बार सतयुग की वापसी वाली प्रस्तुत दैवी योजना पर भी ऐसे ही आसुरी संकट आते और अपनी भरपूर सामर्थ्य लगाते रहेंगे। उनका सामना भी समान स्तर की दैवी शक्ति से ही किया जा सकता है।

परिजनों में से अनेकों अवगत हैं कि शांतिकुंज के युग निर्माण योजना को कितने दुरात्माओं ने समय-समय पर अपनी छोटी सामर्थ्य के अनुरूप चिकोटी काटने और डंक मारने में कमी नहीं रहने दी। वे आक्रमण तो आसानी से रद्द और निरस्त

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कर दिए गए, पर भारत के भीतर, पड़ोस में तथा विश्व के हर कोने में आतंकवादी-आक्रामकता छाई हुई है, वह न जाने कब, क्या अडंगा खड़ा कर दे, इसे कोई नहीं जानता। ऐसी दशा में विश्व शांति की सुरक्षा करने के लिए ऐसी संगठित-सामूहिक सतर्कता और शक्ति चाहिए जैसी कि वन्य पशुओं की भरमार वाले एक छोटे-से खेत की सुरक्षा के लिए रखवाले के सारे परिवार को जुटा रह कर करना पड़ता है। भले ही हम आक्रमणकारी न हों, पर आक्रांताओं से आत्मरक्षा करने के लिए कुछ तो करना ही होगा। यह एक बड़ी व्यापक और भयंकर समस्या है, जिससे निपटने के लिए उस स्तर की तैयारी हर हालत में अपेक्षित है, जैसी कि शांतिकुंज के सूत्रधार एकांतिक प्रचंड तपश्चर्या द्वारा समर्थ आत्मशक्ति का संग्रह करके कर रहे हैं।

संकटों की कोई कमी नहीं। उनसे कोई क्षेत्र बचा नहीं है। तोप-बंदूक के धमाके हुए बिना भी ऐसी परिस्थिति बनी रह सकती है जो आतंक, आशंका, विपत्ति और अराजकता जैसी अवांछनीयता बनाए रहे। युद्ध आग्नेय ही नहीं होते। शीत युद्धों की अनेक किस्में भी ऐसी हैं, जो विप्लवी परिस्थितियाँ बनाए रह सकती हैं और अपनी परिधि में उन्मादी अशांति खड़ी किए रह सकती हैं। हर विपत्ति को पुलिस, शासन, कचहरी और जेल जैसे प्रताड़ना माध्यमों से ही काबू में नहीं किया जा सकता। शांति की परिस्थितियाँ बनाए रहने के लिए सबसे बड़ी क्षमता हाथ में रहनी चाहिए। प्रस्तुत तपश्चर्या को ऐसी ही शक्ति-साधना समझा जा सकता है। अवांछनीयताओं, अनाचारों, आपदाओं, मूढ़ मान्यताओं, कुरीतियों, अनीतियों और बिडंबनाओं से जूझने के लिए भी कारगर हथियार चाहिए। सीधे-साधे तरीके से तो नशेबाजी, दहेज वाली बरबादी भरी शादियों तक से छुटकारा नहीं पाया जा सका, तो और भी अनौचित्य की जो विषम विडंबनाएँ घटाटोप की तरह घहरा रही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हैं, उनको लेख-लिखने जैसे दुर्बल साधनों से कैसे निरस्त किया जा सकेगा? विषैले प्रदूषण की तरह अनाचार भरा वातावरण भी कम घातक नहीं। विपन्नताएँ वे नहीं होतीं जो घटाओं के रूप में प्रत्यक्ष दीखती हैं। उनकी गहरी जड़ें अदृश्य वातावरण में, सूक्ष्म जगत में विद्यमान रहती हैं, उन्हें निर्मूल करने के लिए आत्मशक्ति की प्रचंडता भी कम आवश्यक नहीं है।

बुद्ध और गांधी ने मात्र उपदेश ही नहीं दिए थे, ऐसे संघर्ष भी खड़े किए थे, जो व्यापक अनाचार को निरस्त कर सके। दयानंद, विवेकानंद, गुरु गोविंदसिंह जैसों को भी इसी वर्ग में गिन सकते हैं। उनकी सफलता के अन्य कारण भी जुड़े हुए रहे होंगे, पर आत्मशक्ति की बहुलता का विद्यमान आधार भी उस संदर्भ में नकारा नहीं जा सकता। आज की अवांछनीयताओं को भी अपने निराकरण के लिए ऐसी ही आत्मशक्ति अपेक्षित है। समुद्र सोखने वाले अगस्त्य मुनि को और विचारतंत्र को उलटने वाले परशुराम के कुल्हाड़े को भी विस्मृत नहीं किया जा सकता है।

अगले दिनों अनेक खाई-खंदकों को पाटना आवश्यक होगा। साथ ही टीलों को भी झुकने के लिए विवश करना होगा। समतल भूमि तभी बन सकेगी और उसी पर कोई भव्य निर्माण संभव हो सकेगा। खेत उगाने और उद्यान लगाने के लिए भी तो समतल भूमि चाहिए। ऐसे प्रसंगों में प्रायः बुलडोजर प्रयुक्त करने पड़ते हैं। रेगिस्तानों को हरे-भरे बनाने के लिए समतल करके नहरों का, जल स्रोतों का प्रबंध करना पड़ता है। ऐसी ही एक व्यवस्था आत्मशक्ति की उपलब्धि भी है। गंगा लाने का श्रेय भगीरथ को है और मंदाकिनी को अवतरित करने में महातपस्विनी अनुसूया का पुरुषार्थ काम आया था। पाताल गंगा अर्जुन के धनुष बाण से प्रादुर्भूत हुई थी और उसी से भीष्म की प्यास बुझी थी।

तपते सूर्य की किरणों से समुद्र से ही भाप के अंबार उठते हैं। बादलों का जन्म उसी से होता है। वर्षाऋतु ही हरीतिमा और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

खाद्य-संपदा का उत्पादन करती है। यह तप की ही गरिमा है। उज्ज्वल भविष्य के निर्माण हेतु प्रचुर साधन-सामग्री की आवश्यकता पड़ेगी। उसका उत्पादन मात्र यंत्र-उपकरणों से ही नहीं होगा। अपेक्षित तप शक्ति ही है जो हिमालय पिघला सके, जो शाकाहारी प्यास को अपने बलबूते शांत कर सके। ऐसे ही अनेक कारण हैं, जो उस तपश्चर्या के साथ जुड़े हुए हैं, जो प्रस्तोता द्वारा इसी वसंत पर्व से कठोर अनुबंधों के साथ आरंभ की गई है।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हम बिछुड़ने के लिए नहीं जुड़े हैं

ध्वंस के सरंजाम तो माचिस की एक तीली, आग की छोटी सी चिनगारी भी कर सकती है, पर निर्माण एक झोंपड़े का करना हो तो भी ढेरों साधन-सामग्री और श्रमशीलों की कुशल तत्परता चाहिए। बिगड़ बहुत चुका। मनुष्य खोखला, उन्मादी और इस स्तर तक अनाचारी हो गया है कि उसे नरपशु तक नहीं कहा जा सकता। मरघट में प्रेत-पिशाच कोलाहल करते रहते हैं। डरना और डराना ही उनका प्रधान कार्य होता है। मनुष्यों में से एक बड़ी संख्या आज ऐसे ही लोगों की दीख पड़ती है।

भ्रष्ट चिंतन ही दुष्ट आचरणों का निमित्त कारण है। उस आधार पर विनिर्मित वातावरण ही उन अनेकानेक विभीषिकाओं, विपत्तियों, कठिनाइयों और अभावों-अवरोधों का प्रमुख कारण है। इस कठिनाई को साधनों के सहारे दूर नहीं किया जा सकता। कहने भर से नासमझों को उलटी चाल अपनाने से कहाँ विरत किया जा सकता है? इसके लिए ऐसे प्रतिभावान व्यक्तित्व चाहिए जिन्होंने अपने को ऊँचा उठा लिया हो और दूसरों को पतन-पराभव से उबारने लायक बल-कौशल उपलब्ध कर लिया हो। ऐसे ही लोग देवमानव कहलाते हैं और उनके कार्यक्षेत्र में उतरने पर वे साधन विनिर्मित होते चले जाते हैं, जिन्हें अभ्युदय के नाम से जाना जा सके।

इन दिनों पतन और पराभव की विपन्नता को बढ़ाने में निरत हेय जनों की बहुलता-प्रबलता होने का आकलन गलत नहीं है। फिर भी यह नहीं समझा जा सकता है कि मानवी गरिमा को उबारने और सुरक्षित रख सकने वाले देवमानवों का सर्वथा अभाव हो गया है। वे हैं, रहे हैं और रहेंगे अन्यथा यह धरती रसातल को चली

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जाएगी। भावी नवसृजन के लिए ऐसे ही उत्कृष्टता के पक्षधर आदर्शवादियों की आवश्यकता पड़ेगी। उन्हीं के प्रयत्न-पुरुषार्थ से, पुण्य-परमार्थ से समय को बदला जा सकेगा। उन्हीं को तलाशना, संगठित एवं सुशिक्षित किया जाना अपने समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है। इस दिशा में अपने प्रयत्नों ने अपने ढंग का कीर्तिमान स्थापित किया है। युगशिल्पियों का एक बड़ा समुदाय मिशन की पत्रिकाओं के साथ संबंद्ध करके उन्हें इस स्तर का विनिर्मित किया गया है, जो स्वयं उठ सकने की सफलता प्राप्त करने के उपरांत दूसरों को सहारा देने, उबारने, उभारने में समर्थ हैं, इनके लिए गिरों को उठाने और उठों को उछालना एक स्वाभाविक विषय बन गया है। इन्हीं को नवयुग के अग्रदूत, नवसृजन के कर्णधार भी कहा जाता है।

पाँच लाख को पच्चीस लाख बनाने, इसी गुणन प्रक्रिया को निरंतर जारी रखने और कार्तिकी अमावस्या की रात्रि को सघन तमिस्रा से उबारकर जगमगाती दीपावली बनाने की चर्चा होती और योजना बनती रहती है। नवसृजन के आधार, उपकरण-औजार या साधन यही वह समुदाय है, जिसे शांतिकुंज के महागरुड़ ने अंडे-बच्चों की तरह अपने डैनों के नीचे छिपा रखा है। उनको समर्थ एवं परिपुष्ट बनाने की प्रक्रिया इसी तंत्र के अंतर्गत चल रही है। कहना न होगा कि इस प्रयोजन के लिए नवयुग के अध्वर्यु ने अपने जीवन के अस्सी पुष्प सुनियोजित गुलदस्ते के रूप में समर्पित किए हैं और देवमानवों की एक ऐसी समर्थ मंडली विनिर्मित की है, जो नवयुग के अवतरण में ब्रह्म मुहूर्त्त की तरह अपना परिचय दे सके, भोर का उद्घोष करने वाले कुक्कटों की भूमिका निभा सके। शांतिकुंज में इन दिनों यही सृजन कार्य होता है। उसके संपर्क में आए प्रभाव क्षेत्र में ऐसी ही बहुमुखी गतिविधियों का सूत्र संचालन होना है। हर वसंत पर्व इसी की स्मृति ताजा कराता है। इस बार उसका वह नया स्वरूप निखरा है, जिसे नया पौधा कहा जा सकता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है। जहाँ से अब तक बन पड़े प्रयासों की तुलना में कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण निश्चय-निर्धारण होने जा रहे हैं।

विगत वसंत पर्व पर ऐसे ही परिजनों को सूक्ष्म संकेतों से आमंत्रित किया गया अथवा वे अपनी निजी उमंगों से विवश होकर उस आयोजन में सम्मिलित होने के लिए चल पड़े, इसी का संक्षिप्त विवरण इन पंक्तियों में यङ्किञ्चित प्रस्तुत किया जा रहा है।

जो नहीं आ सके उनका आवश्यक निजी परिचय एवं स्तर जानने के लिए एक पत्र भेजा गया है, ताकि उस जानकारी के आधार पर, यदि घनिष्ठता में कोई कमी रह गई हो, तो पूरी हो सके। आदान-प्रदान का सिलसिला इस रूप में चल सके, जिसमें सबके लिए एक प्रकार से श्रेय-साधना ही सन्निहित है।

प्रत्यक्ष पधारने या अपने व्यक्तित्व के स्तर को लिपिबद्ध करके व्यवस्थित भेजने वाले-दोनों ही वर्गों की संख्या में वर्तमान उत्कृष्टता संपन्न लोगों की गणना है जिन पर गर्व भी किया जाता है और जिन्हें नवसृजन के उज्ज्वल भविष्य का आधार स्तंभ भी माना जा सकता है।

इन दोनों ही वर्गों के साथ लेखनी या वाणी के माध्यम से प्रत्यक्ष या परोक्ष संबंध बन रहे हैं और उस आधार पर युग चेतना का प्रकाश अधिकाधिक बलिष्ठ, विस्तृत, सार्थक एवं सफल होता रहा है।

विगत वसंत से कुलपति के एकांत साधना में चले जाने, चेतना को विशेष प्रयोजन के लिए नियोजित कर देने पर एक असमंजस खड़ा होता है कि इतने बड़े और इतने समर्थ समुदाय के साथ जो घनिष्ठता पनपती और प्रगति की प्रक्रिया चलती रही है उसमें विक्षेप, गतिरोध उत्पन्न होगा, व्यवधान पड़ेगा। पारस्परिक जोड़ने वाला स्नेह बंधन टूट जाने पर वह उपक्रम कैसे बनेगा, जिसमें पतंगे की भाँति-दीपक के प्रति स्नेह निभे, प्रकाश की तरह उज्ज्वल भविष्य के आकाश पर छाया और अपनी सक्रियता का परिचय दिया जा सके।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इस संबंध में सभी परिजनों को उपलब्ध माध्यमों से यह सूचित किया गया है कि यह न समझें कि दीप बुझ गया और प्रगति का क्रम रुक गया। दृश्य शरीर रूपी गोबर की मशक चर्मचक्षुओं से दिखे या न दिखे, विशेष प्रयोजनों के लिए नियुक्त किया गया प्रहरी अगली शताब्दी तक पूरी जागरूकता के साथ अपनी जिम्मेदारी वहन करता रहेगा।

पक्षी सुदूर अंतरिक्ष में इतनी दूर उड़ जाते हैं कि खुली आँखों से दीख नहीं पड़ते फिर भी वे अपने घोंसले का, दुधमुँहे बच्चों का पूरा ध्यान रखते हैं। बच्चे भी समय पर उनके द्वारा खुराक मिलने की प्रतीक्षा करते रहते हैं। गाय अपने बछड़े सहित जंगल में चरने चली जाती है। संयोगवश कभी दोनों बिछुड़ भी जाते हैं, फिर भी एक-दूसरे को खोजने और पुकारने में कमी नहीं रहने देते। वर्तमान पत्रिका-पाठकों का, अपने परिवार का परिकर अगले दिनों बढ़ तो सकता है, पर घटेगा नहीं। मिशन की पत्रिकाओं के रूप में प्रकाश चेतना हर महीने अपने पाठक परिजनों के यहाँ अप्रत्यक्ष रूप से जा पहुँचती है। हर दिन के एक लेख को एक प्रवचन समझा जाए, तो यह मान्यता उचित है कि परिजनों और अभिभावकों के बीच दैनिक मिलन-सत्संग संभव है। इसलिए परिजन एक निर्धारित अनुदान पत्रिका के चंदे के रूप में प्रतिमाह प्रदान करते हैं। इस प्रकार प्रत्यक्ष न सही परोक्ष मिलन एवं नियमित आदान-प्रदान का क्रम चलता रहता है। इसी माध्यम से विचारों का ही नहीं, प्राणचेतना का शक्ति प्रत्यावर्तन भी बन पड़ता है।

अब इस संदर्भ में आगे भी यही प्रक्रिया चलेगी। सभी परिजनों के परिचय, जन्मतिथि, फोटोग्राफ संग्रह कर लिए गए हैं। इस आधार पर शांतिकुंज, हरिद्वार तथा युग निर्माण योजना, मथुरा से जन्मदिन के अवसर पर एक प्रेरणापूर्ण संदेश एवं अनुदान पहुँचा करेगा। मिलन की आंशिक पूर्ति इस प्रकार हो जाया करेगी। परिसर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

में संचालक अपना सूक्ष्म शरीर-अदृश्य अस्तित्व बनाए रहेंगे। आने वाले, रहने वाले अनुभव करेंगे कि उससे अदृश्य किंतु समर्थ प्राण प्रत्यावर्तन और मिलन, आदान-प्रदान भी हो रहा है। इस प्रक्रिया का लाभ अनवरत रूप से जारी रहेगा।

युगसंधि पुरश्चरण के अंतर्गत सभी साधकों को अपने-अपने यहाँ कुछ साधना करते रहने के लिए कहा गया है, वह तो चलेगी ही। साथ ही एक अनुबंध यह भी जोड़ा गया है कि यदि संभव हो तो वर्ष में कभी भी पाँच दिन के लिए शांतिकुंज आकर एक सत्र संपन्न कर लें और लगभग वही लाभ प्राप्त कर लें,जो बैटरी को बिजली के साथ जुड़कर नए सिरे से चार्ज होने एवं धीमी पड़ी शक्ति को नए सिरे से फिर अर्जित करने के रूप में मिलता है। बिना शांति अर्जित किए वे सभी कार्य कर पाना असंभव होगा, जिनकी इक्कीसवीं सदी अपेक्षा रखती है। यह प्राण अनुदान निरंतर इस तपस्थली से वितरित होता रहेगा। आवश्यकता मात्र स्वयं को केंद्र से जोड़े रखने की है।

कहने-सुनने, करने-कराने की प्रक्रिया चलती रहने के संबंध में इस वसंत पर्व पर उपस्थित परिजनों से ऊपर से उतरे आदेश के अनुसार यह कहा गया था, ''हममें से कोई किसी से अगले दिनों बिछुड़ न सके।'' जो प्रमाद और उपेक्षा बरतेगा, उसे शांतिकुंज की संचालक शक्ति झकझोरेगी, उसके कान उमेठेगी और बाध्य करती रहेगी। हर व्यक्ति जुड़कर एवं सक्रिय रहकर ही चैन से बैठ सकेगा। कहा भले ही असांसारिक भाषा में गया हो, पर इसे एक सचाई मानकर चलना चाहिए कि ऐसे सशक्त सूत्र मजबूती के साथ परस्पर बाँधे गए हैं, जो बिछुड़ने-बिगड़ने की स्थिति आने नहीं देगें, भले ही हम लोगों में से किसी का दृश्यमान शरीर रहे या न रहे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अध्यात्म अविश्वस्त सिद्ध हुआ तो

साधना शक्ति की जाती है। शक्ति समृद्धि या प्राण प्रवाह के रूप में प्रकट होती है। संपत्ति, सिद्धि और सफलता का चिह्न परस्पर पर्यायवाचक है। किसने किस स्तर की साधना की इसका पता उसकी परिणति को देखकर ही जाना-समझा जाता है।

शरीर बल की साधना करने पर बलिष्ठता, सुंदरता आदि विभूतियों की प्राप्ति होती है। उसी के सहारे अभीष्ट उपलब्धियों के लिए पुरुषार्थ करते बन पड़ता है, आक्रमण किया या उसे निरस्त किया जा सकता है। रुपए पास में हों तो बाजार में मिलने वाली हर वस्तु उससे खरीदी जा सकती है, सुविधा-साधनों का अभीष्ट मात्रा में संचय करते बन पड़ता है। अहंता का प्रदर्शन, चाटुकारों का समर्थन आदि की उपलब्धियाँ, धनबल के सहारे होती हैं। बुद्धिबल के धनी उच्च पदाधिकारी बनते हैं-वकील, डॉक्टर, इंजीनियर, नेतृत्व संयोजन, संचालन कर सकने की गौरव-गरिमा पाई-कमाई जा सकती है। दार्शनिक, वैज्ञानिक, निर्णायक होने के लिए अभीष्ट मात्रा में बुद्धिबल का संचय आवश्यक है।

युद्ध में शस्त्र संचालन, साहस, राजनीति का कौशल काम आता है। कलाकारिता की साधना वाले साहित्यकार, कवि संगीतज्ञ, चित्रकार, मूर्तिकार, अभिनेता आदि बनते हैं। इसी प्रकार संसार में अनेकानेक शक्तियों के अपने-अपने चमत्कार देखे जा सकते हैं। अशक्तों को अभाव, तिरस्कार, दौर्बल्य, पराजय आदि का ही भाजन बनना पड़ता है। वे जैसे-तैसे काम चलाते और परावलंबन पर आश्रित रहते हैं। इसलिए बहुमुखी शक्तियों में से किसी न किसी की साधना के लिए मनुष्य को प्रयत्नशील

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

होना पड़ता है। जो इसकी उपेक्षा करते हैं, उन्हें आलसी-प्रमादी कहा और गया-गुजरा माना एवं उन पर अभागेपन का आरोपण किया जाता है।

शक्तियों में सर्वोपरि स्तर की क्षमता आत्मबल है। उसे अलौकिक-असाधारण माना जाता है। इस स्तर के प्रयासों को परम पुरुषार्थ गिना जाता है। आत्मबल के साधकों की ललक उच्चस्तरीय होती है। वे आत्मबल संपादित करने के लिए उन्मुख-तत्पर होते हैं। इसकी कीमत तपश्चर्या के रूप में चुकानी पड़ती है और वे इसे प्रसन्नतापूर्वक चुकाते हैं। उपार्जन के लिए पूँजी तो जुटानी पड़ती है। शक्तिवानों में से प्रत्येक को यही करना पड़ा है। अन्यथा शेखचिल्ली जैसी बेसिर-पैर की कल्पना-जल्पना करते रहने के अतिरिक्त और कुछ नहीं हो पाता। छल-छद्म की बाजीगरी द्वारा कुछ को कुछ बताकर नासमझों को बहका देना दूसरी बात है।

ऋषियों को आत्मबल संपादन की साधना के लिए अभीष्ट तपश्चर्या के लिए साहस जुटाते रहना पड़ा है। योगी-तपस्वी अपने कार्यक्रम इसी आधार पर विनिर्मित करते हैं। बदले में उन्हें जो कुछ मिलता है, वह उस उत्कृष्टता की दिशाधारा का अवलंबन करने के कारण हस्तगत भी ऐसा ही होता है, जिसे असाधारण, अद्भुत, अलौकिक कहा जा सके। इस बल के धनी होते ही इस स्तर के हैं कि वे अपने को महामानव, धरती के देवता कह सकें। उन्हीं को ऋद्धि-सिद्धियों के अधिष्ठाता स्तर का अभ्युदय कर सकने की स्थिति में पाया जाता है। अपने को अभ्युदय के चरम शिखर तक वे पहुँचाते हैं। अलौकिक स्तर की विभूतियों से संपन्न होते हैं। अपनी नाव पर बिठाकर अनेकों को भयंकर प्रवाह वाली नदी से उबारते-उतारते उस पार करते हैं। वातावरण को, प्रवाह को बदल दें-ये भी ऐसों से ही बन पड़ता है। दैवी अनुकंपा एवं सहायता भी ऐसे ही लोग विपुल मात्रा में हस्तगत करते हैं। उनमें दूसरों को प्रभावित करने वाली शाप-वरदान देने की क्षमता होती

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है। स्वर्ग और मुक्ति के नाम से दिव्य आनंदों की चर्चा होती रहती है, उन्हें उपलब्ध कर सकना भी आत्मबल के अधिष्ठाताओं से बन पड़ता है। इन सनातन मान्यताओं को कोई भी यथार्थता की कड़ी कसौटी पर कस सकता है। आग पर तपाए, कसौटी पर कसे सोने की तरह खरा पा सकता है।

इस संदर्भ में भी इन दिनों एक भारी असमंजस भरी विपन्नता देखी जाती है। आत्मसाधना का अवलंबन करने का दावा असंख्यों को करते देखा जाता है, पर उनमें वे विभूतियाँ नहीं देखी जातीं जो इस दिशा में सफल पुरुषार्थियों में देखी जानी चाहिए। सफलता के लक्षण न दीख पड़ने पर विडंबना का ही आरोप लगेगा। वह धनाध्यक्ष कैसा जो रोटी-कपड़े जैसी सामान्य आवश्यकता न जुटा सके? वह पहलवान कैसा? जो सौ कदम की दौड़ न लगा सके। वह विद्वान कैसा जो चिट्ठी-पत्री तक पढ़ने-लिखने में असमर्थता प्रकट करे? वह कलाकार कैसा जो एकाग्र रहने तक की क्षमता प्रदर्शित न कर सके? इसी प्रकार आत्मसाधना में अपने को संलग्न करने वालों के लिए क्या कहा जाए जो न तो अपना निजी व्यक्तित्व परिष्कृत कर सके और न सामयिक विपत्तियों के समाधान में कोई योगदान दे सके? जिनमें दूसरों को प्रभावित-परिवर्तित करने की सामर्थ्य, कुछ कहने लायक सफलता प्राप्त कर सकने की क्षमता न हो, जिनमें समय की माँग, प्रवाह के परिवर्तन और पतन को अभ्युदय में परिवर्तित कर सकने की शक्ति न हो, वे कैसे आत्मसाधक? इन अभावों को देखते हुए संदेह होता है कि या तो आत्मबल की, आत्मसाधना की जो महत्ता बताई, महिमा गाई जाती रही है, वह अत्युक्तिपूर्ण या आलंकारिक है अथवा जो आत्मसाधना करने के दावेदार हैं, वे भ्रमग्रस्त हैं, छलप्रपंच का आश्रय लेते हैं अथवा वास्तविकता को न समझ पाने के कारण अंड-बंड करते, अस्त-व्यस्त रहते और दिग्भ्रांत होने पर भी बड़े लक्ष्य प्राप्त करने की आशा करते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

किसी समय आत्मशक्ति से संपन्न अनेकों व्यक्तित्व थे। उन्होंने अपनी अर्जित क्षमता के सहारे ऐसे कार्य कर दिखाए जिन्हें साधारण जनों की दृष्टि में अलौकिक कहा जा सके। विश्वामित्र, अगस्त्य, परशुराम, नारद, दधीचि जैसे तपस्वियों के नाम याद आते ही वे घटनाएँ भी आँखों के सामने गुजरने लगती हैं, जिनमें उन्होंने अपने समय में असाधारण पुरुषार्थ प्रकट करते हुए सिद्धपुरुषों जैसे स्तर के प्रमाण-परिचय दिए थे।

आज साधु-संतों की जनसंख्या प्रायः साठ लाख के लगभग है। जंत्र-मंत्र की कला में अपने को प्रवीण-पारंगत मानने वालों की संख्या भी हजारों में हैं। देवी-देवताओं की पूजा-पत्री में निरंतर निरत रहने वाले पुजारी वर्ग के लोगों की गणना भी लाखों में की जा सकती है, क्योंकि प्रस्तुत देवताओं में से हर मंदिर पीछे कम से कम एक पुजारी की नियुक्ति तो आंकी ही जा सकती है। व्यक्तिगत पूजा पाठ में घंटों समय लगाने वाले भक्तजनों को गिना जाए, तो वे भी करोड़ों न सही लाखों तो होंगे ही। पंडित-पुरोहित अपने को देवताओं का प्रतिनिधि बनाकर प्रचुर परिमाण में दान-दक्षिणा बटोरते रहे हैं। इस समूचे परिकर को एकत्रित करके गिना जाए तो उनकी संख्या मात्र अपने देश में ही लाखों-करोड़ों हो सकती है। प्रस्तुत तथ्य को नकारा भी नहीं जा सकता और साथ ही यह विश्वास भी नहीं किया जा सकता कि उनकी स्थिति वैसी ही है जैसी कि कही, सुनी और बताई जाती है। सामयिक समस्याएँ इतनी हैं कि समर्थ अध्यात्म के सहारे उन्हें इतने सारे लोग एकाकी न सही तो मिल-जुलकर तो हल कर ही सकते हैं। किंतु देखा इसके विपरीत जाता है। देखा जा रहा है कि तथाकथित अध्यात्मवादियों की संख्या बरसाती उद्भिजों की तरह बढ़ती जा रही है। उनके द्वारा नियोजित कर्मकाण्डों का भी अत्यंत खरचीला और आडंबर भरा प्रदर्शन इतना बढ़ रहा है, जिसे आसमान छूने स्तर का कहा जा सके। इस विषय के पक्षधर देवताओं, आश्रमों, मठों की, साहित्य की भी तूफानी गति से अभिवृद्धि हो रही है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यह उलझन किसी प्रकार सुलझाने में नहीं आती कि आत्मशक्ति की प्रखरता जिस प्रकार गाई-बताई जाती है, वह किस प्रकार विश्वस्त हो सकती है; जबकि हर क्षेत्र में संकटों, विग्रहों, अभावों और अनाचारों के अंबार लगे हुए हैं और उन्हें निरस्त करने में निरंतर बढ़ते हुए अध्यात्म विस्तार का दबाव कुछ ऐसा नहीं कर पा रहा है जिससे परिस्थितियाँ सुधरें, अवांछनीयताओं की बाढ़ रुके।

हो तो इतना भी नहीं रहा है कि उपर्युक्त लाखों-करोड़ों वेशधारियों की संख्या लोकहित की दृष्टि से कुछ न कर सके तो कम से कम अपने आप को तो आदर्श व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत करे। जिनके चिंतन, चरित्र और व्यवहार-प्रयास को देखते हुए यह मान्यता बने कि अपने देश में उच्चस्तरीय व्यक्तित्व से संपन्न ऐसे लाखों-करोड़ों मौजूद हैं, जो अपनी उपस्थिति से जनसाधारण की जनजागरण में बढ़ती जा रही अश्रद्धा से तो निपट सकें। कम से कम इतना तो सिद्ध कर सकें कि अध्यात्म के दावेदार निजी जीवन में तो इतने प्रखर और प्रामाणिक होते हैं कि उनकी साक्षी में आत्म विद्या की गरिमा को तो विश्वस्त समझा जा सके।

लगता है कहीं बहुत बड़ी गड़बड़ हो गई है। कुछ को कुछ समझ लिया गया है और यह आवश्यकता अनुभव नहीं की गई है कि उपासक को प्राणवान भी होना चाहिए, पूजा कृत्यों के साथ अध्यात्मवादी की जीवनचर्या भी उच्चस्तरीय होनी चाहिए, उसके व्यक्तित्व में प्रामाणिकता एवं उत्कृष्टता का भी गहरा पुट होना चाहिए।

मात्र बहिरंग कलेवर का गठन कर लेना पर्याप्त नहीं होता। मिट्टी के खिलौने जैसी गाय से बच्चे का मन तो बहल सकता है, पर उससे दूध देने और बछड़े जनते रहने की आशा नहीं की जा सकती है। काठ से बड़े हाथी की आकृति तो बन सकती है, पर उस पर सवारी करके लंबी मंजिल पूरी करने की आशा नहीं की जा सकती। खोटे सिक्के देखने में असली जैसे लगते तो हैं, पर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दुकानदार के हाथ तक पहुँचते-पहुँचते उपहासास्पद बनने लगते हैं। नकली तो आखिर नकली ही रहेगा। उससे मन बहलाया जा सकता है, पर वह प्रयोजन पूरा नहीं कराया जा सकता, जो असली के माध्यम से संपन्न हो सकता है।

नकली अध्यात्म के खिलौने से एक बड़ी भारी हानि यह हो सकती है कि आध्यात्मिकता और आस्तिकता के तत्त्वज्ञान को ही लोग अविश्वस्त और अप्रामाणिक मानने लगें। उसे छद्म समझने और इस प्रपंच से दूर रहने की बात सोचने लगें। यदि ऐसा हुआ तो आप्तवचनों को, संसार के उच्चस्तरीय प्रतिपादनों को भारी क्षति पहुँचेगी और उस नास्तिकता का बोलबाला होने लगेगा जिसकी आड़ में अनैतिकता, असामाजिकता, अराजकता, अवांछनीयता का बोलबाला होने लगे, उत्कृष्टता-आदर्शवादिता को अनावश्यक समझा जाने लगे। अंकुश भी महावत का रहने पर उन्मत्त हाथी किसी भी दिशा में चल सकता है और कुछ भी अनर्थ कर सकता है। आत्मिक तत्त्व के साथ जुड़े हुए उत्कृष्टता के, मर्यादा के, पुण्य-परमार्थों के विचार यदि बाँध तोड़कर उच्छृंखलता की दिशा में चल पड़ें, तो मनुष्य-मनुष्य नहीं रह जाएगा, उसे प्रेत-पिशाचों जैसे उद्दंड कोलाहल खड़े करते चारों ओर देखा जाएगा।

इसे दुर्भाग्य ही कहना चाहिए कि इन दिनों कडुई गिलोय का कडुए नीम पर चढ़ने का सम्मिलित कुयोग बन रहा है। एक तो भौतिक विज्ञान ने नियंता की मान्यता से इनकार करके विशुद्ध भौतिकवादी मान्यताओं को जन्म दिया है। आत्मा-परमात्मा को अमान्य ठहराकर प्रकारांतर से उस नीतिनिष्ठा की उपयोगिता से इनकार कर दिया है, जो अब किसी रूप में मानवी गरिमा और मर्यादा से किसी सीमा तक मनुष्य को सराबोर बनाए हुए थी। पथभ्रष्ट हुए विज्ञान ने अनेक आविष्कारों की तरह नास्तिकता का भी बीज बो दिया जो नीतिनिष्ठा को भी साथ ही अमान्य ठहराता है। इस प्रतिपादन से प्रभावित होने से भविष्य में लोग

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

क्या रीति-नीति अपनाने लगेंगे, इस विचारणा से भयंकर भविष्य की ही आशंका उभरती है।

इसी के साथ-साथ उस जीवन दर्शन पर भी संकट उभरता दीखता है, जो अध्यात्म आधारों के सहारे बड़े महत्त्वपूर्ण प्रयोजन सिद्ध होते रहने की आशा दिलाता रहा है। उच्चस्तरीय सिद्धियों और साधना द्वारा व्यक्तित्व के देवोपम बनने की मान्यता पर विश्वास कराता रहा है।

वर्तमान परिस्थितियाँ सन्निपात जैसी बन गईं हैं। मनुष्य में विकसित पशुता द्वारा पतन के गर्त में गिरने का प्रोत्साहन, विज्ञान द्वारा नास्तिकता का पोषण तथा आत्मिक क्षेत्र में बढ़ रही विडंबनाओं की भरमार जनमानस को इतना भ्रमित कर रही है कि उनका प्रतिफल विनाशकारी रूप धारण करके ही सामने आ सकता है। वही हो भी रहा है।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रगति के त्रिविध अवलंबन

यह सुनिश्चित है कि मन:स्थिति ही परिस्थितियों की जन्मदात्री है। मान्यताएँ और भावनाएँ ही व्यक्तित्व का गठन करती हैं और मनुष्य को उसी स्तर का बना देती हैं। विचार बीज हैं और कार्य उसके द्वारा उत्पादित पौधे हैं। व्यक्ति का नीतिवान, समाजनिष्ठ, कर्त्तव्यपरायण, धर्मात्मा एवं परमार्थी बन सकना तभी संभव है, जब उसके अंत:करण में उत्कृष्ट आदर्शवादिता ने गहरी जड़ें जमा ली हों। भ्रष्ट चिंतन तो दुष्ट आचरणों को ही जन्म देगा और उस विषवृक्ष के समर्थ होने पर परिस्थितियाँ अनर्थकारी स्तर की ही बनकर रहेंगी।

इन दिनों विज्ञान और बुद्धिवाद की अभिवृद्धि ने सुविधा-साधनों के अंबार खड़े कर दिए हैं। पूर्वजों की तुलना में भौतिक दृष्टि से हम कहीं सुविधा संपन्न हैं। संपदा की उपलब्धि को यदि प्रगति कहा जाए तो मानना पड़ेगा कि पूर्वजों की तुलना में हम कहीं आगे हैं, पर वस्तुत: ऐसा है नहीं। जनसाधारण का शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य बुरी तरह गड़बड़ा रहा है। दुर्बलता और रुग्णता दिन-दिन तूफानी गति से बढ़ती जा रही है। अस्पताल, डॉक्टर और औषधि आविष्कारों ने हमें स्वस्थ और समर्थ बनाने में कोई सहायता नहीं की है, कारण कि आहार-विहार में बढ़ा हुआ असंयम स्वस्थ जीवन के मूलभूत आधार को ही नष्ट किए दे रहा है। पैसा बढ़ा है, पर उसके साथ ही दुर्व्यवसनों और प्रदर्शनों के निमित्त होने वाले अपव्यय की भी इतनी वृद्धि हुई है कि हर कोई अपने को अभावग्रस्त अनुभव करता है। कामचोरी-हरामखोरी को प्रश्रय मिलते रहने पर किसी भी क्षेत्र में वास्तविक एवं अभीष्ट प्रगति हो नहीं सकती।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गुण, कर्म, स्वभाव में घुसे हुए दुर्गुण आएदिन ऐसे संकट खड़े करते रहेंगे, जिसका समाधान करने में भौतिक उपचार एवं अनुदान कुछ काम न आ सकेंगे। बढ़ते हुए अविश्वास, असहयोग, अनाचार के पीछे चरित्र भ्रष्टता ही मूल कारण है। क्रोध से क्रोध और अनाचार से अनाचार बढ़ता है। यह विपन्नता आज संसार के समूचे जलाशय पर जलकुंभी काई की तरह छाई दीखती है और जलाशय से मिलने वाले लाभों का अंत हो रहा है। पथभ्रष्ट को किस प्रकार कंटीली झाड़ियों से संत्रस्त होना पड़ता है, इसे हममें से प्रत्येक सर्वत्र घटित होते देख सकता है।

प्रदूषण, विकिरण, पर्यावरण, अपराध, छल आदि के जो संकट व्यापक रूप से गहरा रहे हैं, उनकी परिणति की कल्पना और भी चिंताजनक है। बढ़ती हुई जनसंख्या के लिए आवश्यक साधन जुटा सकना कठिन प्रतीत होता है। अवांछनीयता और वातावरण में संव्याप्त विपन्नता कैसे पनपी? इसका उत्तर वस्तुओं की कमी होने की बात कहने से नहीं मिल सकता। मानना यही पड़ेगा कि विचार क्षेत्र में बढ़ती हुई उद्दंडता का, आपाधापी का प्रदूषण ही उन समस्याओं के लिए उत्तरदायी है, जो अप्रसन्नता और अव्यवस्था का निमित्त कारण बनी हुई है।

संक्षेप में यही निष्कर्ष निकलता है कि नीतिनिष्ठा और समाज-निष्ठा के आदर्शों की अवहेलना करने पर ही समूचा मनुष्य समुदाय उस विपत्ति में फँसा है, जिससे निकलना और उबरना असंभव नहीं तो कम से कम सहज तो प्रतीत नहीं होता है। आशा की किरण एक ही है–लोकमानस का परिष्कार, आदर्शों का परिपालन, विचारों का परिशोधन, चरित्र और प्रयासों में आदर्शों का संपुट लगाया जाना। उसके बिना प्रस्तुत असंख्य समस्याओं में से एक का भी सीधा समाधान मिलना नहीं है।

इसी महान प्रयोजन की पूर्ति तत्त्वज्ञान से होती है। भावनाओं और मान्यताओं का उदात्तीकरण इसी आधार पर संभव है। प्रस्तुत

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विश्व समस्याओं का निराकरण भी यही है। व्यक्तियों को भ्रांतियों एवं अवांछनीयताओं से मुक्त करके ही उन्हें मौज से रहने और रहने देने की स्थिति में लाया जा सकता है। हँसती-हँसाती जिंदगी, मिल-बाँटकर खाने की प्रवृत्ति, झपटने-हड़पने की अपेक्षा सेवा-सहायता में रुचि लेने की रीति-नीति ही मनुष्य को सच्चे अर्थों में मनुष्य बना सकती है और उन सारी विपत्तियों से एक बारगी छुटकारा दिला सकती है, जिनके कारण कि महाविनाश की आशंका पनप रही है।

उपर्युक्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिए प्रचलित भाषा में जिसे विचार क्रांति कहा जाता है और पुरातन सोच के अनुसार जनमानस का परिष्कार कहा जा सकता है-वही समर्थ व सहायक हो सकता है। इस मर्यादा को अंतःकरण की गहराई तक पहुँचाने में मात्र अध्यात्म तत्त्वदर्शन ही समर्थ हो सकता है। इस प्रकार समर्थ एवं प्रखर अध्यात्म से ही यह आशा की जा सकती है कि व्यक्ति और समाज के सामने प्रस्तुत असंख्य विपन्नताओं-विभीषिकाओं का समाधान वह कर सकेगा।

इसके अतिरिक्त वह शक्ति भी उस जीवंत अध्यात्म में ही है जो सर्वतोमुखी समर्थता और प्रगतिशीलता से जनसाधारण को लाभान्वित कर सके। अध्यात्म की चर्चा सिद्धियों के संबध में भी होती रहती है और कहा जाता रहा है कि सतयुग की वापसी जैसा सुखद वातावरण यदि उससे विनिर्मित करना हो, तो मनुष्य को समझना चाहिए और समझना पड़ेगा कि जिस प्रकार शरीरबल, धनबल, बुद्धिबल, कौशलबल आदि के संपादन का प्रयत्न किया जा रहा है, उससे बढ़कर आत्मबल का उपार्जन-अभिवर्द्धन होना चाहिए। उज्ज्वल भविष्य की संरचना इसी आधार पर हो सकेगी। इक्कीसवीं सदी में जिन सुखद भवितव्यताओं की अपेक्षा की जा रही हैं, उसके लिए दैवी शक्ति के रूप में अध्यात्म का सर्वतोमुखी संवर्द्धन होना चाहिए। आज की सबसे बड़ी आवश्यकता एवं दूरदर्शिता यही है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कठिनाई यह है कि परिस्थितियों को देखते हुए अध्यात्म के संबंध में उसकी प्रामाणिकता संदिग्ध हो चली है। भौतिक विज्ञान के प्रच्छन्न अध्यात्म ने मिल-जुलकर ऐसा वातावरण बनाया है, जिससे श्रद्धा डगमगाती है और आत्म साधना का कोई जल्दबाजी भरा परिणाम न आने से उस ओर सर्वसाधारण की प्रवृत्ति को मोड़ना अतिशय कठिन हो रहा है।

वास्तविकता और अवास्तविकता के बीच बने रहस्य उद्घाटित करने के लिए परोक्ष-दैवी नियोजन ने सर्वसाधारण के सामने एक सुयोग प्रस्तुत किया है। शांतिकुंज की भूतकालीन गतिविधियों में यदि कुछ आनंददायक और उत्साहवर्द्धक है, तो उसका श्रेय आत्म-शक्ति को ही जाता है। भले ही प्रयोक्ता कोई भी व्यक्ति क्यों न रहा हो! पूर्व में सभी का उल्लेख हो चुका है। इन दिनों जो तैयारी चल रही है, उसे भी इसी स्तर का समझा जा सकता है कि कोई सर्वशक्तिमान नियोजन कार्यान्वित होने जा रहा है। अगले दिनों जो होने जा रहा है, जो नियोजन बन रहा है, उसे भी इस भाषा में कहा जा सकता है मानो कोई सत्ता असंभव करने जा रही हो।

युग परिवर्तन के भूतकालीन, आज के और भावी प्रयत्नों को जोड़कर देखा जाए, तो इसे आत्मशक्ति से समाज संरचना के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। इतने पर भी पूर्व असमंजस जहाँ का तहाँ अड़ा रह जाता है कि बात यदि ऐसी है, तो इतने बड़े समुदाय द्वारा अपनाई जा रही प्रक्रिया अपने द्वारा किसी महत्त्वपूर्ण संरचना का परिचय क्यों नहीं दे रही है!

यह साधारण असमंजस नहीं है। इसके निराकरण के ऐसे समाधानकारक प्रमाण चाहिए, जो अविश्वास को विश्वास में बदल सकें। साथ ही यह रहस्योघाटन भी कर सकें कि सशक्त और सही अध्यात्म का स्वरूप क्या हो सकता है, जो अपनी प्रखरता का परिचय दे सके, साथ ही इस तथ्य से भी सर्वसाधारण को अवगत कराया जाना चाहिए कि वे अभाव क्या हैं जिनकी उपेक्षा के कारण

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पूजा-पत्री और कथावार्ता मात्र विडंबना बनकर रह गई और दिग्भ्रांत लोगों को किस कारण से असफलताएँ हस्तगत हुईं, जो केवल उनको असमर्थ और उपाहासास्पद बनाती रहीं, लोकश्रद्धा डगमगाती रहीं, विचारशीलों को उस उत्साह से वंचित भी करती रहीं कि वे सही दिशाधारा अपनाकर अपने को और अपने समूचे समूह को कृतकृत्य बनाते।

इन समस्त प्रयोजनों के लिए शांतिकुंज के संचालकों को निजी जीवन में अपनाए गए उन तथ्यों पर प्रकाश डालना पड़ रहा है, जो भूतकाल को साक्षी रूप में प्रस्तुत करते हुए, वर्तमान क्रिया-कलापों के औचित्य पर विश्वास करने की मनःस्थिति पैदा कर सकता है। साथ ही भावी योजना के लिए जितनी जनशक्ति और साधन शक्ति की अपेक्षा होगी, उसे सफल संपन्न कर सकता है। इससे शक्ति संचय हेतु किए गए पुरुषार्थ और तदनुरूप दैवी अनुकंपा के सहयोग की संभावना का रहस्य आसानी से समझा जा सकता है।

प्रस्तोता ने पूजा-अर्चा की उपेक्षा की हो सो बात नहीं। इस दिशा में सघन विश्वासी जो कर सकता है, वह भी उन्होंने दुस्साहस स्तर पर पूरा किया है। पर साधना को ही उन प्रयोगों में अपनाया है, जिन्हें अध्यात्म का प्राण कहा जा सकता है।

कपड़े को धोने के बाद ही उस पर रंग चढ़ता है। लोहा तो भट्ठी में गलने के उपरांत ही अभीष्ट स्तर के उपकरण ढलने योग्य बनता है, पात्रता के अनुरूप ही अनुदान मिलते हैं। इन उदाहरणों की चर्चा इस संदर्भ में की जा रही है कि अध्यात्मवादी को निजी व्यक्तित्व के परिष्कार को प्राथमिकता देनी चाहिए और उसी शोभा-सज्जा के लिए जप-तप को प्रश्रय देना चाहिए। यही है प्रस्तोता का अनुभव और प्रतिदान जो साक्षी रूप में इसलिए प्रस्तुत किया जा रहा है कि जिसने इन दिशा में चलने का साहस जुटा लिया है, उसे यह भी जानना चाहिए कि समग्र साधना संपादन के लिए किन तथ्यों को अविस्मरणीय मानते हुए अपनाने की तैयारी करनी चाहिए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इन पंक्तियों के लेखक ने अध्यात्म विज्ञान के रहस्यों को प्रेरणा, अनुसंधान, अनुभव के आधार पर यह जाना और माना है कि आत्मविज्ञान की त्रिवेणी संगम की तरह तीन दिशा धाराएँ हैं– (१) उपासना (२) साधना (३) आराधना। तीनों के समन्वय से ही एक पूरी बात बनती है।

मनुष्य अन्न, पानी और हवा के आधार पर जीता है। तीन लोक प्रसिद्ध हैं। तीन देवता प्रमुख कहे गए हैं। भूत, वर्तमान और भविष्य–समय के तीन काल माने गए हैं। जीव, ईश्वर और प्रकृति के समन्वय से संसार चल रहा है। इसी प्रकार माना जाना चाहिए कि (१) उपासना (२) साधना (३) आराधना का समन्वय ही आत्मशक्ति के उपार्जन को सुनिश्चित करता है। इन्हें समान रूप से अपनाया जा सके, तो कोई कारण नहीं कि जिन चमत्कारी ऋद्धि–सिद्धियों को अध्यात्म की परिणति माना जाता है, वे अक्षरशः सही सिद्ध न हों। तीनों की संक्षिप्त विवेचना यहाँ प्रस्तुत है।

(१) **उपासना**–निकट बैठना। ईश्वर को सर्वतोभावेन आत्मसमर्पण करना। उसके निर्देश और अनुशासन को इस सघनता के साथ अपनाना मानो ईंधन और आग, नाला और नदी एक हो गए हों। एक ने अपनी इच्छा, अस्तित्व और सत्ता समाप्त कर दी हो और दूसरे में अपने को लय करने में कोई कमी न रखी हो। पूजा–पाठ इसी मनःस्थिति को विनिर्मित करने का एक माध्यम है। अपनाया उसे भी जाए किंतु सद्भावनाओं–सत्प्रवृत्तियों का समन्वय ही ईश्वर है। विराट ब्रह्म और विशाल विश्व अर्थात ईश्वर–उसका कोई नाम–रूप नहीं। व्यापक सत्ता निराकार ही हो सकती है। फिर भी कोई उसकी इच्छित कल्पना एवं स्थापना अपने मन से कर सकता है। प्रस्तोता उसका नाम गायत्री मंत्र के शब्दों में और सविता अर्थात उदीयमान स्वर्णिम सूर्य के रूप में अपनाता रहा है। दूसरे अपनी इच्छानुसार अन्य नाम–रूपों को भी मान्यता में सन्निहित कर सकते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सांप्रदायिक प्रचलनों, रीति-रिवाजों को भी ईश्वर की वाणी कहते रहे हैं। ये समयानुसार परिवर्तनशील हैं। इसलिए इन्हें भी सामयिक उपयोगिता की कसौटी पर कसते हुए मान्यताओं के रूप में स्थिर किया जा सकता है।

(२) **साधना**—ईश्वर प्राप्ति की पात्रता अर्जित करने का दूसरा अवलंबन है—साधना अर्थात जीवन-साधना। सधा हुआ संयमी जीवन, मानवी गरिमा के अनुरूप क्रियाओं, मर्यादाओं का अवलंबन और वर्जनाओं का निरस्तीकरण। सभ्यता एवं सुसंस्कारिता की अवधारणा। उत्कृष्ट आदर्शवादिता के अनुशासन का अवधारण। संचित कुसंस्कारों का गुण, कर्म और स्वभाव से निष्कासन। देवमानव स्तर के गुण, कर्म, स्वभाव का अवलंबन, अभिवर्द्धन। सरकस के जानवरों जैसा आत्मशिक्षण। सुरम्य उद्यान स्तर का सुनियोजित जीवनयापन। संस्कारों को यह पवित्र बनाने वाली साधना है। तपश्चर्या की संयम साधना से तुलना इसी कारण की जाती है।

(३) **आराधना**—अर्थात उदारता। देने में प्रसन्नता। लेने में संकोच। सादा जीवन उच्च विचार। न्यूनतम में निर्वाह। बचत का सर्वतोमुखी सुसंकारिता के लिए नियोजन। गिरों को उठाने और उठों को उछालने में अभिरुचि। इसी को पुण्य-परमार्थ कहा जाता है। दान की परंपरा यही है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' और 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' के दोनों सिद्धांत इसी आधार पर विनिर्मित हैं। धर्मधारणा और सेवा-साधना का निर्वाह भी आराधना के अंतर्गत आता है। देवत्व की प्रवृत्ति एवं रीति-नीति भी यही है।

अध्यात्म तत्त्वज्ञान उपासना, साधना, आराधना, के समन्वय पर अवलंबित है। इन तीनों को जीवनचर्या के हर क्रिया-प्रक्रिया के साथ जोड़ना पड़ता है और ध्यान रखना पड़ता है कि इसके विपरीत तो कुछ नहीं बन पड़ रहा है।

आराधना का एक पक्ष है-शुभ का संवर्द्धन और दूसरा है-अशुभ का उन्मूलन। इन्हें सहयोग और संघर्ष के नाम से भी जाना जाता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बोने और काटने का सिद्धांत आराधना विज्ञान के अंतर्गत ही आता है। न्यायनिष्ठा एवं औचित्य का नीर-क्षीर विवेक भी आराधना का ही एक भाग है।

पात्रता अर्जित करने के लिए उपासना, साधना और आराधना के त्रिविध प्रयत्न करते रहने की आवश्यकता होती है। इसी आधार पर आत्मिक स्वस्थता बन पड़ती है। पूजन, अर्चन, उपहार आदि क्रिया-कृत्यों को भी आत्मसाधना का अंग माना जाता है, पर वह ऐसा ही है जैसा कि स्वस्थ शरीर पर धुले वस्त्र और शृंगार साधनों की सुसज्जा। आवश्यकता उसकी भी है, पर उसे महत्त्व उतना ही देना चाहिए जितना कि अपेक्षित है। पूजा कृत्यों को कलेवर और आत्मसाधना को यदि प्राण समझा जाए तो भी ठीक है। दोनों के बीच अविच्छिन्न संबंध है। पूर्णता तक पहुँचने के लिए जीवन शोधन ही वह तत्त्व है, जिसे भक्ति भावना की जड़ों के सहारे सींचा और आगे बढ़ाया जाता है।

इन पंक्तियों के लेखक के द्वारा भूतकाल में जो सफलताएँ पाई गईं हैं, वर्तमान में जो योजनाएँ बनाई गई हैं, उनकी सफलताओं का रहस्य इस एक ही केंद्र पर केंद्रित समझा जा सकता है कि उसने आत्मपरिष्कार के उपर्युक्त तीनों आधारों को समग्र निष्ठा के साथ अपनाया है। इस संदर्भ में अन्य सफलता प्राप्ति के इच्छुकों को भी इसी समग्रता का अनुकरण करना चाहिए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समय-संपदा का श्रेष्ठतम सदुपयोग

लेने और देने दोनों का ही अपने-अपने स्थान पर अपना-अपना महत्त्व है। इस सुविस्तृत प्रसंग पर गंभीरतापूर्वक विचार करते हुए 'दान' के संबंध में भी वैसा ही विचार करना पड़ता है। दान देते समय प्रसन्नता एवं गर्व-गौरव की अनुभूति होती है। लेने वाले से कृतज्ञ, सहयोगी, प्रशंसक बनने की अपेक्षा रहती है। देखने-सुनने वाले उदार व्यक्तित्व की झाँकी करते और समय-समय पर प्रशंसा भरी चर्चा करते हैं। विश्वस्त मानते और परोक्ष रूप से सहायक बनते हैं। इसके अतिरिक्त पापों के प्रतिफल से छुटकारा, पुण्यों की अभिवृद्धि, स्वर्ग और मुक्ति के प्रति अमुक देवता की अनुकंपा जैसी कितनी ही उपलब्धियों की आशा की जाती है, जो खरची हुई राशि की तुलना में कहीं अधिक लाभ मिलने का आश्वासन दिखाती हैं। इतने पर भी इस संदर्भ में फूँक-फूँककर कदम उठाने की आवश्यकता समझी जाती है।

कुपात्रों को दान देने से उनके दुर्व्यसन भड़कते हैं। मुफ्त में पाने वाले अपव्यय के अतिरिक्त अनेक बार अपने आलस्य-प्रमाद को बढ़ाते, मुफ्तखोरी के कुचक्र में आत्महीनता से लदते और गिड़-गिड़ाते हुए सिर नीचा करते हैं। दान का उपयोग अनर्थ के लिए भी होता है। देवता के नाम पर पशु-पक्षियों का वध-बलिदान किया जाता है। कुकर्मी उसे पाकर दुष्टता के पक्षधर प्रयासों पर उतरते हैं। ऐसी स्थिति को ध्यान में रखते हुए शास्त्रकारों ने कुपात्रों को अविवेकपूर्वक दिए गए दान की निंदा भी की है। गाँधी जी ने गरीबों की आर्थिक सहायता का उपयुक्त तरीका यही बताया था

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कि उनकी बनी खादी जैसी वस्तुएँ खरीदकर उनकी परोक्ष सहायता की जाए।

संकटग्रस्तों, अभावग्रस्तों की सहायता करने में धन का सदुपयोग ही है। सुविधा-संवर्द्धन के लिए कई लोग धर्मशालाएँ, सदावर्त आदि ऐसा भी विनियोग करते हैं, जिनका लाभ सत्पात्रों को कम और कुपात्रों को अधिक मिलता है। मुफ्त औषधि वितरण की व्यवस्था को सराहा तो जाता है, पर कुपात्र ही इससे अधिक लाभान्वित होते हैं। तीर्थयात्रा पर, प्रीतिभोजों पर किए जाने वाले खरच भी वास्तविक हित साधन कितना कर पाते हैं? इसके लिए उपयोग की प्रक्रिया पर भी ध्यान देना होगा। लाखों-करोड़ों की संख्या में भिखारियों की संख्या बढ़ाने वालों ने गृहीताओं से स्वावलंबन और आत्मगौरव छीना है। ऐसा कुप्रचलन बढ़ाया है, जिसने आदर्शनिष्ठा को, मानवी गरिमा को गिराने में ही सहायता की है। भिक्षा भी एक व्यवसाय गिना जाने लगने से देश का गौरव बढ़ा नहीं, वरन गिरा ही है। इसलिए विचारशील वर्ग में उसे अनुचित ठहराया गया और हेय कहा गया है। प्रीतिभोजों से बची हुई जूठन मुफ्त में लेते रहने वाले वर्ग भी अब उस परंपरा को छोड़ रहे हैं। पहने हुए कपड़ों की उतरन सस्ते या मुफ्त में मिलने पर भी लेने वाला लजाता है और उस लाभ को संकोचपूर्वक ही ग्रहण करते-करते असमंजस में पड़ा रहता है। आपत्तिग्रस्त अथवा दुर्घटना में फँसे हुए लोगों के अतिरिक्त अन्य लोग भिक्षास्तर के अनुदानों को अस्वीकार करते हैं। जिन संस्थाओं को दान देने पर इनकम टैक्स की छूट मिलती है, उन्हें साझीदार बनाकर कई चतुर लोग दानी भी बन जाते हैं और आर्थिक लाभ भी उठा लेते हैं। चंदाजीवी, धंधेखोर भी ऐसी उलटी-पुलटी विसंगतियाँ बनाते रहते हैं। ऐसी दशा में यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि धन दान करें तो किस हद तक पुण्य कमाया या पाप घटाया। दहेज का लेन-देन भी कहने की दृष्टि से दान ही बन जाता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

देवालय और तीर्थ कभी लोकशिक्षण की अति महत्त्वपूर्ण आवश्यकता की पूर्ति करते रहे होंगे। कोई समय ऐसा भी रहा होगा, जब लोकमंगल के लिए समर्पित पुरोहित वर्ग आकाशी वृत्ति पर अपरिग्रही रीति-नीति अपनाए रहा होगा। तब उन्हें दान दक्षिणा देने की भी उपयोगिता थी। पर जब वह अधिकार वंश और वेश के आधार पर उनके हिस्से में चला गया, तो उसकी परिणति क्या हुई? इसकी विवेचना करते किस प्रकार बन पड़े? देवालय कभी धर्म प्रचार के केंद्र थे, पर आज तो उनमें मात्र मनोकामना पूरी करने के लिए उसी स्तर के देवताओं को बदले में अनेक गुना लाभ देने के लिए मनाया जाता रहता है।

यहाँ मात्र इतना कहा जा रहा है कि कुपात्रों को ही यदि धन दान दिया जाना हो, तो मुट्ठी खोलने से पहले हजार बार यह भी विचार कर लेना चाहिए कि इसकी परिणति क्या हुई या क्या हो सकती है? गिरों को उठाने और उठों को उछालने जैसी सत्प्रवृत्तियों के सवंर्द्धन में सहायक होने वाले दान सदा से सराहनीय एवं श्रेयस्कर रहे हैं। उस पुनीत परंपरा को तो अभी भी और भविष्य में भी जीवंत बनाए रहने की, रखे जाने की आवश्यकता है।

यहाँ इन पंक्तियों में एक नया सोच प्रस्तुत किया जा रहा है कि मानवता को लगे घावों को भरने के लिए जिस दान-पुण्य की पारमार्थिक आवश्यकता है, उसके लिए उपयुक्त माध्यम जनमानस का परिष्कार होना चाहिए। यह बन पड़े तो समझना चाहिए कि इस क्षेत्र की उर्वर भूमि में बोया गया प्रत्येक बीज ऐसे प्रतिफलों से लदा रहेगा, जिसमें प्रस्तुत संकटों को टालने से लेकर भविष्य में हर क्षेत्र को समृद्धिमय बनाने की क्षमता होगी। विचार परिमार्जन से लेकर सत्प्रवृत्ति संवर्द्धन तक की परिधि में आने वाले पुनीत कार्य ही ऐसे हैं, जिनके लिए स्वयं आधे पेट रहकर भी भाव भरे अनुदान प्रस्तुत करने की उदारता दिखाई जानी चाहिए। व्यक्ति और समाज का सर्वतोमुखी कल्याण उन्हीं भाव-संवेदनाओं के साथ अविच्छिन्न रूप से जुड़ा हुआ है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सर्वोच्च स्तर का ब्रह्मदान है–सत्प्रयोजनों के लिए अधिकाधिक मात्रा में समयदान का नियोजन। यह तभी बन पड़ेगा जब उसके पीछे श्रद्धा सद्भावना और शालीनता के अभिवर्द्धन का गहरा पुट हो।

भगवान ने मनुष्य को सृष्टि का सर्वोत्तम प्राणी बनाया है और साथ ही शारीरिक-मानसिक क्षमताओं का अजस्र भंडार भी विपुल मात्रा में दिया है, इसे अन्य प्राणियों के साथ किया गया अन्याय या मनुष्य के साथ बरता गया भाई-भतीजावाद स्तर का पक्षपात नहीं समझा जाना चाहिए। यह सामंतों से उनकी संतान को उत्तराधिकार में मिलने वाला मुफ्त का कोष या भंडार नहीं, जिसे कुकर्मों और दुर्व्यसनों में भी मनमाने ढंग से खरच कर डालने की छूट मिली रहती है। अन्य प्राणियों की तुलना में मनुष्य को जो कुछ भी अतिरिक्त रूप से मिला है, वह एक विशुद्ध धरोहर है। उसे ऐसी अमानत समझा जाना चाहिए, जिसे मात्र विश्व वाटिका को अधिक सुरम्य और अधिक सुसंस्कृत बनाने के लिए ही खरच किया जा सकता है। सरकारी खजाने में बड़ी संपदा जमा रहती है, पर उसमें से खजांची किसे कितना दे? यह शासकीय निर्धारणों पर ही निर्भर हैं। बैंक के कोषाध्यक्षों की तिजोरी में प्रचुर संपदा रहती है और उस तिजोरी की चाभी-कुंजी नियुक्त खजांची ही सँभालते हैं। इतने पर भी वे उसमें से निजी प्रयोजन के लिए अथवा अनधिकृत कामों के लिए पाई भी खरच नहीं कर सकते। यदि वे लोग उस धन को ले भागें या मनमाना खरच करने में उड़ा दें, तो इसे अनधिकारपूर्ण चेष्टा माना जाएगा। अमानत में खयानत करने का मुकदमा चलेगा और जेल ही न जाना पड़ेगा, वरन उस हड़पे हुए धन को घर-घूरा बेचकर भी वापस जमा करना पड़ेगा।

इस तथ्य को भुला देने वाले ही ईश्वर प्रदत्त बहुमूल्य संपदा जीवनकाल की अवधि का मनमाने ढंग से दुरुपयोग करते हैं और बदले में अपना लोक-परलोक बिगाड़ते हैं। पैसा तो मनुष्य का अपना कमाया हुआ है, इसलिए उसमें की जाने वाली धांधली को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तो दरगुजर भी किया जा सकता है, पर समय-संपदा की बरबादी तो खुली डकैती के सदृश है। इसे असाधारण स्तर का अनाचार कहा जा सकता है-ईश्वर के प्रति विद्रोह भी, जीवन के साथ किया खिलवाड़ भी।

मनुष्य की आवश्यकताएँ अत्यंत स्वल्प हैं परंतु उसकी उपार्जन क्षमता इतनी अधिक है कि कुछ ही घंटे की श्रम-साधना से निर्वाह की उचित आवश्यकताएँ पूरी की जा सकती हैं। सात घंटे सोने में, आठ घंटे कमाने में, पाँच घंटे इधर-उधर के कामों में खरच कर लेने पर भी बीस घंटे से अधिक रोज कुआँ खोदने और रोज पानी पीने वाले को भी खरचने नहीं चाहिए। चौबीस घंटे समय में से चार घंटे हर किसी के पास इसलिए बच जाते हैं कि उन्हें ईश्वर द्वारा निर्धारित प्रयोजनों के लिए, लोकमंगल के लिए, सत्प्रवृत्ति संवर्द्धन के लिए लगाया जा सके। पर जो इस अनुशासन को पूरी तरह भूल जाते हैं, सारा समय विलास, संग्रह, मनोरंजन एवं अवांछनीय प्रयोजनों के लिए खरच कर डालते हैं, उनके लिए यही कहा जा सकता कि वे आत्मा और परमात्मा के साथ विश्वासघात कर रहे हैं। जो कर्त्तव्यों की अवहेलना में ही निरत हैं, उन्हें ऐसी ऊत सूझ रही है जैसी कि उन्मादियों, आतंकवादियों और अनाचारियों को सूझती रहती है।

यह आपातकाल जैसा समय है। अग्निकांड, तूफान, भूकंप, दुर्भिक्ष, महामारी, बाढ़, दुर्घटना जैसे समय में तो हर भावनाशील को अपने निजी आवश्यक कामों को छोड़कर भी उस विपत्ति में सहायता करने के लिए दौड़ना पड़ता है। उस समय निष्ठुरता धारण करके यदि कोई मूकदर्शक बना रहे और गुलछर्रे उड़ाने में निरत रहे, तो वह सर्वत्र धिक्कारा जाएगा। जो सुनेगा, देखेगा, वह भी निष्ठुरता को धिक्कारे बिना रहेगा नहीं। आत्मा और परमात्मा की दृष्टि से भी इस प्रकार की उपेक्षा का बरता जाना अक्षम्य ही समझा जाएगा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लूट, बलात्कार, हत्या, डकैती जैसे अपराध आँखों के सामने होते रहें, पर जो समर्थ होते हुए भी उन अनाचारों की रोकथाम के लिए टस से मस न हो, तो उसे भी अपराधियों की श्रेणी में ही गिन लिया जाता है।

समय की संपदा को जिस भी प्रयोजन के लिए लगाया जाए, उसी स्तर की फसल पककर सामने आती है। लोभ, मोह और अहंकार के लिए, वासना-तृष्णा के लिए बौनी समझ के लोग उसे लगाते हैं, फलस्वरूप शोक-संताप, कलह-पतन के पराभव भुगतते हैं। इसी प्रचलन ने व्यक्ति और समाज को ऐसे जंजालों में फँसा दिया है जिनमें विनाश और विग्रह के अतिरिक्त और कुछ मिलता ही नहीं दीख पड़ता। आवश्यकता इस अभ्यास को आदि से अंत तक बदलने की है। देवमानवों को मात्र पुण्य और परमार्थ ही सुहाता था, अंतराल की शक्तियों और बहिर्जगत की संपदाओं को सत्प्रवृत्ति संवर्द्धन के लिए लगाया जाता था। वे अपनी सामर्थ्य का नियोजन अपने-परायों का कल्याण करने में ही निरत रहने में करते थे। फलतः सर्वत्र सतयुगी वातावरण बिखरा दीखता था और दैवी अनुग्रह अमृत वर्षा की तरह बरसता था। अभ्युदय के सभी द्वार खुले रहते थे और वहाँ के वातावरण को स्वर्गीय बनाते थे।

पिछली शताब्दी में गिरने और गिराने का मार्ग अपनाया गया। उसने नारकीय परिस्थितियाँ उत्पन्न करके रख दी है। इस अनाचार से प्रकृति और परमेश्वर दोनों को ही भारी कष्ट हुआ है। उसने कुमार्गगामियों को कड़ी प्रताड़ना देकर सीधे रास्ते पर चलाने का और साथ ही जो विनाश हो चुका है, उसे नए सिरे से सुधारने का भी निश्चय किया है। लंका ध्वंस और धर्मराज्य की स्थापना की त्रेता वाली दुहरी प्रक्रिया पुनः दुहराई जा रही है। इस भवितव्यता में सम्मिलित होकर श्रेयाधिकारी बनने की मानसिकता वाले हनुमान, जामवंत, नल-नील ढूँढ़े जा रहे हैं। देवताओं को मनुष्य कलेवर धारण करके इस नवसृजन के लिए परमसत्ता द्वारा आमंत्रित किया

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जा रहा है। जो सहमत हो रहे हैं उनसे एक ही अपेक्षा की जा रही है–महाक्रांति के लिए समयदान। इन दिनों यही एक कार्य है–हरिश्चंद्र, भामाशाह स्तर का उदार आचरण। इसे अपनाने वाले लगभग उतने ही बड़े श्रेय के अधिकारी बनेंगे, जिसे अब तक मात्र परमेश्वर को ही दिया जाता है। राम की प्रतिष्ठा के लिए जितने देवालय बने हैं, उनसे हनुमान के मंदिर अधिक ही हैं।

यह चिंता करना व्यर्थ है कि अपनी समस्त संपदा यदि महाकाल की पुकार सुनकर नवसृजन के लिए लगा दी गई है, तो हमें घाटा पड़ेगा। वस्तुतः यह नफे का सौदा है। संसार भर के महामानवों का इतिहास इस तथ्य का साक्षी है कि परमार्थी देव पुरुषों ने जो खपाया उसकी तुलना में पाया कहीं अधिक है। मात्र संकीर्णता के वशीभूत होकर ही लोग युगधर्म निभाने और समय की पुकार सुनने में आना कानी करते हैं, पर जिन्होंने भी इस प्रयोजन के लिए साहस बटोरा है, वे कृत-कृत्य होकर रहेंगे और लोकहित के निमित्त इतना कुछ कर सकेंगे जिसके लिए उसे अनुकरणीय-अभिनंदनीय देवमानव के रूप में अनंतकाल तक स्मरण किया जा सके।

भगवान का द्वार निजी प्रयोजनों के लिए अनेकों खट-खटाते पाए जाते हैं। पर अबकी बार भगवान ने अपना प्रयोजन पूरा करने के लिए साथी-सहयोगियों को पुकारा है। जो इसके लिए साहस जुटाएँगे, वे लोक और परलोक की सिद्धियों-विभूतियों से अलंकृत होकर रहेंगे। शांतिकुंज के संचालकों ने यही कार्य संपन्न किया और अपने को अति सामान्य होते हुए भी अत्यंत महान कहलाने का श्रेय पाया है। जाग्रत आत्माओं से भी इन दिनों ऐसा अनुकरण करने की अपेक्षा की जा रही है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रगति के चार चरण

पुण्य परमार्थ के लिए कौन-सा क्षेत्र चुनें? किस दिशा धारा को अपनाएँ, अपने लिए क्या कार्यक्रम भावी जीवन के नियोजन हेतु अपनाएँ? समयदान की श्रद्धांजलि किस देवता के चरणों में अर्पित करें? प्राणवान परिजनों के सामने प्रस्तुत इन समस्त प्रश्नों का उत्तर एक ही है कि जन-जीवन में गहराई तक घुसी हुई विकृतियों का उन्मूलन। क्योंकि व्यक्ति और समाज की स्थानीय एवं संसार में संव्याप्त अगणित विपन्नताएँ आस्था संकट के कारण ही उत्पन्न हुई हैं। भ्रष्ट चिंतन ही दुष्ट आचरणों का जन्मदाता है और उसी के कारण समूचा वातावरण अवांछनीय विपन्नता से भर गया है। यदि प्रचलित मानसिकता को बदला जा सके, तो उन अगणित समस्याओं का सहज समाधान निकल सकता है, जो सर्वत्र हाहाकार मचाए हुए है और सर्वनाश को चुनौती दे रहे हैं।

लोकमानस का परिष्कार, अनुपयुक्त प्रचलनों का परित्याग, शालीनता की रीति-नीति को प्रश्रय-इस एक ही उद्देश्य को 'विचार क्रांति' 'महाक्रांति', 'जनमानस का परिष्कार','युग परिवर्तन' आदि नामों से जाना जा सकता है। बात एक ही है। उसे नाम कितने ही अन्य भी दिए जा सकते हैं। धर्म धारणा, सेवा-साधना भी यही है।

यों सुविधा संवर्द्धन के लिए बनाए हुए अवलंबन भी दान-पुण्य की परिधि में आते हैं। निर्धनों को अनुदान और संकट निवारण में आर्थिक स्तर का सहयोग भी परमार्थ की परिधि से बाहर नहीं है। पर इन्हीं दिनों जिस प्रयत्न को प्रमुखता के साथ प्रश्रय मिलना चाहिए, जिसे लोकशिक्षा या जनजागरण कहा जा सकता है, वही निकृष्टता की पक्षधर मानसिकता को बदल सकने में समर्थ हो सकती है। इस एक कार्य को सफलतापूर्वक संपन्न कर लेने से अन्य पारमार्थिक कहे जाने वाले कार्य इतने सरल एवं स्वाभाविक हो जाते हैं कि अनायास ही वे अपनी पटरी पर लुढ़कने लगेंगे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मानसिकता को सुधारने-उभारने में लेखनी और वाणी को प्रधान माध्यम माना जाता है। इसी को स्वाध्याय और सत्संग भी कहते हैं। लेखनी स्वाध्याय का संरजाम जुटाती है और वाणी से कानों के छिद्र में मान्यताओं को प्रवेश कराने के रूप में मस्तिष्क को झकझोरा जाता है। धर्मतंत्र के अंतर्गत इन्हीं दोनों को प्रमुखता दी गई है। कथा, प्रवचन, कीर्तन आदि में वाणी काम करती है। पाठ, स्वाध्याय आदि में लेखबद्ध प्रशिक्षण का प्रभुत्व है। पढ़े और बिना पढ़े दोनों ही वर्गों में इन माध्यमों से किसी न किसी रूप में प्रकाश पहुँचाया जा सकता है। पढ़े-लिखे लोग युग साहित्य को अनपढ़ों को पढ़कर सुना सकते हैं।

इस संदर्भ में संजीवनी विद्या का, परिवर्तन प्रयोजन का व्यावहारिक प्रशिक्षण भी आता है। इसके लिए पाठ्यक्रम चलाने और साधन प्रयोजन में व्यक्तित्व को झकझोरने का कार्य भी ऐसा है जिसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती है।

क्रिया-कलापों में एक कार्य देवमानवों की संयुक्त शक्ति का विकास भी है, जिसे दिव्य-संगठन कहा जा सकता है। इसके लिए धार्मिक कर्मकाण्डों आदि के माध्यम से समुन्नत विचारधारा वाले वर्ग को एकत्रित करने की आवश्यकता पड़ती है। घनिष्ठता और सामूहिकता से संगठन को उद्भूत करने के लिए प्रदर्शन आदि आयोजनों की भी आवश्यकता रहती है।

उपर्युक्त निर्धारण-प्रतिपादन को वर्गीकृत किया जाए तो उसके चार चरण बन पड़ते हैं।

(१) स्वाध्याय के लिए युग साहित्य का प्रयोग। (२) सत्संग के लिए प्रवचन, परामर्श, विचार-विनिमय आदि की व्यवस्था। (३) प्रशिक्षण एवं साधना के लिए नियोजित किए जाने वाले सत्रों में सम्मिलित होना। (४) सामूहिक समारोह, दीपयज्ञ, तीर्थयात्रा, जुलूस प्रदर्शन आदि आयोजनों द्वारा अलख जगाने, जनसंपर्क साधने की क्रिया-प्रक्रिया को अपनाया जाना। युग परिवर्तन के लिए इन चारों ही माध्यमों को समुचित प्रश्रय मिलना चाहिए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

युग चेतना का प्रसारण

विचार परिष्कार के लिए युगधर्म का प्रतिपादन और प्रस्तुत भ्रांतियों-विकृतियों के निराकरण में सत्साहित्य का अधिकाधिक प्रचार-प्रसार आवश्यक है। इस प्रकार का स्वाध्याय उपक्रम अधिकाधिक लोगों तक पहुँच सके, इसके लिए शांतिकुंज एवं युग निर्माण योजना, मथुरा द्वारा उस साहित्य का अभिनव सृजन किया गया है, जो युगधर्म की रूपरेखा और सामायिक समस्याओं को प्रस्तुत करते हुए दूरदर्शी विवेकशीलता को जगाता है।

इस प्रयास को एकाकी स्तर पर करना हो, तो उसके लिए झोला पुस्तकालय योजना सर्वसुलभ है। इसकी लिए अपने संपर्क-क्षेत्र में शिक्षितों के साथ संपर्क बढ़ाया जाए। उनकी अंतरात्मा को स्पर्श करने वाले युग साहित्य को एक छोटे झोले में लेकर उन तक पहुँचा जाए। पढ़ने के लिए उन्हें घर बैठे वह साहित्य पहुँचाया व नियत अवधि में उसे पढ़कर वापस करने के लिए सहमत किया जाए।

अपने देश की गरीबी, अशिक्षा और सत्साहित्य के प्रति अरुचि को देखते हुए यह आशा नहीं की जा सकती कि युग चेतना को प्रोत्साहन देने वाला साहित्य अभीष्ट मात्रा में लिखा, छापा और प्रकाशित किया जाएगा। विक्रेता भी ऐसे झंझट में क्यों हाथ डालें, जिसमें उन्हें तत्काल संतोषजनक लाभ न होता हो। यह एक अवरोध है जिसके कारण नवोदित राष्ट्र को उपयुक्त दिशा निर्देशन प्राप्त करने के लिए अभीष्ट साहित्य उपलब्ध नहीं हो पाता। इसलिए शांतिकुंज ने उपर्युक्त सभी पक्षों को अपने हाथ में लिया है और हर शिक्षित को पढ़ाने और अशिक्षित को सुनाने के लिए झोला पुस्तकालय योजना बनाई तथा स्वयंसेवी समयदानियों द्वारा समग्र निष्ठापूर्वक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चलाई है। इस प्रयास के अंतर्गत लाखों को घर बैठे बिना कुछ खरच किए नवयुग का संदेश मिल रहा है।

इस प्रयास का कुछ बड़ा रूप है–ज्ञानरथ संचालन। युग साहित्य को युग देवता का संदेश-प्रतीक मानते हुए उसे साइकिल के दो पहिये वाली गाड़ी पर सुसज्जित रूप से इस स्तर का बनाया गया है कि बाहर से देखने वालों को एक छोटा देवालय सा प्रतीत होता है। इसे खींचते धकलते हुए परिजन अपने क्षेत्र में शिक्षित नर-नारियों तक झोला पुस्तकालय की भाँति सत्साहित्य देने, पढ़ाने और वापस लेने का उपक्रम चलाते हैं और घर-घर तथा जन-जन तक अपनी पैठ बनाते हैं। आकर्षण भी अधिक रहता है और संपर्क भी अधिक बड़े क्षेत्र में अधिक लोगों तक बनता है।

प्रज्ञाकेंद्रों को अचल और ज्ञानरथों को चल प्रज्ञा मंदिर मानकर इस योजना को चलाया तो बहुत दिनों से सफलतापूर्वक जा रहा था, पर अब उसमें कुछ और नए एवं सशक्त उपकरण जोड़ दिए गए हैं, जिनके कारण वह प्रज्ञा वाहन जिधर से भी गुजरता है उधर ही अच्छी-खासी भीड़ जमा हो जाती है और ऐसी प्रेरणाएँ मनोयोगपूर्वक हृदयंगम की जाती हैं, जिनकी कि इन दिनों नितांत आवश्यकता है।

नवनिर्मित ज्ञानरथों में मोटर वाली छोटी बैटरी से चलने वाला टैपरिकार्डर और लाउडस्पीकर फिट कर दिया गया है। इस माध्यम से जनसमुदाय को प्राण-प्रेरणा झकझोरने वाला युग संगीत सुनने को मिलता है और छोटे-छोटे किंतु सारगर्भित प्रवचन-परामर्श सुनने को मिलते रहते हैं। निर्जीव होते हुए भी ज्ञानरथ सजीव वक्तव्य और प्राणवान संगीत से अपने रास्ते में मिलने वालों से ऐसा कुछ कहता और गाता रहता है जिसकी कि परिवर्तन की पृष्ठभूमि बनाने के लिए महती आवश्यकता है।

एक पूरे दिन में बैटरी की बिजली प्रायः खरच हो जाती है। उसे नए सिरे से सशक्त बनाने के लिए इतना भर करना पड़ता है

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कि घर की बिजली के प्लग के साथ 'चार्जर' उपकरण द्वारा उसे जोड़ दिया जाए। सवेरा होने से पहले बैटरी फिर दूसरे दिन का दायित्व पूरा करने के लिए पूरी तरह तैयार हो जाती है। इस प्रयास में बिजली का खरच कुछ पैसों का ही बैठता है, जिसकी व्यवस्था बनाना इन ज्ञानरथ चलाने वालों में से किसी के लिए कुछ भी कठिन नहीं पड़ता।

पिछले दिनों वाले ज्ञानरथ मात्र साहित्य का लाभ पहुँचाने के लिए झोला पुस्तकालय स्तर की सेवा-साधना में निरत रहते थे। पर अब वे अपने छोटे कलेवर में दिन भर प्रवचन और गायन करते रहने पर भी न थकने वाला माध्यम सँजोए रहने लगे हैं। इसलिए उसकी उपयोगिता अनेक गुनी अधिक बढ़ गई है। पुराने ज्ञानरथों को चलाने वाले राह में मिलने वालों को अपने प्रयास का वाणी द्वारा भी परिचय देते थे। पर अब नए ज्ञानरथों को बिना पढ़े-लिखे, गूँगे-बहरे, शिक्षित-अशिक्षित लिए-लिए फिरते हैं और दिन भर एक अति प्रभावोत्पादक चलते-फिरते प्रचार समारोह को गतिशील रखे रहते हैं। पुराने की तुलना में नए ज्ञानरथों की लागत तो कुछ बढ़ गई है, पर वह इतनी नहीं कि औसत नागरिक उसे अपनी सीमित सामर्थ्य में ही जुटा न सके। इस प्रयास में स्वाध्याय और सत्संग के दोनों ही प्रयोजन एक साथ जुड़ जाते हैं।

इसके अतिरिक्त इस क्षेत्र का एक और माध्यम है-दीवारों पर आदर्श वाक्य लिखते रहना। गेरू, काजल, नील, पीली रामरज, मुलतानी मिट्टी, खड़िया आदि को एक डिब्बे में डालकर बड़ी दवात के रूप में विनिर्मित किया जा सकता है और उसमें से बालों के ब्रुश या बाँस जैसे किसी लकड़ी के उपकरण को कलम बनाकर जहाँ भी खाली दीवार दीख पड़े, वहाँ हाथ साधकर सुंदर अक्षरों में आदर्शवाक्य लिखे जा सकते हैं जिनसे उधर से रास्ता निकलने वाले व्यक्ति नजर डालते ही सामयिक प्रेरणाएँ प्राप्त करते रह सकते हैं। (१) हम सुधरेंगे-युग सुधरेगा, हम बदलेंगे-युग बदलेगा। (२) नर और नारी एक समान-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जाति वंश सब एक समान। (३) इक्कीसवीं सदी उज्ज्वल भविष्य का अवतरण जैसे दर्जनों आदर्श वाक्य गढ़े गए हैं। उनमें से जहाँ जिनका चयन उपयुक्त दीखता हो, उसे वहाँ लिखा जा सकता है। इस प्रकार हर दीवार, खंडहर, टीले, पत्थर को बोलती दीवार बनाया जा सकता है।

इस वर्ग में एक अन्य योजना स्टीकर चिपकाने की आती है। यह भी अनेकों प्रकार के तथा नाममात्र की लागत से भरे-पूरे हैं। इन्हें किवाड़ों पर, आलमारियों पर, अटैचियों पर, फर्नीचरों पर कहीं भी चिपकाया जा सकता है। प्लास्टिक पर बने और पक्की स्याही से अंकित एवं मजबूत गोंद से सटे होने के कारण छोटे-बड़े साइज के यह स्टीकर ऐसे हैं, जिन्हें वर्षों के लिए स्थायी रहने की स्थिति में चिपकाया जा सकता है। इनकी कीमत कुछ पैसे मात्र होने से हर किसी को खरीदने और घर सजाने के लिए सहमत किया जा सकता है। मोटरों, ताँगों, रिक्शों आदि पर उन्हें चिपका दिया जाए, तो उनमें बैठने वाले भी ऐसा कुछ हृदयंगम करते हुए चलते हैं, जिसे इन दिनों समझना और समझाना ही चाहिए।

इस प्रकार की प्रचार सामग्री के सस्ते-महँगे अनेक प्रकार के उपकरण विनिर्मित किए गए हैं। रूमालों, साड़ियों, दुपट्टों पर भी ऐसे ही कुछ प्रेरणाप्रद अंकन सटा देने की भी योजनाएँ बनती और चलती रहती है।

साक्षरता की, प्रौढ़ शिक्षा की व्यवस्था बनाना अपनी जगह आवश्यक है। अशिक्षितों की अंधों में गणना होती है, इसलिए प्रत्येक शिक्षित परिजन को यह कहा गया है कि वह अपने संपर्क-क्षेत्र में से अशिक्षित नर-नारियों को, बालक-वृद्धों को, ठाली और व्यस्तों को तलाश करके उनके साथ संपर्क साधें। उनकी सुविधा का समय खोजें और अपने घर बुलाकर अथवा उनके घर जाकर हर किसी को साक्षर बनाने का प्रयत्न करे। अपने देश का कोई भी नागरिक अशिक्षित न रहे, इसके लिए विद्या विस्तार में हर शिक्षित

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

को 'विद्याऋण' चुकाने के लिए बिना पढ़े को पढ़ाने को एक आवश्यक कर्त्तव्य की तरह अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।

इसी प्रयास का दूसरा चरण यह है कि साक्षरता के उपरांत दैवी प्रेरणाएँ पढ़ने का अवसर मिले, जिससे व्यक्तित्व विकास में, लोकमानस के परिष्कार में अभीष्ट प्रगति प्रेरणा का भी समावेश हो सके। युग साहित्य को जन-जन तक पहुँचाने के लिए झोला पुस्तकालय और ज्ञानरथ इसी निमित्त चलाए जा रहे हैं। दीवारों पर आदर्श वाक्य लिखने और प्रेरक स्टीकर स्थान-स्थान पर चिपकाने की योजना भी इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सत्संग प्रशिक्षण एवं संगठन

विचार-विनिमय भी उपयोगी आदान-प्रदान की तरह है। प्रगति के लिए मिल-जुलकर कदम बढ़ाने पड़ते हैं। जीवनक्रम को ठीक तरह चलाने के लिए जिस प्रकार अनेक साधन जहाँ-तहाँ से जुटाने पड़ते हैं, उसी प्रकार विचार-संपदा को बढ़ाने के लिए आवश्यक मणिमुक्तक वहाँ से खोजने पड़ते हैं, जहाँ वे पहले से ही मौजूद हैं। हाट-बाजार की व्यवस्था भी इसलिए की जाती है कि जरूरतमंदों को आवश्यक वस्तुएँ एकत्रित उपलब्ध कराने में सुविधा रहे। अनगढ़ विचार तो कूड़े-करकट की तरह कहीं भी बिखरे पाए जाते हैं और बिना बुलाए ही घर में घुस आते हैं, पर उपयोगी, आवश्यक और महत्त्वपूर्ण वस्तुएँ हस्तगत करने के लिए उत्साहपूर्वक प्रयत्न करने पड़ते हैं। ठीक इसी प्रकार हर किसी को सुनियोजित, प्रगतिशील विचारों को ढूढ़ने-बटोरने की आवश्यकता पड़ती है। इसी प्रक्रिया को संपन्न करने का नाम है-सत्संग।

सर्वविदित है कि संगीत का प्रभाव पड़े बिना नहीं रहता। सुगंध और दुर्गंध के समीप बैठकर इस तथ्य का प्रमाण सहज ही प्राप्त किया जा सकता है। बच्चे भाषा, आचरण और व्यवहार समीपवर्ती लोगों का अनुकरण करते हुए ही उपलब्ध करते हैं। व्यक्तित्व और दिशा निर्धारण में भी संगति का असाधारण प्रभाव पड़ते देखा जाता है। उत्थान और पतन में इसी प्रक्रिया की बड़ी भूमिका रहती है। इसलिए जो अपना या दूसरों का हित चाहते हैं, उन्हें जीवन की अन्य आवश्यकताओं को पूरा करने की तरह सत्संग उपलब्ध होते रहने की भी व्यवस्था करनी चाहिए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हर किसी के संपर्क में कुछ न कुछ लोग होते ही हैं। परिवार के लोग एक साथ रहते और एक-दूसरे से न केवल सहयोग प्राप्त करते हैं, वरन प्रभावित भी होते हैं। इसलिए परिवार के वरिष्ठ व्यक्तियों का कर्त्तव्य बनता है कि वे कम योग्यता वालों को अधिक सुयोग्य, अधिक सुसंस्कृत बनाए रखने के लिए घर-कुटुंब में सत्संग का उपक्रम अनिवार्य रूप से बनाए रहें। विचार-विनिमय चलता रहे। शंका समाधान की गुंजाइश रहे। अनुभवों को सुनने और सुनाने का कार्यक्रम भी अन्य नित्य कर्मों की तरह सुनियोजित ढंग से चलता रहे।

संकोचवश या व्यस्तता के बहाने परिवार के सदस्यों से विचारों का आदान-प्रदान प्रायः उपेक्षित रहता है। इससे जहाँ ज्ञानवृद्धि में रुकावट पड़ती है, वहाँ पारस्परिक घनिष्ठता भी बढ़ने से रुक जाती है। परिवारों में कोई न कोई सभ्य ऐसा अवश्य रहना चाहिए जिससे एक-दूसरे की कमी-कठिनाई जानने और उनके समाधान सुझाने का अवसर मिलता रहे। यह कार्य कथा, कहानी, जीवन चरित्र, संस्मरण, घटनाक्रम, समाचार सुनने-सुनाने के माध्यम से भी चल सकता है। साथ में एक उपयोगी मनोरंजन की व्यवस्था भी रह सकती है।

घर में अन्य आवश्यक वस्तुओं की तरह घरेलू पुस्तकालय की भी ऐसी व्यवस्था रहनी चाहिए, जिसके माध्यम से सद्विचारों को पढ़ने और सुनने का अवसर मिलता रहे। स्वाध्याय और सत्संग ये दोनों ही मनुष्य की मानसिक एवं भावनात्मक आवश्यकताएँ हैं। इनकी पूर्ति वैयक्तिक, पारिवारिक एवं सामाजिक क्षेत्रों में अपनी परिस्थितियों के अनुरूप करते ही रहना है। इन पंक्तियों में इसे पारिवारिक क्षेत्र में आरंभ करने के लिए इसलिए कहा गया है, ताकि उसे सहज सुगमता के साथ सीखा और सिखाया जा सके। उसका प्रत्यक्ष लाभ अपनों को विकसित करने के लिए प्रभावी अभ्यास करने में प्रवीणता प्राप्त हो सके। युग अवतरण अभियान

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

को अग्रगामी बनाने के लिए तो यह युक्ति ऐसी है, जिसे हर हालत में प्राथमिकता देनी पड़ेगी। इस अवलंबन से ऐसे वक्ता भी प्रशिक्षित हो सकते हैं, जो भावी संभावनाओं को साकार करने में अपनी असाधारण उपयोगिता का परिचय दे सकें।

युग निर्माण आंदोलन का एक अनिवार्य चरण साप्ताहिक सत्संग है। रविवार को आमतौर से छुट्टी रहती है। उस दिन इस हेतु दो-तीन घंटे का कार्यक्रम बनाया और उसमें अधिकाधिक लोगों को सम्मिलित किया जा सकता है। (१) संक्षिप्त दीपयज्ञ (२) सहगान कीर्तन (३) नवसृजन के संदर्भ में प्रवचन (४) झोला पुस्तकालय उपक्रम का भी इसी में समावेश-ये चार उपक्रम एक साथ जोड़ देने से थोड़े से लोगों के बीच भी साप्ताहिक सम्मेलन नियमित रूप से चालू रह सकता है। जहाँ अवसर हो वहाँ घनिष्ठ लोगों का जन्म-दिवसोत्सव मनाने के रूप में इसी प्रक्रिया को उसके घर संपन्न किया जा सकता है, ताकि उस व्यक्ति विशेष के मित्र-संबंधी उसमें विशेष उत्साहपूर्वक सम्मिलित हो सकें और अपनी सत्संग योजना को नए लोगों तक पहुँचाने का अवसर मिल सके।

इन सत्संग आयोजनों का एक विशेष लाभ यह है कि जिन लोगों को इसमें रस आने लगता है, वे बार-बार आपस में मिलते हैं। परिचित होते एवं घनिष्ठ बनते हैं। इस प्रकार विचारशील लोगों का संगठन बनने, बढ़ने और सुदृढ़ होने का सिलसिला भी साथ ही चल पड़ता है। यह बहुत बड़ी बात है, कि दैत्य इसीलिए सफल होते रहे हैं कि वे संगठित होते हैं। देवताओं की, संत-सज्जनों की एक ही सबसे बड़ी कमी है कि आत्मकेंद्रित रहते और संगठन को महत्त्व नहीं देते हैं। पौराणिक कथा प्रख्यात है कि हारे हुए देवताओं ने जब अपने उद्धार का उपाय प्रजापति से पूछा, तो उन्होंने उन्हीं की सामर्थ्य को एकीकृत करके महाकाली का अवतरण किया। उसी ने दैत्यों को हराया और देवताओं को दुर्गति से उबारा। यह कथा अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिए सटीक मार्गदर्शन करती है। नवसृजन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

में रुचि लेने वाले प्रज्ञावानों को जहाँ विचार क्रांति के संदर्भ में अनेक काम करने हैं, सत्प्रवृत्ति संवर्द्धन और दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन के अनेक निर्धारणों को पूरा करना है, वहाँ उससे भी पहले यह करने की आवश्यकता है कि सृजनशिल्पी परस्पर संगठित हों। इसके लिए साप्ताहिक सत्संग, जन्म-दिवसोत्सव जैसे छोटे कार्यक्रम अभीष्ट उद्देश्य की पूर्ति में असाधारण रूप से सहायक हो सकते हैं। इसलिए जहाँ भी प्रकाश की किरणें फूटें, वहाँ उपर्युक्त स्वाध्याय और सत्संग के उभयपक्षीय शक्तिशाली चरण उठने ही चाहिए। छोटे-बड़े रूप में इस प्रयोजन के लिए नियमित रूप से उत्साहपूर्वक निरत रहा जाना चाहिए।

सत्संग और संगठन का महत्त्व एवं वास्तविक उद्देश्य तो छोटे आयोजनों से ही पूरा होता है। पर प्रचार-प्रयोजन के लिए, जन-जागरण के लिए बड़े आयोजन, समारोहों की भी आवश्यकता रहती ही है। राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक संस्थाएँ अकसर अपने बड़े वार्षिकोत्सव संपन्न किया करती हैं। इससे एक विचार के लोगों को एक स्थान पर बड़ी संख्या में एकत्रित होते देखकर उपस्थितजनों का उत्साह भी बढ़ता है और दर्शकों पर भी मनोवैज्ञानिक दृष्टि से अच्छा प्रभाव पड़ता है। जिस विचारधारा को प्रचारित करना है, उसे अनेक लोगों तक एक ही समय में पहुँचा देने का यह सफल प्रयोग माना जाता है। धार्मिक मेलों का भी प्रचलन इसी दृष्टि से हुआ है। तीर्थों पर पर्व भी इसलिए मनाए जाते हैं। भारतीय संस्कृति का महत्त्वपूर्ण अंग माने जाने वाले पर्व-त्योहार भी सामूहिक रूप से इसलिए मनाए जाते हैं कि उत्कृष्ट विचारधारा के संपर्क हेतु अनेक लोग एक साथ एकत्रित हों और सामूहिक वातावरण में उत्कृष्ट चिंतन की गरिमा से एक साथ एक समय में लाभान्वित हों।

युगसृजन संगठनों के लिए यह एक आवश्यक कर्त्तव्य ठहराया गया है कि वे छोटे विचार गोष्ठियों, साप्ताहिक सत्संगों और बन पड़े

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तो बड़े आयोजन-समारोहों को पर्व-त्योहारों के अवसर पर अथवा वार्षिकोत्व के रूप में बड़े आकार-प्रकार, बड़ी तैयारी, बड़ी धूमधाम के साथ संपन्न करें, ताकि अपने साथी-सहयोगियों की बढ़ी-चढ़ी संख्या देखकर लोगों में संगठित होने की ललक उठे और उस विशालता से दर्शक एवं सम्मिलित लोग उत्साहवर्द्धक प्रेरणा प्राप्त करें। यह सभी छोटे-बड़े कार्यक्रम संत्संग में ही गिने जाते हैं। इनके सहारे देवजनों का पारस्परिक परिचय एवं संगठन बनने का कार्य भी सरलतापूर्वक संपन्न होता चला जाता है।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

महान लक्ष्य की विकेंद्रीकरण योजना

उज्ज्वल भविष्य की विश्वव्यापी संरचना के लिए आवश्यक समझा गया है कि संसार भर में रह रहे ६०० करोड़ मनुष्यों में से प्रत्येक को मानवी गरिमा और मर्यादा के अनुरूप चिंतन, चरित्र और व्यवहार अपनाने के लिए सहमत ही नहीं, अपितु बाध्य भी किया जाय। दुर्बुद्धिजन्य अनीति अपनाने पर तो समग्र एवं समर्थ उत्कृष्टता की संभावना ही नहीं बनती। व्यापक लोकमानस का परिष्कार यद्यपि बहुत बड़ा कार्य है, परंतु उसे संपन्न किए बिना और कोई विकल्प नहीं। जिस ढर्रे पर हम सब इन दिनों चल रहे हैं, वह पतन और पराभव का ही है। जिसे अपनाए रहने पर महाविनाश की परिस्थितियाँ ही उत्पन्न हो सकती हैं।

इतना बड़ा काम कैसे किया जाए? कौन करे? इस संबंध में उथले विचार करने पर बिल्ली के गले में चूहे द्वारा घंटी बाँधे जाने के समान बात बनना असंभव ही लगता है। पर जब यह विचार सामने आता है कि एक छोटी नर्सरी में लगाए हुए पौधे जब स्थान-स्थान पर आरोपित किए जाते हैं और उसके फलस्वरूप विशालकाय, अगणित वृक्षों से सजा उद्यान, सघन वन विनिर्मित होता है, तो साहस उभरता है, विश्वास होता है कि अच्छे शुभारंभ का परिणाम यह भी हो सकता है कि विश्व व्यवस्था में असाधारण परिवर्तन असंभव न रहकर संभव होगा। पिछले दिनों बौद्ध धर्म, ईसाई धर्म और साम्यवादी मान्यता ने किस प्रकार गति पकड़ी और चिनगारी ने दावानल जैसा रूप धारण किया, यह बात किसी से छिपी नहीं है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शांतिकुंज ने इस दिशा में जो श्रीगणेश शुभारंभ किया है, वह अपने पाँच लाख पंजीकृत और पच्चीस लाख सहयोगी समर्थकों द्वारा आरंभ होता है। इस देव समुदाय में से प्रत्येक को एक से पाँच में विकसित होने के लिए कहा गया है। पाँच से पच्चीस, पच्चीस से एक सौ पच्चीस, एक सौ पच्चीस से छह सौ पच्चीस वाली गुणन प्रक्रिया यदि अनवरत रूप से गतिशील होती चले, तो मिशन का प्रस्तुत समुदाय भी कुछ बड़ी छलांगों से समूचे मनुष्य समुदाय तक संसार भर में अपना प्रकाश पहुँचा सकता है। इस विश्वास के साथ मजबूत कदम उठाए और समर्थ कार्यक्रम चलाए जा सकते हैं।

मिशन की यह घोषित प्रतिज्ञा सर्वविदित है कि युगसंधि के इन्हीं दस वर्षों में एक लाख से अधिक संगठन समारोह संपन्न करने हैं और अपने बलबूते ही युगसंधि की पूर्णाहूति में एक करोड़ ऐसे लोग सम्मिलित करने हैं, जो नवसृजन के प्रति निष्ठावान हों। यह आयोजन यदि अपनी पूर्णाहुति तक एक ही जगह संपन्न होकर रह जाए, तो यह सचमुच बहुत कठिन होगा। इसलिए इसे स्थान-स्थान पर करने की योजना बनी है।

सन् १९५८ में गायत्री तपोभूमि, मथुरा में संपन्न हुआ एक हजार कुण्ड वाला यज्ञ जिन्हें विदित है उन्हें याद होगा कि उसमें चार लाख याजक और १० लाख दर्शक उपस्थित हुए थे। उनके ठहरने आदि की व्यवस्था दस मील के दायरे की भूमि घेरने पर संपन्न हुई थी। इन दिनों संबद्ध व्यक्तियों को यह आश्चर्य होता होगा कि इतने बड़े समारोह से संबंधित अनेकानेक जटिल व्यवस्थाएँ किस प्रकार जुटाई गईं और किस प्रकार इतने साधन एकत्रित हुए। पर इन आश्चर्यचकित लोगों में से प्रत्येक को यह एक तथ्य स्वीकार करना पड़ा था कि दैवी शक्तियों के मनोरथ सचमुच ही ऐसे होते हैं, जिनमें 'असंभव' शब्द का प्रयोग कहीं नहीं हो सकता। आकाश के ग्रहों-नक्षत्रों का, धरती की वनस्पतियों और प्राणियों का, जलाशयों की लहरों पर खेलते जलजीवों का संकल्प मात्र से जो सत्ता सृजन कर सकी है, उसके लिए इतने बड़े आयोजन-समारोह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

का संयोग बिठा देना क्यों कुछ कठिन होगा। उस समारोह की सफलता देखते ही बनती थी।

उस अनुभव के आधार पर जो मनोबल और संकल्प उभरा है, उसने एक प्रकार से निश्चित ही कर दिया है कि अगले बड़े कदम भी डगमगायेंगे नहीं। एक लाख संगठन समारोह–एक करोड़ भागीदार जिस आयोजन में सम्मिलित हो सके हैं, वह अपनी गति बढ़ाते हुए वायु, रोशनी, गरमी वर्षा की भाँति अपना विस्तार संसार भर में कर सकता है और नए संसार की नई संरचना का स्वप्न साकार होने में कोई अवरोध बाधक नहीं हो सकता। साधारणजनों से भी असंख्य गुना दृढ़ विश्वास इस संदर्भ में उन्हें है जो शांतिकुंज जैसी कुटीर में बैठकर इक्कीसवीं सदी के साथ जुड़े हुए उज्ज्वल भविष्य की–सतयुगी वातावरण के अवतरण की आशा सँजोए बैठे हैं।

युगसंधि महापुरश्चरण की जो क्रियापद्धति इन दिनों चल रही है, उसमें आवश्यक साधना, उपासना, सृजनात्मक संरचना के साथ-साथ वह संकल्प भी क्रियान्वित किए जाने का ताना–बाना बुना जा रहा है, जिसमें एक लाख संगठन-समारोह तथा एक करोड़ सृजन शिल्पी सम्मिलित किए जाने की योजना है।

विचार आया कि एक स्थान पर इतना बड़ा आयोजन करने पर प्रयाग कुंभ जैसे अनेक समारोह एकत्रित करने जैसी व्यवस्था बनानी होगी, साधन जुटाने होंगे और पर्यावरण पर जो प्रदूषण का दबाव पड़ेगा, वह सारी व्यवस्था लड़खड़ा देगा। इतने बड़े मेले में सम्मिलित लोग परस्पर परिचित एवं संगठित भी न हो सकेंगे। घुल-मिल भी न सकेंगे और भविष्य की वैसी रूपरेखा भी न बन पाएगी जैसे कि सन् १९५८ के सहस्रकुण्डी यज्ञ के साथ छह हजार शाखाओं और एक लाख कार्यकर्ताओं का हाथोंहाथ गठन बन पड़ा था। व्यवस्था की भी एक सीमा होती है। जहाँ अतिशय का अतिवाद हाथ में लिया जाता है, वहाँ उपयोगिता घटती और अव्यवस्था फैलती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इस कठिनाई पर गंभीरतापूर्वक विचार करने के उपरांत मार्गदर्शक सत्ता ने सुझाया कि यह अधिक अच्छा होगा कि एक स्थान पर इतना बड़ा समारोह न करके उसे खंडों में विभाजित कर दिया जाए और अनेक केंद्रों में उनकी शक्ति और सामर्थ्य के अनुरूप इस महान संकल्प को कार्यान्वित किया जाए। पूर्णाहुति का गगनचुंबी कार्यक्रम सीमित आयोजनों में संपन्न किया जाता रहे। यह पूर्णाहुति हर साल हो या कई वर्ष बाद एक बड़े समारोह के रूप में कार्यान्वित की जाए, यह केंद्रों की परिस्थितियों को देखते हुए निश्चय होता रहेगा।

इन दिनों २४०० विनिर्मित प्रज्ञापीठें हैं, जिनमें दर्शनीय और कीमती इमारतें बनी हुई हैं, जहाँ नियमित रूप से निर्धारित गतिविधियों का सूत्र संचालन होता है। इसके अतिरिक्त नवनिर्मित २४ हजार केंद्रों की व्यवस्था भी की जा रही है। यह सचल स्तर के होंगे, जहाँ ज्ञानरथ चलेंगे, जहाँ तीर्थयात्रा के जत्थे निकलेंगे, जहाँ साप्ताहिक सत्संगों के निर्धारण क्रियान्वित होंगे। वे भव्य इमारतों के रूप में दृष्टिगोचर भले ही न हों, पर उपयोगिता की दृष्टि वे यह चल स्थिति अचल निर्माणों से किसी भी प्रकार कम न होगी। विश्वासपूर्वक प्रयत्न चल रहा है कि न केवल पिछले २४०० प्रज्ञापीठ अधिक सक्रिय हों वरन नवनिर्मित २४ हजार प्रज्ञाकेंद्र भी उपयोगिता की दृष्टि से अपने को अधिक शक्तिशाली सिद्ध करें। यह चल-अचल केंद्रों की संख्या पच्चीस हजार से अधिक हो जाती है।

योजना यह चल रही है कि एक लाख आयोजनों और एक करोड़ भागीदारों को इन नए-पुराने प्रज्ञा केंद्रों को आवंटित कर दिया जाए। इससे देश के कोने-कोने में नवजागरण का आलोक प्रसारित होगा और एक स्थान पर इतना दबाव एकत्रित न होगा, जो अव्यवस्था पैदा करे और असाधारण रूप से भारी पड़े। यह विभाजन-आवंटन योजना इन दिनों पूरे उत्साह के साथ क्रियान्वित की जा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

रही है और केंद्रों की हर इकाई अपनी भागीदारी निर्धारित करने के लिए पूरी दौड़धूप कर रही है।

इस विभाजन प्रक्रिया की सरलता को देखते हुए भी आशा की गई है कि एक लाख केंद्रों और एक करोड़ भागीदार बनाने के पूर्व निर्धारण को नई रीति-नीति के आधार पर कई गुनी संख्या में फलित होने का अवसर मिलेगा। इतने सृजनशिल्पी विनिर्मित हो जाएँगे, जो इक्कीसवीं सदी के अवतरण में भगीरथी भूमिका निभा सकें। स्वयं धन्य बन सकें, योजनाकारी सत्ता को संतुष्ट कर सकें और यह भी दिखा सकें कि दैवी मार्गदर्शन में चलने वाले प्रयास युग परिवर्तन जैसे असाधारण-असंभव लगने वाले कार्य को मनुष्यों के सहारे ही साधारण और संभव बना सकते हैं।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तीर्थ प्रक्रिया का पुनर्जीवन

भारतीय ही नहीं, विश्व की सांस्कृतिक मान्यताओं में तीर्थयात्रा का अतिशय महत्त्व है। यरुशलम, मक्का, बोधगया, सारनाथ आदि तीर्थों की यात्रा के लिए उन मतों के अनुयायी दूरवर्ती क्षेत्र तय करके उन केंद्रों में पहुँचते और अपनी श्रद्धा की सघनता का परिचय देते हैं। भारतीय धर्म में तीर्थयात्रा की महिमा और गरिमा का असाधारण प्रतिपादन हुआ है। इसलिए असंख्य तीर्थयात्री इस प्रयोजन के लिए असाधारण मात्रा में समय, श्रम और धन का नियोजन करते हैं। इस प्रयास को अनेक सत्परिणाम उत्पन्न करने वाले धर्मानुष्ठानों में गिनते हैं। आद्य शंकराचार्य ने देश के चार कोनों पर चार धाम बनाए थे। इसके उपरांत हजारों की संख्या में छोटे-बड़े तीर्थ विभिन्न स्थानों पर बने। उनके कारण समीपवर्ती क्षेत्र के लोगों को भाव संवेदनाएँ चरितार्थ करने के अवसर मिले।

इन दिनों विकृतियों ने कोई क्षेत्र अछूता नहीं छोड़ा है। तीर्थ प्रयोजन भी नहीं। तीर्थयात्रा का महत्व एवं पुण्यफल इस तथ्य पर आधारित है कि वह धर्म प्रचार की पदयात्रा का रूप लेकर जन-जन से संपर्क साधे और उसका नेतृत्व करने वाले विचारशील जन-जीवन में समझदारी, ईमानदारी एवं बहादुरी जैसी सत्प्रवृत्तियों को उभारने की महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएँ। पर आज तो द्रुतगामी वाहनों में सवारी करके बड़े-बड़े नगरों में अवस्थित भव्य देवालयों की दर्शन झाँकी करने, जलाशयों में डुबकी लगाने और पूजा-पत्री करने मात्र जैसी लकीर पीटकर लोग अपने कर्त्तव्य की इतिश्री मान लेते हैं और खीझ, निराशा, निरर्थकता जैसी भावनाएँ लेकर वापस लौटते हैं। धक्का-मुक्की और फैली हुई गंदगी के अतिरिक्त और कोई वस्तु बाद में स्मरण नहीं रहती। यह कैसी तीर्थयात्रा? इतने भर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

से पुण्यफल कैसे आकाश से बरसेगा और पापों का क्षय होने जैसी मान्यताओं को किस आधार पर प्रश्रय मिलेगा?

भूल सुधारनी पड़ती है। भटक जाने पर राह बदलनी पड़ती है। अच्छा हो तीर्थयात्रा संबंधी प्रचलन में हम नए सिरे से विचार और परिवर्तन करें तथा देखें कि उस परिभ्रमण के साथ कहीं लोकमंगल जुड़ा है या नहीं। धर्म प्रचार की पदयात्रा के पुराने प्रचलन में अब यह अंतर हो सकता है कि उसे विनोबा जी की सर्वोदयी पदयात्रा स्तर की उपयोगिता से समन्वित किया जाए। समीपवर्ती क्षेत्र में सत्प्रवृत्तियों की प्राचीन या अर्वाचीन कार्यपद्धति के प्रति निष्ठा जमाने के लिए सुनियोजित क्रिया-प्रक्रिया निर्धारित करें।

गांधी जी जब कांग्रेस के माध्यम से देशसेवा की तैयारी करने लगे, तो उन्हें श्री गोखले ने सलाह दी कि वे पहले भारत माता की परिस्थितियाँ आँखों से देख लें। इसके लिए एक बार देश भ्रमण कर लें। गांधी जी ने वही किया और एक अर्धनंगी महिला की परेशान आँखों को देखकर इतने द्रवित हुए कि स्वयं भी आधी धोती पहनने और आधी ओढ़ने लगे। तभी से वे सच्चे अर्थों में महात्मा जी के नाम से प्रख्यात हुए। लोकसेवियों के लिए तीर्थयात्रा इसीलिए आवश्यक है कि वे अपनी समाज की वस्तुस्थिति समझें और तदनुसार उपचार के लिए जुटें। संत परिव्राजक इसी प्रयोजन के लिए तीर्थयात्रा को धर्मकृत्य मानते और उसमें निरत होकर लोक-कल्याण की बहुमुखी योजनाओं को क्रियान्वित करते थे।

आज की स्थिति में यह उपयुक्त लगता है कि जनजागरण की साइकिल यात्राओं पर टोली बनाकर निकलें। पदयात्रा के स्थान पर साइकिल यात्रा को अपनाने में कोई हर्ज नहीं। यह इतना सर्वसुलभ साधन है, जिसकी व्यवस्था करने में कोई कठिनाई भी नहीं आती और पदयात्रा का लाभ भी मिल जाता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

है। ईंधन से चलने वाले वाहनों से फैलने वाले प्रदूषण से भी मुक्ति मिलती है।

साइकिल यात्राओं की टोली का एक प्रवासचक्र बनाकर जनजागरण के लिए निकलें और जिधर से गुजरें, उधर ही युग चेतना का प्रकाश वितरण करें। दीवारों पर आदर्श वाक्य-लेखन करें, सहगान कीर्तन और युगधर्म संबंधित स्थानीय आधारों का स्वरूप और समाधान प्रस्तुत करें। इसके लिए देवालयों को केंद्र बनाने की आवश्यकता नहीं है। अपने देश का हर गाँव एक तीर्थ बनकर रहेगा। इस स्थापना के लिए हमीं लोग कटिबद्ध होकर क्यों न निकल पड़ें।

योजना इस प्रकार बने कि साइकिल टोली प्रचारक अपने यहाँ से शांतिकुंज को विश्व तीर्थ मानकर उसके लिए प्रयाण करें। जहाँ भी उपयुक्त लगे, विराम करें और अपने ढंग से प्रचार-प्रक्रिया क्रियान्वित करें। शांतिकुंज पहुँचकर दो-चार दिन विश्राम करें, साधना करें और प्रेरणा ग्रहण करें।

यों पैदल यात्रा में अधिक जनसंपर्क होने, खरच कम पड़ने, चाहे जहाँ सुस्ताने आदि की अधिक सुविधाएँ तो हैं, पर समय कम लगने तथा श्रम को सहन करने की सुविधा भी तो चाहिए। जिन्हें साइकिल चलाना नहीं आता, ऐसे लोग, विशेषतया महिलाएँ साइकिल की अपेक्षा पैदल चलने अथवा वाहनों का उपयोग करने के लिए विवश होती हैं, पर औसत व्यक्ति के लिए, जिन्हें चलाना आता हो, उन्हें साइकिलों की टोली बनाकर निकलना ही सुविधाजनक होता है। साइकिलों की दो-तीन-चार की टोली ही पर्याप्त है। एक भार-वाहक रिक्शा भी साथ में होना चाहिए, जिसमें बिस्तर, कपड़े, भोजन बनाने के साधन, वाद्ययंत्र आदि को सुविधापूर्वक ले जाया जा सके। साइकिलों में लोग कैरियर पर बहुत सीमित सामान ही लाद सकते हैं। रिक्शे को टोली वाले बारी-बारी से लेकर चल सकते हैं, अथवा कोई ऐसा साथी तैयार कर लें जो रिक्शा चलाने,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आगे जाकर सूचना देने, भोजन का प्रबंध करने में अपनी हेठी अनुभव न करे। छोटा या बड़ा लाउडस्पीकर, टेपरिकार्डर हर हालत में साथ रहना चाहिए। स्लाइड प्रोजेक्टर भी ऐसा ही सस्ता साधन है, जो रंगीन प्रकाश चित्र दिखाकर किसी गली मुहल्ले की भीड़ इकट्ठी कर सकता है और प्रवास के साथ धर्म प्रचार का दुहरा उद्देश्य एक साथ पूरा कर सकता है।

यों झोला पुस्तकालय चलाना, ज्ञानरथ धकेलना, घरों में स्लाइड प्रोजेक्टर दिखाना, आदर्शवाक्य लिखना, स्टीकर्स लगाना, प्रचार उपकरण पेटी से छोटी-छोटी गोष्ठियाँ नियोजित करना, प्रभातफेरी स्तर का अलख जगाना, साप्ताहिक सत्संग के लिए दौड़धूप करना यह सब भी प्रकारांतर से पदयात्रा, तीर्थयात्रा की ही आवश्यकता पूरी करते हैं, पर साइकिल टोली यात्रा का जो प्रभाव-परिणाम देखने को मिलता है, उसकी बात तो दूसरी ही है।

तीर्थयात्रा के पुण्य से प्रभावित होकर कुछ करने की बात सोचने वाले उसमें उपयोगिता का समावेश नहीं कर पाते। वे नर्मदा परिक्रमा, गोदावरी परिक्रमा, गंगा परिक्रमा, किसी तीर्थ या क्षेत्र की परिक्रमा कर लेने भर से भी मन को संतुष्ट कर लेते हैं। महिलाएँ घरों के भीतर तुलसी के थाँवले तथा घर से बाहर पीपल, वट, आँवला आदि वृक्षों की परिक्रमा कर लेती हैं और कितनी बार भ्रमण हुए इसकी गणना के लिए सूत का कच्चा धागा निर्धारित केंद्र के आस-पास लपेटती जाती हैं। इन चिह्न पूजाओं को देखकर अभी भी यह अनुमान लगाया जा सकता है कि उस महान परंपरा की स्मृति तो किसी न किसी रूप में लोग अपनाए हुए ही हैं।

श्रावण या फागुन के महीनों में गंगाजी की काँवर कंधे पर रखकर लोग ले जाते हैं और समीपवर्ती किसी शिवालय में उसे चढ़ाते हैं। काँवर पदयात्रा अभी भी देहाती क्षेत्रों में किया जाना प्रचलित है। जो लोग इस प्रयोजन के लिए निकलते हैं, वे मिल-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जुलकर धार्मिक गीत ऊँचे स्वर से गाते चलते हैं, ताकि जो भी उस गायन को सुने वे कुछ प्रेरणा प्राप्त करें। जुलूसों में भी सहगान-कोरस गाए जाते हैं। यह चिह्न पूजा बताती है कि केवल धर्म प्रचारक ही नहीं, तीर्थयात्रा का उपक्रम हर स्तर के लोग किसी न किसी रूप में क्रियान्वित करने के लिए लालायित रहते हैं।

पापों के प्रायश्चित के लिए एक बहु प्रचलित माध्यम तीर्थयात्रा की मान्यता अभी भी है। साधु-ब्राह्मणों के लिए निर्धारित क्रियाकृत्यों में एक तीर्थयात्रा भी है। वे चारों धाम, उत्तराखंड यात्रा आदि पर निकलते हैं। अन्यथा इतना तो करते ही हैं कि समीपवर्ती किसी पर्व पर मेलों में सम्मिलित होकर उस तरह का मन बनाते हैं। कुंभ आदि के बड़े मेलों एवं सोमवती अमावस्या, ग्रहण आदि के अवसर पर समीपवर्ती नदियों-सरोवरों में नहाने जाते हैं। वहाँ अच्छा-खासा मेला लग जाता है।

प्राचीनकाल के ऋषि-मुनियों की एक प्रशिक्षण पद्धति यह भी थी कि वे अपने शिष्यों की मंडली साथ लेकर तीर्थयात्रा पर निकलते थे और उपयुक्त स्थानों पर विराम करते हुए अध्ययन-अध्यापन का क्रम चलाते रहते थे। इससे उस ऋषि मंडली को अनेक क्षेत्रों के साथ संपर्क साधने, अनुभव बटोरने एवं स्वास्थ्य संवर्द्धन के बहुमुखी लाभ मिलते थे। पदयात्रा स्वास्थ्य संवर्द्धन का एक अति सरल और महत्त्वपूर्ण माध्यम माना गया है। उन दिनों तीर्थयात्रियों को यह लाभ अनायास ही मिल जाता था। अभी भी लोग पर्यटन-परिभ्रमण के लिए निकलते हैं। छुट्टी के दिनों में छात्रों, किसानों एवं दूसरे लोगों को पर्यटन-परिभ्रमण के लिए विशेष सुविधाएँ मिलती रहती हैं। एक प्रकार से पर्यटन एक उद्योग भी बन गया है, जिसमें अनेक श्रमिकों, व्यापारियों एवं वाहनों आदि को कुछ कमाई कर लेने का अवसर मिलता है। यह सब प्रयोजन प्राचीनकाल की उस तीर्थ परंपरा का ही स्मरण

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दिलाते हैं, जिससे अनेक को अनेक प्रकार के प्रत्यक्ष एवं परोक्ष लाभ उठाते रहने का अवसर मिलता था।

इक्कीसवीं सदी की युगांतरीय चेतना का संदेश सुनाने एवं वातावरण बनाने, उत्साह उभारने के लिए उसी प्राचीन परंपरा को अब नए ढंग से नए कार्यक्रम के साथ प्रयुक्त करने की योजना बनाई गई हैं, जिसे अपनाकर प्रचारकों और विचारकों ने यहाँ के जनसमुदाय एवं वातावरण को उच्चस्तरीय बनाने में असाधारण सफलता अर्जित की है। उसे पुनर्जीवित करके उद्देश्यमय तथा सार्थक बनाने का ठीक यही समय है।

साइकिल टोलियों का प्रवास कार्यक्रम अपने चुने हुए क्षेत्र में किया जाए, ताकि सर्वथा अजनबी क्षेत्र के साथ संपर्क साधने में यात्रा संबंधी तथा लोगों का सहयोग पाने के संदर्भ में असाधारण कठिनाई का सामना न करना पड़े। उचित निर्धारण में अपेक्षाकृत कम कठिनाइयों का सामना करने की संभावना रहती है।

कभी प्रचलन यह भी रहा है कि देवालयों, धर्मशालाओं का निर्माण विशालकाय धर्म प्रचार केंद्रों के रूप में ही किया जाता था। वहाँ दान-दक्षिणा के रूप में खाद्य पदार्थों आदि का भी संचय रहता था, ताकि प्रचारकों को कम से कम असुविधाओं का सामना करना पड़े। तब धर्मकेंद्र और तीर्थयात्रा प्रयोजन दोनों एक-दूसरे के साथ अत्यंत सघनतापूर्वक जुड़े हुए थे। अब वह समय न जाने कब आएगा? इसकी प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। अब तो सिर्फ चिह्न पूजा की मनोरंजन प्रक्रिया ही सर्वत्र हावी है, परमार्थ किसी को सूझता ही नहीं। देवालयों में मनोकामना पूर्ण करने के लिए जाना या सस्ती वाहवाही लूटने के उद्देश्य से धर्म स्थानों का निर्माण करवाना, बस यही सब होते देखा जा रहा है।

अब नए सिरे से ऐसे नए धर्म-स्थानों को बनाने की आवश्यकता अनुभव की जा रही है, जो तीर्थयात्रा आंदोलन के साथ सघन रूप से जुड़े हुए रहें। जहाँ धर्मप्रचारकों को ठहरने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

की, भोजन की और लोगों को एकत्रित कर लेने की तीनों ही सुविधाएँ उपलब्ध रहें।

अगले दिन हर गाँव-कसबों को ऐसे ही धर्म-संस्थानों की आवश्यकता बड़ी संख्या में पड़ेगी। भले ही वे आर्थिक असुविधा की स्थिति में झोंपड़ी, खपैरल, टिनशेड, चौपाल, सघन वृक्ष के उद्यान जैसे ही आच्छादनों के सहारे बना लिए जाएँ। अपने तीर्थयात्री अब वह प्रयत्न भी करेंगे कि जहाँ ठहरें, वहाँ किसी न किसी रूप में एक प्रबल प्राण वाले तीर्थ आच्छादनों की स्थापना करें, भले ही उनके कलेवर सस्ते साधनों से बने हुए ही क्यों न हों!

एक प्राचीन परंपरा यह भी थी कि घर से एक-एक रोटी संग्रह करके तीर्थयात्रियों की भोजन व्यवस्था जुटा ली जाती थी। किसी पर अधिक भार न पड़ता था। बनाने-पकाने का झंझट भी नहीं रहता था और देने वाला यह अनुभव करता था कि उसने भारतीय धर्म में सर्वोत्तम स्तर के माने जाने वाले कार्य में सहयोग दिया। अब से जहाँ संभव होगा, वहाँ शांतिकुंज की साइकिल यात्राएँ उस परंपरा को पुनर्जीवित करने का प्रयत्न करेंगी। जहाँ संभव न होगा, वहाँ मंडली के साथ रहने वाले भारवाहक रिक्शों में वे सभी साधन लदे रहेंगे,जो यात्रा अवधि में भोजन, वस्त्र, प्रचार, उपकरण आदि के रूप में आवश्यक होते हैं।

जहाँ भी प्रज्ञा केंद्र हैं, छोटे-बड़े संगठन बन चुके हैं, वहाँ समय-समय पर तीर्थयात्रा निकालने का प्रयत्न चलना चाहिए। साइकिल, रिक्शा आदि उपकरण एक बार पूरी तरह संग्रह कर लिए जाएँ, तो टोलियों में जाने वाले ढपलियों को बजाते हुए नए मार्ग से जाने और नए मार्ग से लौटने का उपक्रम बनाएँ और प्रबंध ऐसा करें कि तीर्थ-प्रक्रिया वर्षा को छोड़कर अन्य महीनों में बराबर चलती रहे। जहाँ इतना प्रबंध न हो रहा हो, वहाँ अपनी व अपने पड़ोसी की साइकिल माँगकर वर्ष में एक से दो बार तो टोलियाँ निकाल ही सकते हैं। इसके लिए फरवरी से जून तक का और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सितंबर से दिसंबर तक का समय भी ऋतु की दृष्टि से अनुकूल रहता है। देश का हर गाँव तीर्थ बने, हर क्षेत्र में जीवंत युगांतरीय चेतना उभरे, इसके लिए मनीषियों को गाँव-गाँव पहुँचने और जन-जन को ऐसे विचारशील-प्रतिभाशाली लोगों के संपर्क में आने का अवसर मिले, तो समझना चाहिए कि नवयुग के अवतरण की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया का सूत्र संचालन बन पड़ा।

जहाँ कोई बड़ी तैयारी नहीं है, वहाँ पूर्व योजना बनाने तथा इस संबंध में अब तक प्रशिक्षण प्राप्त करने का अवसर नहीं मिला है, वहाँ पूर्व कथित उपाय यह है कि अपने यहाँ से हरिद्वार चल पड़ने की योजना बनाई जाए। रास्ते में वाक्य-लेखन, दीपयज्ञ, सहगान कीर्तन, प्रवचन, साहित्य विस्तार, स्टीकर लगाने आदि कार्य करते हुए शांतिकुंज पहुँचा जाए। वहाँ दो-चार दिन विश्राम एवं नए प्रशिक्षण का लाभ प्राप्त करते हुए दूसरे रास्ता से घर वापस लौट जाया जाए, ताकि जाने में अलग और लौटने में अलग गाँवों से संपर्क सधे।

इसके अतिरिक्त यह भी हो सकता है कि अपने इलाके की एक परिधि बनाकर उसके हर गाँव के साथ संपर्क बनाने का काम हाथ में लिया जाए और निर्धारित परिक्रमा पूरी की जाए। इमारतों, मंदिरों, जलाशयों तक तीर्थयात्रा को सीमित न करते हुए उस क्षेत्र को ही एक जीवंत तीर्थ मान लिया जाए और उसकी अभ्यर्थना नवचेतना संचार द्वारा की जाए।

अगले दिनों जनशक्ति ही समस्त समस्याओं का समाधान करेगी। राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, पारिवारिक उत्थान एवं अनीति उन्मूलन, सत्प्रवृत्ति संवर्द्धन जैसे कार्यक्रमों में जो लोग निरत होंगे उन्हीं के हाथ सुदृढ़ और सुनिश्चित नेतृत्व अनायास ही आ पहुँचेगा। सेवा के बदले श्रद्धा उपलब्ध करने वाले ही संसार का नेतृत्व करते और महामानव बनते रहे हैं। वातावरण बदलने में भी उन्हीं को सराहनीय श्रेय मिला है। इस साधना को संपन्न करने वाले

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

स्वयं लाभान्वित होंगे और अपने संपर्क-क्षेत्र को भी लाभान्वित करेंगे। इसलिए नवयुग के आगमन की पुण्य वेला में तीर्थयात्रा के रूप में युग चेतना का अभिनव संचार किया जा रहा है।

इस संदर्भ में शांतिकुंज की अपनी योजना है। इसके लिए बड़ी संख्या में भाषण-वादन, प्रचार उपकरण आदि संग्रह कर लिए गए हैं। शांतिकुंज के प्रामाणिक और प्रशिक्षित कार्यकर्त्ता अपनी-अपनी टोलियाँ लेकर क्षेत्रों में भेजे जाते रहते हैं। यात्रियों को कहाँ-क्या करना चाहिए, इस प्रकार का प्रशिक्षण भी मिल जाता है और सुविधा साधन भी जुट जाते हैं। कार्य विस्तार के साथ यह संख्या लाखों तक पहुँच सकती है और समूचे विश्व को अपना कार्यक्षेत्र बना सकती है।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सृजनशिल्पियों का समर्थ शिक्षण

शिक्षा के नाम पर साक्षरता से लेकर सामान्य काम-काज में आने वाली जानकारियों का प्रशिक्षण तो वर्तमान स्कूल-कॉलेजों में भी होता है। वर्तमान शिक्षापद्धति को 'उदरपूर्णा' भी नाम दिया जाता है। उस आधार पर नौकरी से लेकर अन्य अनेक प्रकार के व्यवसायों की योग्यता प्राप्त होती है। उस आधार पर लोग पैसा और प्रशिक्षण भी प्राप्त कर लेते हैं, पर व्यक्तित्व का विकास-परिष्कार जो इस प्रस्तुत शिक्षा परिधि से आगे की बात है, सहज उपलब्ध करने की कोई व्यवस्था कहीं दीख नहीं पड़ती।

प्राचीनकाल में व्यक्तित्व के विकास-परिष्कार को ही 'विद्या' कहा जाता था। उसी की महिमा-महत्ता ''विद्यायाऽमृतमश्नुते'' जैसी सूक्तियों में प्रकट की गई थी। उदरपूर्ति में काम आने वाली शिक्षा तो किसी भी तदविषयक जानकार व्यक्ति या केंद्र से उपलब्ध की जा सकती है किंतु विद्या की प्राप्ति के लिए प्रशिक्षक का स्तर ही नहीं, प्रशिक्षण केंद्र का वातावरण भी उच्चस्तरीय होना चाहिए। प्रशिक्षण का पाठ्यक्रम भी ऐसा होना चाहिए जो मान्य जानकारियाँ ही उपलब्ध न कराए, वरन अंतराल के उन मर्मस्थलों को विकसित करे, जहाँ व्यक्तित्व उद्‌भव का मूल स्रोत सन्निहित है।

उस स्तर की विद्या की उपलब्धि जहाँ से होती थी, उन केंद्रों को गुरुकुल, आरण्यक, आश्रम, तीर्थ आदि के नाम से जाना जाता था। ऐसा प्रबंध जुटा सकना हर किसी के बस में नहीं होता। उन्हें मूर्द्धन्य, मनीषा के धनी-ऋषि स्तर के अध्यापक ही विनिर्मित-संचालित करते थे। इसलिए जहाँ-तहाँ पाए जाने वाले उन केंद्रों में स्थानीय, समीपवर्ती लोगों के अतिरिक्त सुदूर क्षेत्रों के, संसार भर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

के विद्यार्थी आकर्षित होकर एकत्रित होते थे। उसी प्रकार की बड़ी व्यवस्था को विश्वविद्यालय के नाम से जाना जाता था। नालंदा और तक्षशिला विश्वविद्यालय ऐसी ही भूमिका निभाते थे। बौद्ध विहारों और अन्यान्य समर्थ तीर्थों में भी ऐसी ही व्यवस्था थी। उन्हीं खदानों से बहुमूल्य नररत्न विनिर्मित होते थे। महामानव ढालने की टकसाल भी उन्हीं को कहा जाता था। इन्हीं केंद्रों का महान कर्तृत्व था जिसने संसारव्यापी अनाचार से जूझने और सत्प्रवृत्तियों को विश्वव्यापी बनाने में असाधारण सफलता पाई। इन्हीं गुरुकुलों, आरण्यकों से प्राप्त एवं संचित पुरुषार्थ फलित होकर ऐसा वातावरण विनिर्मित करता था, जिसे अब भी सतयुग के रूप में स्मरण किया जाता है। उन दिनों की सुविकसित प्रतिभाओं को देवमानव नाम दिया जाता था। उनकी बहुलता के कारण ही यह भारत भूमि 'स्वर्गादपि गरीयसी' बनी थी। विश्व शांति और सर्वतोमुखी प्रगति का श्रेय इन्हीं महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों को दिया जाता था। इन निर्माणों को धरती पर स्वर्ग उतारने वाले आधार कहकर, उन्हें असाधारण श्रेय दिया जाता था।

इन दिनों पुरातन महानता की विधि व्यवस्था का प्रतिरूप कहीं दिखाई नहीं पड़ता। शिष्यों की कमी नहीं पर विद्यालयों का महान उद्देश्य पूरा कर सकने वाले केंद्र कहीं खोजने पर भी नहीं मिलते। कोई समय था जब इस महान परंपरा के पुनर्जीवन की महान आवश्यकता समझी गई थी और कई महामानवों ने अपने ढंग से ऐसे विद्यालयों का नवनिर्माण करने के लिए अपनी-अपनी क्षमता को अपने ढंग से नियोजित किया था।

महामना मालवीय जी द्वारा स्थापित हिंदू विश्वविद्यालय, शिवप्रसाद गुप्त द्वारा स्थापित काशी विद्यापीठ, योगी अरविंद द्वारा स्थापित कलकत्ते का नेशनल कॉलेज, स्वामी श्रद्धानंद का गुरुकुल कांगड़ी, राजा महेंद्रप्रताप का प्रेम महाविद्यालय, टैगोर का शांति निकेतन आदि कुछ ही स्थापनाएँ अभीष्ट उद्देश्य की पूर्ति के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लिए बन पड़ीं। पर यह नहीं कहा जा सकता कि उनमें से कितनी प्रतिभाएँ उभरीं और वे तंत्र किस सीमा तक उद्देश्य की पूर्ति कर सके। महात्मा गांधी, योगी अरविंद, विनोबा आदि के अपने निजी संपर्क-प्रयास इसी प्रयोजन के लिए चले और उनके किसी हद तक प्रभाव-परिणाम भी निकले। इनमें वर्तमान में गांधी के सत्याग्रही और अतीत में बुद्ध के परिव्राजक विशेष रूप से प्रभावशाली सिद्ध हुए जिन्होंने प्रतिभाएँ भी निखारीं और ऐसी योजनाएँ भी बनाईं जिनसे सामयिक समस्याओं के कारगर समाधान भी निकले।

इसी शृंखला में एक अभिनव कड़ी शांतिकुंज हरिद्वार की जुड़ती है। वहाँ वातावरण, प्रशिक्षण एवं अध्यात्म साधना उपक्रम की तीनों व्यवस्था जुटाते हुए ऐसा प्रबंध किया गया है कि प्राचीन विश्वविद्यालयों की तरह सभी शिक्षार्थियों को अमीर-गरीब की भेदभावना से मुक्त वातावरण में शिक्षा दी जा सके और उन्हें सभी अनिवार्य सुविधाओं को प्राप्त करने का अवसर मिल सके। सभी छात्र निवास, भोजन, प्रशिक्षण आदि की सुविधाएँ निःशुल्क प्राप्त करते हैं। अन्यथा मूल्य चुकाने की शर्त रहने पर मात्र अमीरों को ही उपयुक्त विद्या लाभ मिल पाता और निर्धनों को आत्मपरिष्कार एवं परमार्थ प्रयोजनों के लिए कुछ कर सकने से सर्वथा वंचित ही रहना पड़ता। उपर्युक्त साधनों के अभाव में ऐसे समर्थ विद्यालय हर कहीं स्थापित भी तो नहीं किए जा सकते हैं। एक प्रकार से इसे बहुमुखी एवं समग्र विद्यारण्यक या मल्टीवर्सिटी कहा जा सकता है।

कहा जा चुका है कि युग परिवर्तन की प्रक्रिया के पीछे पूँजी, प्रतिभा, संगठन आदि कोई प्रत्यक्ष दीख पड़ने वाली भौतिक शक्ति काम नहीं कर रही है। इतनी बड़ी योजना जिसमें किसी देश और क्षेत्र का सुधार-परिवर्तन नहीं, वरन समूचे विश्व की चेतन और अचेतन स्तर की ऐसी असंख्य समस्याएँ जुड़ी हुई हैं कि उन्हें प्रभावित करना, बदलना किसी भौतिक शक्ति का काम नहीं है,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उसकी योजना और व्यवस्था बनाने में एकमात्र दैवी शक्ति ही सफल हो सकती है, उसी के द्वारा समूचा नवनिर्माण से संबंधित ताना-बाना बुना जा सकता है। उसी शक्ति ने उद्गम-उद्भव केंद्र के रूप में शांतिकुंज का चयन किया है। चंबल, नर्मदा, गंगा, यमुना जैसी विशाल नदियों के उद्गम छोटे-छोटे हैं, पर आगे बढ़ने पर वे आश्चर्यजनक विस्तार पकड़ गए हैं। शांतिकुंज को भी गोमुख की तरह एक छोटा झरना कह सकते हैं, जिसके साथ गौरीकुंड या नियाग्राप्रपात जैसी सुविस्तृत संभावनाएँ जुड़ी हुई हैं।

गंगा की गोद, हिमालय की छाया, सप्तऋषियों की तपोभूमि दिव्य वातावरण, अखण्ड दीप प्रज्वलन, नित्य यज्ञ, युगसंधि महापुरश्चरण की आधारशिला के साथ-साथ यहाँ अनायास ही ऐसा शिक्षण तंत्र बन गया है, जिसे चंदनवन, नंदनवन की उपमा दी जा सकती है और कहा जा सकता है कि उसमें प्रवेश करने वाला जब लौटता है, तो उसकी स्थिति ऐसी कायाकल्प जैसी हो जाती है, जिसकी तुलना वयोवृद्ध च्यवन का अश्विनी कुमारों के अनुग्रह से तरुण हो जाने से की जा सकती है।

शांतिकुंज की अपनी अनेक विशेषताएँ हैं, पर उनमें से प्रमुखता इसे दी जाती है कि उसने नालंदा, तक्षशिला के समकक्ष बनने का प्रयत्न किया है। एक लाख प्रज्ञा केंद्र और एक करोड़ सृजनशिल्पी विनर्मित करने और उन्हें युग देवता के चरणों में भावभरी श्रद्धांजलि के रूप में प्रस्तुत करने का ऐसा संकल्प किया है, जिसके साकार एवं सार्थक होने के संबंध में आशंका नहीं की जा सकती है। यहाँ अपने ढंग की ऐसी शिक्षापद्धति चलती है, जिसमें पाठ्यक्रम ही पूरे नहीं कराए जाते, वरन साधना एवं प्रेरणा के उभयपक्षीय प्रयत्नों से सामान्य को असामान्य बना देने का टकसाल के सिक्कों और सीप के मोतियों की तरह प्रयत्न किया जाता है।

लक्ष्य को साध लेने के लिए यहाँ पर विविध क्रिया-कलापों का संचालन होता रहता है जिनमें से सर्वप्रमुख है सृजनशिल्पियों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

का योग्य एवं समर्थ प्रशिक्षण। आश्रम में स्थान की कमी और सम्मिलित होने वाले भागीदारों की बहुलता को देखते हुए पाँच-पाँच दिन के छोटे-छोटे शिक्षण-शिविर चलाकर किसी प्रकार समाधान खोजा गया है। इतने पर भी यह गुंजाइश रखी जाती है कि जिनको अधिक देर टिकाना आवश्यक है उन्हें एक महीने तक के लिए रोक लिया जाए। सीखना और सिखाना वही है, जिनसे भागीरथी वरिष्ठता अर्जित की जा सके। हनुमान, अंगद जैसा धर्मयुग निभाया जा सके।

प्रेरणाएँ-परामर्श, विचार-विनिमय के, समाधान के आधार पर उपलब्ध कराई जाती हैं। इसके लिए कोई निर्धारित पाठ्यक्रम नहीं है। व्यक्ति विशेष की आवश्यकता के अनुसार चिंतन को इतना बदल देने का प्रयत्न किया जाता है कि उस आधार पर सामान्य को असामान्य और व्यक्तित्व को दिव्य स्तर का बनाया जा सके। यह प्रयोग इतना सफल हुआ है कि मिशन के कार्यकर्त्ता देश-विदेश के कोने-कोने में छाए देखे जा सकते हैं।

इसके साथ ही साधना की ऐसी प्रक्रिया भी जुड़ी हुई हैं, जिसे युग-साधना या सामयिक तपश्चर्या कहा जा सकता है। नित्य गायत्री जप, उदित होते सविता का स्वर्णिम ध्यान, नित्य यज्ञ, अखण्ड दीप का सान्निध्य, दिव्यानंद की अवधारणा, आत्मदेव की साधना, सहगान कीर्तन जैसे अनेक प्रयोग ऐसे हैं, जो सम्मिलित रूप से युग-साधना की आवश्यकता पूरी करते हैं। तपाकर खरा सोना बनाने में बहुत हद तक सफल होते हैं। सूर्यतापी गंगाजल से बना हुआ हविष्यान्न यहाँ का भोजन प्रसाद रूप है। आश्रम की परिधि में पाँच दिनों तक उसी प्रकार बिना दौड़-धूप के एकनिष्ठ रहना पड़ता है जैसा कि माता के गर्भ में नियत अवधि तक भ्रूण पकता है। संचित कुसंस्कारों के प्रायश्चित-परिमार्जन के रूप में जो कुछ करना पड़ता है, उसे सामर्थ्य अनुसार नवसृजन की लोकसेवा में निरत रहने के रूप में जाना जा सकता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सोचा यह गया है कि जिस प्रकार कभी हर राजपूत के घर से एक सैनिक, हर ब्राह्मण के घर से एक परिव्राजक, हर लोकसेवी परंपरा के परिवार से एक समर्पित शिष्य निकला करता था, उसी प्रकार अब हर सुसंस्कारी परिवार से एक सृजनशिल्पी निकलने की परंपरा चल पड़े। उसके घरेलू उत्तरदायित्व परिवार के अन्य सदस्य मिल-जुलकर पूरा करें। इस निमित्त आश्रम में गृह उद्योगों की भी एक सुनिश्चित शिक्षणशाला है, जिसमें वह सिखाया जाता है, जिसके आधार पर हर परिवार स्वावलंबनपूर्वक अपना खरच चला सके और एक व्यक्ति की आर्थिक जिम्मेदारियाँ अपने कंधों पर वहन कर सके।

मिशन दिन-दिन मत्स्यावतार की तरह अपना कलेवर निरंतर बढ़ाता चला जाता है। इसलिए संपर्क परिकर के सदस्यों का आश्रम में निरंतर आते-जाते रहना स्वाभाविक है। उनके ठहरने और भोजन का प्रबंध भी असाधारण रूप से अधिकाधिक बढ़ाना पड़ रहा है। इसलिए पिछले दिनों वाले रसोईघर से काम नहीं चला। अब उसे आधुनिक यंत्र-उपकरणों से इस प्रकार सुसज्जित कर दिया गया है कि हर दिन हजारों का ठहरना और भोजन पाना कठिन न रहे। आश्रम में स्थायी रूप से रहने वाले लगभग पाँच सौ कार्यकर्त्ता हैं। मिल-जुलकर श्रमदान से उन सब कार्यों को सेवा-साधना के आधार पर पूरा कर लेते हैं, जिनके लिए यदि कर्मचारी रखने पड़ते, तो उनका व्यय भार असंभव हो जाता, यहाँ की गरिमा तो गिरती ही।

शांतिकुंज की और भी कई अद्‌भुत विशेषताएँ हैं। जड़ी-बूटी उद्यान और अनुसंधान के सहारे आयुर्वेद का पुनर्जीवन तथा ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान द्वारा मनोविकारों का निष्कासन और प्रतिभा-परिवर्द्धन के अदृश्य स्त्रोतों का रहस्योद्‌घाटन-ये दोनों ही प्रयोग ऐसे हैं, जिनके सहारे अभीष्ट शारीरिक-मानसिक परिष्कार में असाधारण सहायता मिलती है। इस केंद्र में संचालित ये दोनों तंत्र जैसी सफलता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अर्जित कर रहे हैं, उसे देखने के लिए देश के कोने-कोने से अगणित मनुष्य यहाँ आते हैं और हृदयंगम करते हैं कि अध्यात्म आधार को लेकर व्यक्ति का सर्वतोमुखी परिष्कार सचमुच बन पड़ सकता है।

इक्कीसवीं सदी उज्ज्वल भविष्य के अनेक पक्षों पर प्रकाश डालने वाला सर्वसुलभ साहित्य भी इसी आश्रम में छपता रहता है, जिसके लिए एक छोटा प्रेस लगा है। इसी से ही प्रचार साहित्य छपता रहता है, जो श्रमदान की सेवा साधना जुड़ जाने के कारण सस्ता भी पड़ता है और प्रचार-प्रयोजन में सहायक भी सिद्ध होता है।

नित्य का सांस्कृतिक कार्यक्रम, प्रेरणा-स्फूर्ति भरा प्रवचन, ऑडियो टेप, वीडियो स्तर के कैसट आदि मशीन उपकरणों की एक वैज्ञानिक कक्षा अलग से चलती रहती है, जिसमें यांत्रिक प्रचार-प्रक्रिया की आवश्यकता पूरी होती रहती है। इन्हें दर्शक देखते और शिक्षार्थी सीखते हैं।

पत्राचार विभाग द्वारा व्यापक संख्या में सृजनशिल्पियों का मार्गदर्शन चलता रहता है। इसके लिए आश्रम में ही एक पोस्ट ऑफिस भी है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सहस्रकुण्डी महायज्ञों का देशव्यापी सरंजाम

शासन व्यवस्था संसार भर पर आच्छादित है, पर उसका क्रम खंड-खंडों में विभाजित होकर लागू होता है। दुनियाँ एक है पर उसमें देश अनेक हैं। देश में प्रांत, प्रांतों में जिले, जिलों में मण्डल बँटते हैं और उनके तदनुसार शासनाध्यक्ष एवं प्रशासक नियुक्त होकर कार्यरत होते हैं। थाने, तहसील, परगने आदि इसी विभाजन के अंतर्गत आते हैं। केंद्रीय शासन के अंतर्गत संसद, विधान सभाओं तथा अन्य वैधानिक संस्थाओं के चुनाव होते हैं। तभी विकेंद्रीकरण का तारतम्य बैठता है।

धर्मतंत्र अथवा समाज का भी इसी प्रकार विभाजन बन पड़ता है। छोटी इकाइयाँ मिलकर एक बड़ी इकाई बनती हैं। यों इन दिनों संप्रदायों और मत-मतांतरों का भी बोलबाला है और तीर्थों, धर्मकेंद्रों का विभाजन विघटन स्तर का हो गया है, फिर भी ऐसी अराजकता प्राचीनकाल में न तो थी और न भविष्य में रहेगी। राजतंत्र और धर्मतंत्र दोनों मिलकर एक समग्र लोकतंत्र का सृजन करेंगे, जिसमें शासन तंत्र, सुरक्षा, सुव्यवस्था, स्वास्थ्य, शिक्षा, संचार, मुद्रा, अर्थतंत्र आदि का संचालन करेगा, पर मानसिकता भावना, आचार संहिता, प्रथा-प्रक्रिया आदि का दायित्व धर्मतंत्र को सँभालना पड़ेगा। भौतिकता से मनुष्य को लाभान्वित करने का संरजाम शासन जुटाए और आध्यात्मिकता, नीतिनिष्ठा, समाजनिष्ठा, आदर्श, अनुशासन आदि को समुन्नत करने की जिम्मेदारी धर्मतंत्र के कंधे पर रहे। इतने पर भी आवश्यक है कि दोनों के बीच एकता भी रहे और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दोनों एक-दूसरे को परिष्कृत-व्यवस्थित करने में अपनी-अपनी भूमिका निभाएँ। समग्रता इसी आधार पर बन पड़ेगी। अगले दिनों ढाँचा ऐसा ही खड़ा करना पड़ेगा।

शासनतंत्र अपने ढंग से चल रहा है। उसकी उठक-पटक राजनीतिक पार्टियाँ करती रहती हैं। सुधार-परिवर्तन होते रहते हैं, पर दुर्भाग्य यही है कि मानसिकता, भावना और आदर्शवादी अनुशासन को सुस्थिर-समुन्नत रखने वाला धर्मतंत्र इन दिनों अन्य क्षेत्रों की तुलना में विकृतियों से अधिक भर गया है, जबकि उसके अधिक परिष्कृत, प्रभावी एवं संगठित होने की आवश्यकता है, ताकि शासन क्षेत्र में जो गड़बड़ी चले, उसे संतुलित करने में उसकी प्रभाव क्षमता का परिचय मिल सके। इसके लिए धर्मतंत्र में लोकशिक्षण की प्रक्रिया को प्रमुखता दी गई है। युगसंधि के नव निर्धारणों में इसी प्रसंग को प्रमुखतापूर्वक उभारा गया है। जन-संपर्क के, जनजागरण के अनेकानेक कार्यक्रम इसी लक्ष्य को आगे रखकर संचालित किए गए हैं।

यह घोषणा देश के, विश्व के कोने-कोने में सुनी गई है कि दस करोड़ सृजनशिल्पियों की भागीदारी नियोजित किए जाने का इतना बड़ा कार्यक्रम बना है, जिसे अभूतपूर्व, असाधारण एवं ऐतिहासिक कहा जा सकता है। अपेक्षा की गई है कि इस कार्यक्रम के आधार पर देश भर के कोने-कोने तक युग चेतना का प्रकाश पहुँचाया जाएगा। इस दिशा में कदम जमते ही विश्व भर में बिखरे भारतीय मूल के प्रवासियों और इसके बाद अनेक धर्मावलंबियों, भाषा-भाषियों, मान्यताओं वाले लोगों से उनकी अभिरुचि के साथ संगति बिठाते हुए इसी प्रयास को व्यापक बनाया जाएगा। प्रस्तुत ६०० करोड़ मनुष्यों को मानवी गरिमा की छत्रछाया में लाने की यही योजना है। शांतिकुंज से संबंधित सभी परिजन इस विशालकाय योजना को कार्यान्वित करने में इन्हीं दिनों जुट गए हैं। जो बच गए हैं उन्हें आग्रहपूर्वक इस प्रयास में सहभागी बनाने के प्रति योजनाबद्ध

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आंदोलन चलाया जा रहा है। परिजनों, पाठकों तक ही नहीं, अपरिचितों को भी इस माध्यम से एक जुट करने और प्रगति पथ पर चल पड़ने के लिए आंदोलित किया जा रहा है। सन् १९९० से शुभारंभ वर्ष माना गया है। अगले दस वर्ष इस प्रयोजन को व्यापक और परिपक्व बनाने में लगेंगे। फिर सन् २००० के आगमन के साथ इक्कीसवीं सदी का सूत्रपात हो ही जाएगा।

सन् १९९० तक का निर्धारण यह है कि जहाँ भी प्रज्ञा पीठें, प्रज्ञा मंडलियाँ, जाग्रत शक्तिपीठें विद्यमान हैं, उन सभी में एक-एक हजार दीपयज्ञों के आयोजन हों। उसमें एक मंडल के लोगों को आमंत्रित ही नहीं सम्मिलित भी किया जाए। मंडलों के गठन आवश्यक हैं। राजनीतिक क्षेत्र वाले भी तो अपने विभाजन इसी प्रकार करते हैं। धर्मतंत्र वालों के भी अपने मंडल संगठित करने चाहिए और उसके आधार पर दीपयज्ञों के समारोह होने चाहिए। उस क्षेत्र की विचारशील जनता को इनमें प्रयासपूर्वक अधिकाधिक संख्या में सम्मिलित किया जाना चाहिए।

हर मण्डल में कई-कई हजार वेदी के दीपयज्ञ हों। इसके लिए संपर्क साधने, उद्देश्य एवं महत्त्व बताने, संभावनाओं पर ध्यान केंद्रित करने का सार्थक प्रयास किया जा सके तो निश्चय ही दो-दो, तीन-तीन मील के फासले पर आयोजनों की धूम मच सकती है और उस परिधि के लाखों व्यक्ति नवयुग के, नवजीवन के आधारों को अपनाने के लिए आंदोलित हो सकते हैं।

कुछ प्रभावशाली प्रतिभाएँ यदि इन आयोजनों को संपन्न बनाने के लिए कटिबद्ध हो सकें, तो इतने भर से ही उज्ज्वल भविष्य से जुड़े हुए नवयुग आंदोलनों की तूफानी लहर पैदा हो सकती है। समर्थ प्रतिभाओं को कार्यक्षेत्र में उतारने का संदेश शांतिकुंज से सभी दिशाओं में, देश के कोने-कोने में भेजने की प्रक्रिया सुनिश्चित संभावना के साथ योजनाबद्ध रूप से आरंभ कर दी गई है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उपर्युक्त आयोजन न तो अत्यधिक श्रमसाध्य हैं और न खरचीले। इच्छाशक्ति की प्रबलता और व्यवस्थित दौड़ धूप से आयोजन में सम्मिलित होने वालों की अभीष्ट संख्या एकत्रित हो सकती है। प्रचार कार्य के लिए कई सरल मार्ग हैं। साइकिल और रिक्शों के सहारे चलने वाली तीर्थयात्रा योजना तथा ज्ञानरथों द्वारा गली-मुहल्लों, हाट-बाजारों में संदेश गुँजाया जाना कुछ अर्थ रखता है। उस आमंत्रण पर एक दिन में क्षेत्रीय जनता को सरलतापूर्वक एकत्रित किया जा सकता है। इसी संदर्भ में दो प्रचार प्रयोजन और भी प्रभावी होते हैं। इनमें एक है-स्लाइड प्रोजेक्टर जो प्रकाश चित्र दिखाते हुए अभीष्ट उद्देश्य की जानकारियाँ जन-जन तक पहुँचा सकता है। दूसरा माध्यम है-टेपरिकार्डर पेटिका, जिसमें एम्लीफायर भी है, जिसके माध्यम से घरों में अच्छा-खासा संगीत सम्मेलन हो सकता है। सुनने के लिए उस क्षेत्र के लोग सहज ही पहुँच सकते हैं। साथ ही वे यह जानकारी भी प्राप्त कर सकते हैं कि निकट भविष्य में किस निकट एवं समीपवर्ती गाँव में सहस्रकुण्डी दीपयज्ञ में सम्मिलित होने के लिए ऐसा दैवी निमंत्रण प्राप्त हो रहा है जिसे किसी को भी अस्वीकृत नहीं करना चाहिए।

संयोजकों को छाया का प्रबंध करने के लिए शामियाना, बैठने के लिए फर्श, घेराबंदी के लिए कनात जैसी आवश्यकताएँ पड़ेंगी। लाउडस्पीकर का भी प्रबंध करना होगा। प्रवचन मंच तथा पूजावेदी की व्यवस्था तखत पर एकत्र करके बनाई जा सकती है। ऐसा भी हो सकता है कि एक क्षेत्र के लिए एक सेट की व्यवस्था कर ली जाए और उसी का प्रयोग फिर समीपवर्ती सैकड़ों कार्यक्रमों में होता रहे। बड़ी संख्या में जन उपस्थिति के लिए पीने का पानी और पेशाबघरों का भी प्रबंध करना पड़ता है। सज्जा तथा सुव्यवस्था के लिए अपने ही लोगों में से कुछ को स्वयंसेवक स्तर की जिम्मेदारी सँभालने के लिए प्रशिक्षित कर दिया जाए। अगरबत्ती-दीपक लोग अपने पैसे से खरीद लें। इनकी दुकानें यज्ञशाला क्षेत्र में भी लगाई जा सकती हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

एक दिन का यह आयोजन प्रायः सवेरे से शाम तक चलेगा। इतने लंबे समय तक सम्मिलित रहने वालों के लिए एक बार का भोजन का प्रबंध बन पड़े तो ठीक है। यह मुश्किल तब पड़ेगा जब एक ही जगह पूड़ी-सब्जी जैसी खरचीली व्यवस्था बनाई जाए और पंक्तिबद्ध रूप से सबको बैठाकर खिलाया जाए। यह प्रीतिभोज शैली अपने कार्यक्रमों में अपनाए जाने की तनिक भी आवश्यकता नहीं है।

नया निर्धारण यह है कि हर घर से एक-दो रोटी और शाक-सब्जी लाने के लिए प्लास्टिक की थैलियाँ बाँट दी जाएँ और कहा जाए कि इसमें अपनी सामर्थ्यनुसार कुछ बना हुआ भोजन भी आयोजन में आने के समय साथ लेते आवें। रोटी संग्रह करने वाली थैलियों पर छपा रहे। 'स्वच्छतापूर्वक बना शाकाहारी भोजन।' इस प्रकार का भोजन सब लोग पंक्तिबद्ध होकर प्रीतिभोज की तरह खाएँ, तो उससे 'जाति, वंश सब एक समान' के आदर्श की पूर्ति होती है और जातिगत ऊँच-नीच का जो भेदभाव चल रहा है उससे निवृत्ति मिलती है।

सहभोज के संबंध में एक प्रयोग यह भी हो सकता है कि खिचड़ी या दलिया एक जगह बना लिया जाए और उसे पत्तलों में परोसकर खाया जाए।

सहगान कीर्तन से भी एकता के भाव विकसित होते हैं। साथ-साथ गायत्री मंत्र के उच्चारण में भी जहाँ एकता और समता का प्रतिपादन है, वहाँ उससे सूक्ष्म जगत का ऐसा परिष्कार भी जुड़ा है, जो नवयुग के अवतरण में सहायता करेगा।

इन आयोजनों में सम्मिलित होने वालों को कुछ उपयोगी प्रतिज्ञाएँ भी करनी चाहिए। जैसे हर साक्षर द्वारा दो निरक्षरों को साक्षर बनाया जाए। नशेबाजी छोड़ी और छुड़ाई जाए। प्रगति कार्यक्रमों में सहयोगी बनने के लिए समयदान-अंशदान का पुण्य छोटे-बड़े किसी न किसी रूप में निभाया जाए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

धर्म के ये चार चरण भी व्याख्या करने योग्य हैं और प्रतिज्ञा में सम्मिलित रखने योग्य भी–(१) समझदारी, (२) ईमानदारी, (३) जिम्मेदारी, (४) बहादुरी। पाँच नियम ऐसे हैं जिन्हें अपने प्रभाव क्षेत्र में सुविस्तृत किया जाना चाहिए–(१) श्रमशीलता, (२) शिष्टता, (३) मितव्ययता, (४) सुव्यवस्था, (५) सहकारिता। व्याख्यानों में इन सद्गुणों को अपनाने की उपस्थित जनों को प्रेरणा दी जानी चाहिए। विवाहों में दहेज–जेवर और धूम–धाम का परित्याग करने का व्रत लेना भी ऐसा है, जिसे सभी लोगों को संकल्प रूप में निभाने की प्रतिज्ञा करनी चाहिए।

दीपयज्ञ में उपस्थित जन अपने–अपने प्रभाव क्षेत्र में ऐसे ही छोटे–बड़े आयोजन करने–कराने की प्रतिज्ञा लें, तो इस प्रक्रिया का व्यापक प्रचार हो सकता है और धर्मधारणा के लिए, सेवा–साधना के लिए एक नया वातावरण विनिर्मित हो सकता है।

इस योजना से कुछेक प्रतिगामियों को छोड़कर अन्य किसी की कोई असहमति नहीं हो सकती है। एक दिन का समय निकालना और घर से कुछ खाद्य पदार्थ लेकर चलना भी इतना कुछ कठिन नहीं है, जिसके लिए कोई यदि समुचित प्रचार किया जाए, तो बड़ी संख्या में लोगों को सम्मिलित न किया जा सके। इस प्रकार एकत्रित हुए लोगों का एक परिवार–समुदाय गठित होता है, जिसकी संयुक्त शक्ति को अवांछनीयताओं से, जूझने और एकजुट होकर कोई उपयोगी कार्य संपन्न होने के निमित्त लगाया जा सकता है और उसके दूरगामी सत्परिणाम कुछ ही दिनों में सामने आ सकते हैं।

इन आयोजनों को गठित करने वाले परिजन जनसाधारण के सम्मुख एक लोकसेवी और सुधारवादी के रूप में सामने आते हैं। छवि बनती है और उस छवि का लाभ व्यक्तिगत एवं सामूहिक प्रगति के रूप में अनेक आधार लेकर सामने आ सकता है। नेतृत्व के अभिलाषी तो इन आयोजनों के सहारे अपनी मनोकामना सौम्यतापूर्वक सहज पूरी कर सकते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

समर्थ शाखा संगठनों के लिए कुछ उपकरण खरीदना और अपने तथा अन्यों के क्रिया-कलापों में उपयोग करना व्ययसाध्य है, परंतु अधिक कठिन नहीं। दीपयज्ञों के साथ धार्मिकता और पुण्य-परमार्थ के जुड़े होने के कारण खुशहाल लोगों से इतना पैसा आसानी से संग्रह किया जा सकता है, जिसके सहारे तीर्थयात्रा ज्ञानरथ, स्लाइड प्रोजेक्टर, टेपरिकार्डर पेटी, बिछावन, आच्छादन आदि को खरीद सकना सरलतापूर्वक संभव हो सके और इससे युग अवतरण के महान प्रयोजन में बड़ी सहायता मिल सकती है।

-

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

महिलाओं की महानता उभरे

इक्कीसवीं सदी को महिला शताब्दी घोषित किया गया है। इसे विश्व की आधी जनता का स्वाधीनता आंदोलन भी कह सकते हैं और नवजीवन स्तर का पुनरुत्थान भी। नारी के रूप में जीवनयापन कर रही आधी जनसंख्या को भविष्य में भी गई-गुजरी स्थिति में पड़ा रहने नहीं दिया जा सकता, अन्यथा अर्धांग पक्षाघात पीड़ित की तरह अपंग स्थिति में रहने वाला यह समुदाय स्वयं तो पिछड़ी, परावलंबी स्थिति में रहेगा ही, समर्थ पक्ष के ऊपर भी गले का पत्थर बनकर लटकेगा और प्रगति का मार्ग अवरुद्ध ही बना रहेगा। एक पहिये की गाड़ी किस प्रकार आगे बढ़ सकेगी? भगवान ने नर और नारी को एक सिक्के के दो पहलू के रूप में बनाया है। दोनों की समता तो अभीष्ट है ही, साथ ही दोनों को समान रूप से शिक्षित, समर्थ, स्वावलंबी, कुशल एवं प्रगतिशील भी होना चाहिए। यह हो भी रहा है। संसार भर में एक नई लहर चल पड़ी है, जो हर किसी को मानवीयता से वंचित न रहने के लिए दैवी प्रेरणा की तरह उकसा रही है। तदनुसार वातावरण बना रही है और ऐसे साधन जुटा रही है, ताकि भविष्य में दोनों परस्पर पूरक इकाइयों में से कोई भी किसी की तुलना में किसी भी दृष्टि से दीन-दुर्बल होकर न रहे।

सहायकों की आवश्यकता सदा रही है और अब भी है, किंतु इसके लिए उत्साह और साहस स्वयं उठ खड़े होने का ही रहे। बच्चा स्वयं उठने और चलने का प्रयत्न न करे, तो अभिभावक ही जन्म भर उसे गोदी में लिए कहाँ फिरेंगे? स्वावलंबन भी भाग्योदय का एक समर्थ पक्ष है।

लंबे समय से नारी की अगणित क्षमताओं और विशेषताओं का शोषण नर द्वारा होता रहा है। समय आ गया है कि अब उस अनाचार का पश्चाताप-प्रायश्चित करने के लिए नए सिरे से नए

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रयत्न किए जाएँ और जो अपहरण हुआ है, उसको पूर्ति करने के लिए समय रहते भावपूर्ण प्रयास किए जाएँ, अन्यथा अब तक हुई क्षति आगे और भी बढ़ेगी और ऐसा संकट खड़ा करेगी जिससे दोनों पक्षों को अपार हानि सहनी पड़े।

पुरुषों में से प्रत्येक के मन में वह न्यायनिष्ठा और उदारता जागनी चाहिए, जो गहरे घावों पर मरहम के रूप में सदाशयता का परिचय दे सके। अनीति को आगे भी चलाते रहने के लिए आग्रह करना और उठने की संभावनाओं को निरस्त करना जले पर नमक छिड़कने जैसा पाशविक अनाचार माना जाएगा।

नर और नारी की अनिवार्य समता का वातावरण बनाने के लिए आवश्यक है कि कन्या और पुत्र में, बेटी और वधू में अंतर करने की कुप्रथा का अब पूरी तरह अंत कर दिया जाए। दोनों की प्रगति एवं सुविधा के हर प्रसंग में समान व्यवहार, समान सम्मान का प्रचलन अपनाया जाए। शिक्षा, स्वावलंबन, दक्षता, श्रेय, सम्मान दोनों को ही समान रूप से मिलने चाहिए। परिवार का हर सदस्य इसी नीति को अपनाए और भेदभाव की अनीति, जहाँ पर भी जितने अंशों में चल रही हो, उसे समाप्त करने में अनुदारता न दिखाए।

शिक्षा मनुष्य की आरंभिक आवश्यकता है। इसे लड़कों की तरह लड़कियों को भी उपलब्ध कराने में कहीं किसी प्रकार का दुहरा मापदंड न अपनाया जाए। हर व्यक्ति को आर्थिक दृष्टि से स्वावलंबी होना चाहिए, ताकि कोई किसी पर भार बनकर न रहे, वरन एक-दूसरे की सहायता करते हुए समूचे परिवार में खुशहाली ला सके। देखा गया है कि विधवाओं एवं परित्यक्ताओं को कई छोटे बच्चे गोदी में होने की स्थिति में ससुराल अथवा पितृगृह से कारगर सहायता न मिलने पर कितनी दुर्गति भुगतनी पड़ती हैं हर भुक्तभोगी यह जानता है। ऐसी स्थिति में किसी भी लड़की को न रहना पड़ना पड़े। इसी कमजोरी के कारण नारी को हर प्रकार से दबाव भी सहने पड़ रहे हैं, क्योंकि वह दूसरों की सहायता कर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सकना तो दूर, अपने खरच के लिए भी दूसरों पर अवलंबित रहती है। कुटीर उद्योग से लेकर अध्यापन तक का कोई न कोई स्रोत उसके हाथ में विवाह से पहले ही थमा देना चाहिए, ताकि उसे आर्थिक दृष्टि से सर्वथा पराश्रित न रहना पड़े। पैतृक संपत्ति, परिवार की संपन्नता अथवा पति की कमाई जैसे माध्यमों का आड़े समय में उपयोग कर सकने का सुयोग मिलता ही रहेगा, इसका अब कोई विश्वास रह नहीं गया है। शिक्षा स्वालंबन के अतिरिक्त स्वास्थ्य, दक्षता, कुशलता, अनुभव आदि के साधन भी नारी के लिए जुटने ही चाहिए। परिस्थितियों के अनुसार हर किसी को यह प्रयत्न करना चाहिए कि कोई महिला परावलंबन के लिए सर्वथा विवश होकर अशिक्षित-अनगढ़ स्तर की न रहे, ऐसी विपत्ति में न फँसने पाए। इसके लिए जो उपाय संभव हों वे करने चाहिए।

एक दूसरा वज्रपात है-बाल विवाह। इस उतावली में लड़कियों को सुयोग्य बनाने का अवसर ही नहीं मिलता। मनोबल एवं कौशल विकसित होने की तो गुंजाइश ही नहीं रहती। कच्ची उम्र में कामक्रीड़ा का दबाव सहने से उसका शरीर और मन तो निचुड़ ही जाता है, साथ ही बच्चों का पालन कर सकने की दक्षता न रहने पर वे भी अनगढ़ स्तर के रह जाते हैं। प्रसव पीड़ा में अधिकांश महिलाओं को मौत के मुँह में जाना पड़ता है। ऑपरेशन की भयंकर व्यथा सहने की तरह की वह आपत्ति यदि जल्दी-जल्दी उन पर टूटे तो जवानी में बुढ़ापा आ धमकने, अकाल मृत्यु का ग्रास बनने, आए दिन दुर्बल और बीमार रहने की व्यथा तो उसी कारण उसके गले बँध ही जाती है। इसलिए बाल विवाह को लड़कियों का आधा मरण समझकर उस विपत्ति से उन्हें बचाया ही जाना चाहिए। पढ़ने और बढ़ने के लिए उन्हें भी उपयुक्त सुविधा और समय मिलना चाहिए। बाल विवाह इस संभावना में सबसे अधिक बाधक है।

तीसरी विपत्ति है-धूम-धाम वाली शादियाँ; लड़के वालों की ओर से दहेज और लड़की वालों की ओर से जेवर की माँग। ये

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दोनों ही प्रचलन सर्वथा मूर्खता भरे और अनीतिपूर्ण हैं। इस निमित्त होने वाले खरच में दोनों परिवार खोखले हो जाते हैं। दहेज को लेकर आएदिन झंझट होते हैं, हत्या, आत्महत्या जैसी दुर्घटनाएँ होती हैं। इसलिए शादी को नितांत सादगी के साथ घरेलू उत्सव की तरह संपन्न किया जाना चाहिए। दहेज या जेवर के स्थान पर उस रकम को एकत्रित करके कन्या के नाम फिक्स डिपाजिट के रूप में जमा कर दिया जाए, तो वह निधि बनी रहे और सुदूर भविष्य में किसी आड़े वक्त पर काम आए।

अगले दिनों नारी प्रगति की भारी संभावनाएँ सामने आ रही हैं। उन्हें प्रत्येक महत्त्वपूर्ण प्रसंग में आरक्षण मिलने जा रहा है। राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक क्षेत्र में उनकी प्रगति के लिए सरकारी और गैर-सरकारी अनेकानेक उपहार दौड़ते हुए चले आ रहे हैं। सरकार बड़े अनुदान भी दिला रही है। नए अवसर भी अनेकों बन रहे हैं। इनसे लाभ उठाने के लिए आवश्यक है कि नारी सुयोग्य और समर्थ बने, अन्यथा बिचौलिए ही उस सुविधा को हड़प लेंगे। अनेक कुरीतियाँ, मूढ़ मान्यताएँ, प्रतिगामिताएँ विषाणुओं की तरह दुर्बल शरीर पर सरलतापूर्वक चढ़ दौड़ती हैं। इन त्रासों से भी उन्हें बचाने के लिए उपाय करना चाहिए और विचारशीलों द्वारा उन्हें इतना सक्षम, समर्थ एवं सुयोग्य बनाया जाना चाहिए कि वे गुण-दोष की कसौटी पर कसकर ही किसी मान्यता, परंपरा को अपनाएँ। इसके लिए उपयुक्त अवसर मिले, यह तभी संभव है जब विवाह की अवधि अधिकाधिक बढ़ाई जाए। भारत के केरल प्रांत की महिलाओं ने तो लड़-झगड़कर महिलाओं की विवाह आयु न्यूनतम २५ वर्ष और लड़के की २८ वर्ष करवा ली है। इसी का सत्परिणाम है कि वहाँ नारियाँ प्रगति के हर पक्ष का अवसर प्राप्त कर रही हैं और परिवारों को समर्थ बना रही हैं। शिक्षा का स्तर और प्रगति भी वहाँ देश के अन्य भागों की तुलना में अधिक है। ऐसे ही प्रयत्न सर्वत्र होने चाहिए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

विवाह के उपरांत वर-कन्या को कई वर्ष का अवसर ऐसा मिलना चाहिए कि वे एक-दूसरे की योग्यता-समर्थता बढ़ाने में योगदान दे सकें। इसके लिए आवश्यक है कि विवाह के बाद कम से कम पाँच वर्ष तक वे बच्चे उत्पन्न करने का संकट न लादें। यह अवधि ससुराल वालों की ओर से समर्थता प्रदान करने के लिए नियत रहनी चाहिए। अभिभावकों ने इतने दिन उसकी योग्यता वृद्धि में योगदान दिया। विवाह के बाद कम से कम पाँच वर्ष तो ससुराल वालों को भी ऐसा ही अनुदान देना चाहिए। उस अवधि में बच्चे पैदा करने की विपत्ति से नहीं लाद देना चाहिए। बढ़ती हुई जनसंख्या इन दिनों पृथ्वी पर हर प्रकार से एक दुर्घटना की तरह संकटपूर्ण बन रही है। यह तभी टल सकती है, जब प्रजनन यदि आवश्यक हो तभी किया जाए और यह अवसर किसी नारी के जीवन में तीस वर्ष की आयु के लगभग होने पर ही आना चाहिए। देश की, विश्व की सुव्यवस्था के लिए भी इस प्रकार का प्रचलन अपनाया ही जाना चाहिए।

यह सामान्य प्रचलन की विधा हुई। नारी को अवगति से उबारकर प्रगति के पथ पर घसीट ले चलने के लिए महिला वर्ग में से भी कुशल नेतृत्व उभरना चाहिए। देश को स्वतंत्र कराने में नारी नेतृत्व की अग्रणी भूमिका रही है। कितनों ने कितने ही संकट झेले हैं और कितने विकट संघर्ष किए हैं, इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए नारी वर्ग के भावनाशील पक्ष को आगे बढ़ना चाहिए और ऐसा कुछ करना चाहिए जिससे उनकी योग्यता घर की चहारदीवारी में रसोईदारिन, धोबिन, जमादारिन, धाय, नौकरानी की तरह ही गुजार देने तक सीमित न रहे, वरन कम से कम अपने समुदाय को ऊँचा उठाने, उन्हें विवाहोपरांत के अनावश्यक बंधनों से छुड़ाने के लिए वे लग सकें।

इसके लिए वे महिलाएँ अधिक उपयुक्त हो सकती हैं, जो छोटे बच्चों की जिम्मेदारियों से मुक्त हो चुकी हैं। रिटायर्ड स्तर की अध्यापिकाएँ तथा दूसरी कार्यरत महिलाएँ घर का भार दूसरों के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कंधे पर खिसकाकर यह कर सकती हैं कि छोटी-बड़ी टोलियाँ बनाकर महिला संपर्क आंदोलन के लिए निकल पड़ें और उनमें से कितनी ही सत्प्रवृत्तियों के संवर्द्धन हेतु बढ़-चढ़कर काम करें। उनके लिए विशाल कार्यक्षेत्र खाली पड़ा है।

ऐसा भी हो सकता है कि कुछ युवतियाँ विवाह के प्रलोभन से बचकर अपनी बहुमूल्य प्रतिभा नारी उत्कर्ष के लिए लगा दें। प्रजनन के कुचक्र में फँसकर उन्हें जितना त्रास सहना पड़ता है, उसके बीसवें भाग के बराबर भी यदि साहस जुटाकर वे नारी उत्कृष्टता के लिए अपने को समर्पित कर सकें, तो वह महामानवों, वीर बलिदानियों जैसा साहस होगा। घरेलू जिम्मेदारियों से बचे रहने की स्थिति में वे विस्तृत क्षेत्र में बड़ी मात्रा में नारी कल्याण का काम कर सकती हैं। ऐसे साहस जिन्होंने अपनाए ऐसी शूरवीर महिलाओं की गाथा किसी अंश तक अपने पुराणों में और बड़े अंश में अपने समय के इतिहास में भरी पड़ी हैं। विवाह को अनिवार्य मानकर नहीं चलना चाहिए। साथी के बिना जिंदगी कैसे कटेगी? सुरक्षा कैसे मिलेगी? इस प्रकार के अपडरों से आदर्शवादी महिलाएँ सहज ही बच निकल सकती हैं। सहेलियों की सघन मित्रता भी मिल-जुलकर इस आवश्यकता को बहुत अंश में पूरी कर सकती है। एक और एक मिलकर ग्यारह तक ही सीमित नहीं हैं। नारी-नारी का सहयोग भी इसी तथ्य की भली प्रकार पुष्टि कर सकता है।

अगले दिनों नारी शताब्दी का नवनिर्माण संभव कर सकने में देश के पुरुषों का जहाँ उदार सहयोग अपेक्षित है, वहाँ यह भी आवश्यक है कि उस आंदोलन का नेतृत्व सँभालने के लिए मनस्वी महिलाएँ अग्रिम पंक्ति में आएँ। आंदोलन को पुरुषों का सहयोग तो चाहिए ही कि वे नारी को समय, साधन, सहयोग और प्रोत्साहन प्रदान करें। पर साथ ही यह उससे भी अधिक आवश्यक है कि नारी जागरण का नेतृत्व समर्थ महिलाएँ भी सँभालें। अपने देश की प्रतिगामिता नर और नारी को मिलकर काम करने की सुविधा नहीं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

देती। इसलिए आवश्यक है कि महिलाओं की अपनी छोटी-बड़ी मण्डलियाँ बनें और घर-घर में प्रवेश करें। संगठन खड़ा करें। वातावरण बनाएँ और ऐसे अनेकानेक कार्यक्रमों को चलाएँ जिससे युग संगठनों के अति महत्त्वपूर्ण नेतृत्व का श्रेय उन्हें ही हस्तांतरित हो सके।

पुरुष चाहे तो घरेलू काम-काज में महिलाओं को दिन-रात खटाते रखने की अपेक्षा ऐसा प्रबंध करें कि परिवार के सभी नर-नारी एक साथ मिल-जुलकर घर के काम सीमित समय में समेट लिया करें। गरम भोजन खाने की सनक यदि सिर पर से उतारी जा सके, तो थोड़ी देर पहले बने भोजन से काम चलाने में हर्ज नहीं है। पुरुष भी इस कार्य में किसी हद तक हाथ बँटा सकते हैं। इस प्रकार गृह कार्यों को मिल-जुलकर समेट लेने पर घर की महिलाओं को इतना समय उपलब्ध कराया जा सकता है कि उन्हें अपनी और अपने संपर्क की महिलाओं को प्रशिक्षित, सुयोग्य बनाने के कार्यक्रम में भाग लेने के लिए पर्याप्त समय मिल सके।

महिला सदी का बहुत बड़ा शुभारंभ शांतिकुंज से ही गतिशील होता है। इसलिए उसके सदस्यों और सदस्याओं को अपनी-अपनी स्थिति के अनुसार यह योजना बनानी चाहिए कि महिलाओं की स्थानीय क्रिया-प्रक्रिया किस प्रकार चले और उनकी बड़े क्षेत्र को सँभाल सकने वाली युग नेतृत्व की व्यवस्था किस आधार पर बने? इस संदर्भ में मात्र पुरुषों का ही सहयोग पर्याप्त नहीं, समर्थ महिलाओं को भी लालच, दबाव और संकीर्णता की परिधि से ऊँचा उठकर घर से बाहर निकलने की बड़ी योजना भी बनानी चाहिए, ताकि उनकी गणना महान प्रयोजन पूरा कर सकने वाली महान महिलाओं में हो सके।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

युग प्रतिभाएँ इस तरह आगे आएँ

दीपावली, दशहरा जैसे महापर्व वर्ष में एक बार आते हैं। स्वाति वर्षा साल में एक बार ही होती है। उसका लाभ जिन सीपियों को, केलों को, बाँसों को उठाना होता है, वे उन्हीं दिनों उठा लेते हैं। बाद में तो बात आई-गई हो जाती है। कन्यादान भी एक ही बार होता है। ब्रह्मकमल और संजीवनी बूटी भी वर्ष में एक बार ही फूलती है। प्रतियोगिताएँ भी निर्धारित समय पर ही होती हैं। उत्तीर्ण-अनुत्तीर्ण होने का अवसर नित्य मिलता रहे, ऐसा कहाँ होता है? राजनीतिक चुनाव पाँच वर्ष में एक बार होते हैं। यह अवसर विशेष हैं, जिन्हें महत्त्वपूर्ण माना जाता है और इन अवसरों पर चूका नहीं जाता।

हर दूरदर्शी को यह अनुभव भी करना चाहिए कि युग परिवर्तन की वर्तमान वेला ऐसी है, जिसकी पुनरावृत्ति बार-बार नहीं होगी। गांधी जी के सत्याग्रह आंदोलन में जो लोग स्वतंत्रता सेनानी के रूप में सम्मिलित हो गए उन्हें इतने दिन बीत जाने के उपरांत भी अभी तक समुचित सम्मान, पेंशन, फ्री पास आदि की सुविधा मिलती है। शासनसत्ता भी वही लोग प्रायः ४० वर्ष तक चलाते रहे। यदि समय निकल जाने पर अब कोई उत्सुक हो तो भी उस सुयोग को नहीं पा सकता। जो अवसर को पहचानने वाले साहस जुटा सके, वे ही समुचित श्रेय पा सके। अब कोई बंदर हनुमान नहीं बन सकता, किसी रीछ को जामवंत, किसी गिद्ध को जटायु बनने का अवसर नहीं मिल सकता। जब महाभारत ही नहीं होने जा रहा है, तो कोई अर्जुन, भीम किस प्रकार इतिहास के पृष्ठों पर अपना नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित करा सकेगा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कलेक्टरों का चुनाव व उनकी नियुक्ति आयोग व शासनाध्यक्षों द्वारा होती है। यह अवसर गिने-चुनों को मिलता है, सो भी दूसरों के अनुग्रह से। किंतु शासन तंत्र की तरह ही समर्थ धर्मतंत्र में सेवा क्षेत्र की यह अनोखी सुविधा है कि यदि कोई भावनाशील पुरुषार्थी अपनी उमंग और आदर्शवादी हिम्मत से काम ले, तो वह मंडलाधीश, मंडलेश्वर, मंडलीक, मंडलाधिपति आदि बन सकता है और इतना समर्थ बन सकता है कि उसका शासन जन-जन के मन पर रहे और उसकी इच्छा के बिना महत्त्वपूर्ण हलचलों के क्षेत्र में पत्ता भी न हिले। इसी स्तर के लोगों की इन दिनों सर्वत्र माँग है। उनके उभरने की आशा-अपेक्षा दसों दिशाएँ कर रही हैं। युग देवता ने उन्हीं को पुकारा है। महाकाल उन्हीं को खोजने के लिए टकटकी लगाए ढूँढ़-खोज में निरत है।

अभागे मनुष्य तो जीवन जैसी सुर-दुर्लभ संपदा को भी कीड़े-मकोड़े की तरह गँवा देते हैं। अनजानों के लिए हीरे और काँच में कोई अंतर नहीं। पर जिनके अंतराल में दिव्य प्रकाश की एक किरण भी उठती हो उनके लिए यह अलभ्य अवसर है। इतना अलभ्य जिसे गँवा देने पर जन्म-जन्मांतरों तक पछताने के अतिरिक्त और कुछ हाथ लगने वाला नहीं है। आत्मा को, परमात्मा को, विश्वात्मा को ऐसे प्रमादियों के प्रति रोष-आक्रोश सदा ही बना रहेगा। यह सुनिश्चित लाटरी खुलने जैसा, दबा खजाना हाथ लगने जैसा, स्वयंवर में जयमाला पहनने जैसा अवसर है। जिन आँखों के अंधों को पेट-प्रजनन के अतिरिक्त इस संसार में और कुछ दीख ही नहीं पड़ता, उनके प्रमाद पर कोई लानत ही भेज सकता है।

होना यह चाहिए कि बुद्धिमत्ता के दावेदार विवेकशीलों में से प्रत्येक युगसंधि के इन दस वर्षों में अथवा उससे कुछ कम समय भी युग की पुकार सुनने और उसे पूरा करने में अपनी मानसिकता और साहसिकता को खरी-खोटी सिद्ध करने के लिए, कसौटी पर कसे जाने के लिए प्रस्तुत करें। न्यूनतम एक वर्ष लगाने जैसे कुछ छोटे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कदम उठा लेने के लिए उत्साह को समेटने-सँजोने जैसा साहस तो किसी प्रकार बटोर ही लें। जितना अधिक बन पड़े उतना ही उत्तम।

इन दिनों करने योग्य काम, प्रमुखता देने योग्य एक ही है 'जनमानस का परिष्कार', 'विचार परिशोधन, मान्याताओं, भावनाओं, आकांक्षाओं को निकृष्ट प्रयोजन में निरत रहते रहने से उबारकर इस मान्यता से सहमत कर लिया जाए कि यह समय उठने-उठाने और जगने-जगाने, नवसृजन के लिए कटिबद्ध होने और दूसरों को इसी के लिए नियोजित करने के लिए प्राणपण से लगा देने के लिए है। व्यक्तित्ववानों ने अपने को बदलना आरंभ किया, तो यह निश्चित है कि वह समूचा वातावरण बदल जाएगा जिसमें रहते हुए हर कोई खिन्न-विपन्न हो रहा है। जिस घुटन में दम निकल रहा है, उसे बदलने के लिए कुछ कहने लायक साहस इन्हीं दिनों जुटाया जा सकता है।'

अपने कुछ न करने पर भी उज्ज्वल भविष्य की संभावना स्रष्टा के संकल्प निर्धारण के संकेत पर भवितव्यता बनकर साकार होकर रहेगी। पर जो सेवा-साहस अपनाकर धन्य हो सकते हैं, वे ही अपनाई गई कृपणता, निष्ठुरता और कायरता के कारण अपने दसों दिशाओं से धिक्कार बरसते रहने की व्यथा सहते रहेंगे।

जो करना है वह सरल भी है, सुखद भी और हाथों हाथ श्रेय-गौरव उपलब्ध कराने वाला भी। स्वाध्याय, सत्संग, संगठन और उल्लास-उभार के कई कार्यक्रमों की चर्चा हो चुकी है। उनमें से कोई एकाकी कुछ न कुछ कार्य भी अपना सकता है। पर यदि संगठन की क्षमता हो, मुखरता और सक्रियता अपनाते बन पड़े, तो बड़े क्षेत्र को अपने सेवा प्रयोजन के लिए चुना जा सकता है। दस-बीस गाँव का एक मण्डल निर्धारित करके उनमें बसने वालों के साथ सघन संपर्क जोड़ा जा सकता है और उन खेतों को जोतने-बोने, खाद-पानी देने, रखवाली करने में एक कर्मठ किसान की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तरह निरत रहा जा सकता है। साथ ही हीरे-मोतियों जैसी फसल से कोठे भरने की प्रतीक्षा भी की जा सकती है।

इसका समर्थ शुभारंभ अपनी निज की प्रतिभा निखारने से होना चाहिए। जिन्हें अपने से बड़ा या योग्य माना जाता है उन्हीं की बातों पर लोग ध्यान देते हैं। उन्हीं का आदेश-परामर्श मानते हैं। इसलिए जिन्हें किसी प्रकार का नेतृत्व निभाना हो, उन्हें सर्वसाधारण की अपेक्षा अधिक वरिष्ठ और अति विशिष्ट होना चाहिए। आत्म-परिष्कार की कसौटी पर कसकर इतना खरा बना लेना चाहिए कि कम से कम किसी को उँगली उठाने का अवसर न मिले। वाणी की मधुरता, व्यवहार में सभ्यजनों जैसी शिष्टता, वस्त्र-उपकरणों से लेकर साज-सज्जा तक में समुचित स्वच्छता रह सके, ऐसा अभ्यास करना चाहिए। समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी और बहादुरी के चार प्रमुख धर्माचरणों से अपने व्यक्तित्व को सँजोया जा सके, तो समझना चाहिए कि विशिष्टता और वरिष्ठता से अपने को संपन्न बना लिया गया और ऐसी स्थिति प्राप्त कर ली गई जिससे सर्वत्र प्रामाणिकता और प्रतिभा का परिचय मिले और अपनी विश्वसनीयता बढ़े। क्रिया-कलाप में वाणी की मुखरता और शरीरगत ऐसी सक्रियता हो जो चुस्त-दुरुस्त होने के लक्षण प्रकट करती रहे। स्वाध्याय एवं सत्संग प्राप्त करते रहने का अवसर अधिकाधिक लोगों को मिलता रह सके, ऐसे छोटे-बड़े कार्यों में निरत रहने के लिए परिस्थितियों के अनुरूप प्रयत्न करते ही रहना चाहिए।

उत्साह उभारने और लोक चेतना जगाने की एक नितांत सरल और अत्यधिक प्रभावशाली प्रक्रिया है-सहस्रवेदी दीपयज्ञों की योजना। यदि चुनाव में खड़े होने वालों की तरह दौड़-धूप की जा सके, तो यह आयोजन हर कहीं सरलता और सफलतापूर्वक संपन्न हो सकते हैं। एक बार का उबाल साल-छह महीने तो अपनी गरमी बनाए ही रहता है। इसलिए जिलाधीशों के समतुल्य धर्मतंत्र की जिम्मेदारी उठाने वालों को अपनी सुविधानुसार निकटवर्ती मण्डल

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

निर्धारित करना चाहिए और एक वाहन की ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए, जिससे दौड़-धूप का अधिक कार्य संपन्न हो सके। सघन जनसंपर्क सध सके और जनजागरण के, नवसृजन के अनेकानेक काम अपने ढर्रे पर, अपने बलबूते पर लुढ़कते रहने वाली गति पकड़ सकें।

अपने मण्डल के हर गाँव में एक बड़ा दीपयज्ञ आयोजन हर साल होना ही चाहिए, ताकि उसके द्वारा उभरे हुए उत्साह से सत्प्रवृत्ति संवर्द्धन और दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन के कितने ही छोटे-बड़े काम उपस्थित जनों को प्रभावित करके उनके द्वारा संकल्पपूर्वक किए जाने की प्रक्रिया चल पड़े, व्रतशीलता निभ सके।

अपने समुदाय में ऐसे अनेकों कार्य करने को पड़े हैं, जिनको गतिशील बनाने में तनिक भी विलंब नहीं होना चाहिए। शिक्षा-संवर्द्धन इनमें से प्रमुख है। नारी-शिक्षा और प्रौढ़-शिक्षा को सृजनशिल्पी विशेष रूप से हाथ में लें, क्योंकि इस ओर उपेक्षा ही बरती जा रही है। 'गरीबी दूर भगाओ' की योजना कुटीर उद्योगों को अपनाए बिना हल हो ही नहीं सकती। शारीरिक समर्थता और मानसिकता के अभिर्द्धन के लिए व्यायामशालाओं के आंदोलन को गतिशील बनाया जाना चाहिए। बाल विवाह और बहुप्रजनन की बाढ़ को तो दृढ़तापूर्वक रोका ही जाना चाहिए। 'खरचीली शादियाँ हमें दरिद्र और बेईमान बनाती हैं'- इस तथ्य को हर किसी को हृदयंगम कराया जाना चाहिए और बिना खरच तथा बिना धूम-धाम की शादियाँ कर यह कुप्रचलन समाप्त करने का प्रयास होना ही चाहिए। नशेबाजी धीमी आत्महत्या है। यदि यह तथ्य समझा और समझाया जा सके, तो बहुमुखी बरबादी पर कारगर अंकुश लग सकता है। वृक्षारोपण की प्रवृत्ति बढ़नी चाहिए। यह गतिविधि हर घर में शाकवाटिका, पुष्पवाटिका के आरोपण के रूप में तो चल ही पड़नी चाहिए। जीवन के हर क्षेत्र में प्रगतिशीलता का समावेश करने के लिए साप्ताहिक सत्संगों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

को योजनाबद्ध रूप से चलाना चाहिए। यदि दैनिक रूप में धार्मिक, सामाजिक आयोजन नहीं चल सकते, तो उन्हें कम से कम साप्ताहिक रूप में तो चलाना ही चाहिए।

युग अवतरण का योजना केंद्र यदि नई इमारत के रूप में नहीं बन सकता, तो कम से कम इतना तो हो ही सकता है कि किसी बड़ी इमारत वाले से एक कमरा माँग लिया जाए जो संगठन कार्यों के लिए प्रयुक्त होता रहे और शेष समय पर मालिक उसे अपने कार्यों में प्रयुक्त करता रहे।

कुछ उपकरण इस प्रयोजन के लिए अनिवार्य हैं-(१) ज्ञानरथ का चल देवालय (२) स्लाइड प्रोजेक्टर (३) सत्संग की प्रचार पेटी जिसमें टेप एम्पलीफायर हो (४) गाँव-गाँव परिभ्रमण करने के लिए साइकिल टोली (५) संगीत उपकरण (६) आयोजन के लिए फर्श और आच्छादन (७) दीपयज्ञों में काम आने वाले उपकरण। यह सभी साधन मिलकर दस हजार के भीतर बन सकते हैं। इतने पैसे का प्रबंध सहज ही यज्ञ के समय मिल-जुलकर चंदे के रूप में एकत्रित किया जा सकता है। जिनसे पैसा लिया है, उन्हें हिसाब समझाकर यह संतोष कराया जा सकता है कि किसी ने इन कार्यों में किसी प्रकार की हेराफेरी नहीं की है। प्रामाणिकता बनाए रखने के लिए इतनी सफाई आवश्यक है।

वर्ष में एक बार कर्मठ व्यक्तियों को शांतिकुंज पाँच दिन का एक सत्र संपन्न करने के लिए भेजना चाहिए, ताकि वे उपयुक्त प्रेरणा और प्राण चेतना साथ लेकर वापस लौटें। यह हर साल बैटरी चार्ज करा लेने, बंदूक या मोटर का वार्षिक लाइसेंस लेने के समान आवश्यक समझा जाना चाहिए।

मिशन के साथ किसी भी रूप में जुड़े हर व्यक्ति को नित्य कुछ घंटे का समयदान नवसृजन के निमित्त लगाने के लिए सहमत करना चाहिए और साथ ही कुछ पैसों का अंशदान भी निकालते रहने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करना चाहिए। ताकि उस योगदान के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सहारे आत्म निर्माण, परिवार निर्माण और समाज निर्माण के तीनों ही क्रिया-कलापों में आवश्यक पोषण देते रहने का अवसर मिल सके।

अखण्ड ज्योति पत्रिका, युग निर्माण योजना, प्रज्ञा अभियान, युग शक्ति गायत्री (गुजराती) अपने परिवार के हर शिक्षित सदस्य को पढ़नी और अशिक्षित को सुनानी चाहिए। यह अनुष्ठान प्रस्तुत महा अभियान के सूत्रसंचालक को नित्य अपने घर बुलाने और उसका एक प्रवचन नित्य सुनने के समान सशक्त प्रेरणाप्रद है। इसके लिए जो खरच करना पड़ता है, वह इतना कम है कि महीने में एक बार हलका जलपान करा देने से अधिक नहीं बैठता।

उपर्युक्त सभी काम ऐसे हैं, जिन्हें अपनाने पर कोई भी व्यक्ति प्रखर प्रतिभा के रूप में उभर सकता है और अपने को, अपने परिवार, अपने समाज और वातावरण को हर दृष्टि से कृत-कृत्य कर सकता है।

www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यह सरल है, कठिन नहीं

सर्वतोमुखी श्रेय साधना का यह सर्वश्रेष्ठ समय है। इससे चूका नहीं जाना चाहिए। जो उपयुक्त अवसर पर मुँह मोड़ते और पीठ दिखाते हैं, वे परीक्षा भवन में गायब हो जाने वालों की तरह सदा-सर्वदा पछताते ही रहते हैं। इस भूल को अनेक बार दुहराया जाता रहा है, पर जब भगवान ने सुदामा से उसकी तंदुल पोटली माँगकर बदले में टूटे छप्पर वाली सुदामापुरी को सर्वसंपन्न द्वारिकापुरी के रूप में बदलने का आमंत्रण भेजा है, तब उस स्वर्ण सौभाग्य को स्वीकार करने में आनाकानी नहीं की जानी चाहिए। पेट और प्रजनन की छोटी सी परिधि में तो कीड़े-मकोड़े भी अपना समय गुजार लेते हैं, पर जब कल्पवृक्ष के नीचे विश्राम मंच किसी ने बिछाया, तो उस पर बैठने भर का निर्वाह करने में आनाकानी क्यों करनी चाहिए?

धन दान तो फालतू पैसे वाले उपेक्षापूर्वक अपना ढिढोरा पिटवाने के लिए भी कर देते हैं, पर उच्चस्तरीय लक्ष्य पर चल पड़ना तभी बन पड़ता है, जब श्रद्धा, सद्भावना और उत्कृष्टता का उसके साथ समावेश बन पड़े। परीक्षा की इस घड़ी में जाँच-खोज हो रही है कि यदि कहीं महानता जीवित होगी, तो वह इस नवनिर्माण के पुण्य पर्व पर अपनी जागरूकता और सक्रियता का परिचय दिए बिना न रहेगी। दिनमान का अभिनंदन करने में मात्र निशाचर ही मुँह छिपाते देखे गए हैं। हमारी गणना उन भगोड़ों में नहीं होनी चाहिए जो मोरचे पर ऐसे पराक्रम का परिचय देने में अपने को असमर्थ पाते और कायरों की तरह सभी धिक्कार सहते हुए पीछे भाग खड़े होते हैं और उलटे-सीधे बहाने खोजते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गांधी और बुद्ध के आह्वान पर असंख्यों ने अपने तथाकथित आवश्यक काम छोड़कर भी उन दिनों के महान अभियान में अपनी कारगर भूमिका निभाई थी और पीढ़ियों तक के लिए यश गाथा सुरक्षित छोड़ गए थे।

लिप्सा, तृष्णा और अहंमन्यता के उन्माद पर यदि थोड़ा अंकुश लगाया जा सके, तो हर किसी के पास इतना समय, श्रम और साधन सहज बच जाता है जिसके बलबूते सराहनीय स्तर पर युगधर्म निभाते बन पड़े। जो सादा जीवन जी सकेगा, वही उच्च विचारों की अवधारणा में समर्थ हो सकेगा। अच्छा हो वासना-विलासिता की जंजीरों को कम से कम इस अवधिकाल में थोड़ा ढीला कर ही लिया जाए। भौतिक महत्त्वाकांक्षा के लिए आतुर होने पर अंकुश लगाया जाए। कुबेर सा संपन्न और इंद्र-सा वैभववान बनने की लालसा तो सँजोई जा सकती है, किंतु विश्व व्यवस्था का अनुशासन ऐसा है कि इन लुटेरों की भी अमर्यादित अभिलाषाओं में से पूरी यत्किंचित ही किसी की होती है।

परिवार परिकर का अनावश्यक व्यामोह बढ़ाते चलने की मूर्खता से समय रहते जो सजग हो जाते हैं, ऐसे लोगों के लिए याचनारत भगवान को दरवाजे पर से दुत्कार देने का अकार्य नहीं करना पड़ता। अपरिग्रही साधु ब्राह्मण ही दैवी प्रयोजनों को पूरा कर सकने में समर्थ हुए हैं। लिप्सा और तृष्णा की समुद्र जैसी खाई को पाट सकना किसी से भी नहीं बन पड़ा। सोने के पहाड़ जमा करने से कोई लाभान्वित नहीं हुआ। विश्व विजयी बनने के लिए सब कुछ कर गुजरने के लिए उद्धत महादैत्यों के लिए असीम मनोकामनाओं को पूरा कर सकना संभव नहीं हुआ, तो सामान्य योग्यता और क्षमता वाले कुछ कहने लायक सुखोपभोग कर सकेंगे, इस मान्यता को उपहासास्पद ही बनना पड़ेगा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जो तृष्णाओं को मर्यादित कर सके, जिनकी परमार्थ भावना गहरी खुमारी से उबर सके, उनमें से किसी के लिए भी इन दिनों की अनिवार्य समयदान योजना को उदारतापूर्वक पूरी करने से वंचित न रहना पड़ेगा। व्यस्तता और अभावग्रस्तता तो मात्र बहाने हैं। अभिरुचि होने पर जब अवांछनीय कार्यों के लिए सारा समय और मनोयोग खपाते रह सकते हैं, तो कोई कारण नहीं कि भावनाशीलों के लिए युगचिंतन के अनुकूल बनने में कोई ऐसा व्यवधान सामने आए, जिसे हटा सकना बन ही न पड़े।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

शेष जीवन का उत्सर्ग

कृपणता, कायरता और अभ्यस्त हेय परंपरा मनुष्य को मात्र वासना-तृष्णा के लिए अहंकार प्रदर्शन में यत्किंचित सफलता प्राप्त करने के लिए बाध्य करती है। मनुष्य रूप में कृमि-कीटकों की तरह जीने वालों का चारों ओर फैला हुआ समुदाय भी ऐसा ही अनुकरण, आचरण अपनाने के लिए प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से समझाता-फुसलाता रहता है। अदूरदर्शिता से ग्रस्त मानव इसी प्रयास में जीवन संपदा गँवा देता है और पापों की पोटली सिर पर लादकर हाथ मलते प्रभु के दरबार में वापस लौटता है।

यदि कहीं से एक प्रकाश किरण अंतराल तक पहुँचे, तो मानवी गरिमा का उल्लास उभरे और ऐसा कुछ बन पड़े, जिससे संतोष, सम्मान और प्रभु अनुग्रह का दिव्य अनुदान हाथोंहाथ उपलब्ध करते हुए जीवन बीते।

पेट भरने की आवश्यकता प्रभु ने जन्म से पूर्व ही दूध के दो कटोरे भरकर पूरी कर दी और यह विश्वास दिला दिया कि उसे भूखा-नंगा नहीं मरना पड़ेगा। आश्वासनदाता ईश्वर यदि आँखों से दृष्टिगोचर न होता हो, तो उस प्रतिज्ञा का प्रत्यक्ष निर्वाह शांतिकुंज भी कर सकता है, क्योंकि वहाँ नवसृजन के लिए भावनाशील और कर्मठ व्यक्तियों की असाधारण आवश्यकता सदा अनुभव की जाती है।

उपेक्षा उन्हीं की की जाती है, जो अपना यौवन पूरी तरह गँवा चुके। कोल्हू के बैल की तरह लोभ, मोह के कुचक्र में फँसकर खली की तरह छूँछ बन चुके। जिनमें श्रम-साहस जैसा कुछ शेष

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नहीं रह गया है, आलसी-प्रमादी के समान संसार पर भार बनकर रहते हैं, तो उन पर शांतिकुंज ही अपनी एक-एक रुपए की याचना करके यत्किंचित जमा की गई राशि को क्यों बरबाद करे? स्वर्ग, मुक्ति, सिद्धि, चमत्कार जैसे निरर्थक प्रलोभन देने का यहाँ कोई तारतम्य है नहीं। यहाँ तो कर्म-चेतना को भगवान के चरणों पर अर्पित करने और आत्मोत्कर्ष का प्रत्यक्ष लाभ प्राप्त करने की ही शिक्षा और प्रेरणा दी जाती है।

जिन्हें प्रभु के अनुपम उपहार मानव जीवन के प्रपंचों के दुर्गंधित दलदल में फँसे रहने से अरुचि उत्पन्न हो, जिन्हें युग देवता द्वारा द्वार खटखटाए जाने पर सर्वथा निष्ठुर न बने रहने की भाव चेतना उभरे, उन्हें नए सिरे से सोचना चाहिए कि मसखरी के लिए जिंदगी निछावर करने की अपेक्षा युगधर्म के निर्वाह हेतु शेष जीवन बिताना चाहिए। जहाँ भी ऐसी मान्यता बल पकड़े, वहाँ यह सोच भी गंभीरतापूर्वक उभरना चाहिए कि शेष जीवन को परमार्थ प्रयोजन के लिए ईश्वर के हाथों सौंप देना ही श्रेयस्कर होगा।

शांतिकुंज में स्थानीय एवं परिव्राजक स्तर के भी कई काम रहते हैं। इसके अतिरिक्त शाखा-प्रशाखाओं में कार्यकर्त्ताओं की माँग रहती ही है। उसके लिए तत्परता प्रकट करते हुए नए युग की नई साधना आरंभ की जा सकती है।

कठिनाई तभी पड़ती है, जब कोई व्यक्ति लोकसेवी तो बनता है, पर वितृष्णा से आक्रांत होकर औसत नागरिक से अधिक खरच करना चाहता है, काम से जी चुराता है या अहंकार की पूर्ति के लिए आत्म विज्ञापन का प्रपंच रचता है। ऐसे लोग विज्ञ समुदाय में सर्वत्र दुत्कारे जाते हैं, फिर सेवा-साधना के क्षेत्र में ही उनकी क्यों व्यापक उपयोगिता-आवश्यकता रह जाएगी। धर्मधारणा और सेवा-साधना वस्तुतः योगाभ्यास और तपश्चर्या का ही एक बुद्धिसंगत उपचार है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

घोर संसारी बनकर जीना भी कहाँ सरल है? उसमें भी पग-पग पर उपहास, आरोप और संकट भरे रहते हैं। जो कमाया जाता है, उसे मसखरे झपट ले जाते हैं। उस सड़े दलदल में हाथ-पैर पीटते रहने की अपेक्षा जिन्हें आदर्शवादी अनुशासन अपनाना श्रेयस्कर लगे, वे शांतिकुंज चल पड़ने की सोचें, अपनी संचित कमाई को भी श्रेष्ठ कार्य में लगाने की योजना बनाएँ, अन्यथा उसे मसखरे हड़प लेंगे और अपना गुजारा भिक्षा के धन पर करना पड़ेगा। जिनके पास कुछ अर्थसाधन संचित नहीं है, उनका तो शांतिकुंज अपना घर है ही।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अपने को बदल क्यों न दें?

मकड़ी अपने लिए अपना ताना-बाना स्वयं बुनती और उसी में इच्छानुसार फँसी-जकड़ी रहती है। बंधन अनुभव होने पर रुका करती है, पर जब भी उसकी मान्यता बदलती है, तभी जाले को समेटकर गोली की तरह पेट में निगल लेती है, सहज-स्वभाविक स्थिति में निर्द्वंद्व विचरती है। बाद में वह नए निर्धारण के अनुरूप नया मार्ग अपनाती और नई परिस्थितियाँ पैदा करती है।

मनुष्य भी एक प्रकार की मकड़ी है। वह अपने लिए अपने ढंग का संसार स्वयं विनिर्मित करता है। वह गया-गुजरा, दुःख-दारिद्रय से भरा भी हो सकता है, पर यदि परिवर्तन पर उतारू हो जाए, तो पिछड़ी मनःस्थिति के साथ उन परिस्थितियों को भी बदल सकता है, जो अवांछनीयताओं से भरी, अनावश्यक एवं विपन्नता-विद्रूपता से परिपूर्ण दीखती हैं।

जन्म से एक जैसी रुचि और मान्यताएँ लेकर सभी जन्मते हैं। ईश्वर का इतना ही अनुदान बहुत है, आगे की संरचना मनुष्य स्वयं ही करता है। वह भला भी हो सकता है और बुरा भी। राहगीर एक दिशा में जाने वाली सड़क पर चलता है, पर जब भिन्न आवश्यकता अनुभव करता है, तो चौराहे पर से दूसरी मंजिल तक पहुँच जाता है। ये सब अपने ही निर्णय-निर्धारण और बदलाव का खेल है। यों उसकी परिणति चर्मचक्षुओं से बदलती घटनाओं के रूप में दीखती है, पर वस्तुतः इस उलट-पुलट के पीछे मनुष्य की मानसिकता ही प्रमुख होती है। आखिर मनुष्य भी तो एक विशेष प्रकार की मकड़ी ही है न?

ऐसे उदाहरणों की कमी नहीं जिनमें आरंभ में अपनाए गए निर्धारण को लोगों ने भिन्न दिशा में पूरी तरह बदल दिया है। कुछ उदाहरण ऐसे भी है, जिसमें बहुतों को कुलबुलाते देखा गया है, पर कितनों ने ही ऐसा भी सहज कर दिखाया है, जिसमें उन्होंने अपनी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अभ्यास-अवांछनीयता में पूरी तरह परिवर्तन कर लिया और कुछ से कुछ बन गए। यही प्रक्रिया कायाकल्प कहलाती है।

विपन्नों को संपन्न बनने में भले ही देर लगती हो, पर मानसिकता में अभीष्ट परिवर्तन करके अपना स्तर, क्रिया-कलाप एवं लक्ष्य निश्चित रूप से बदला जा सकता है। यह न आश्चर्य है और न चमत्कार। इसे मानसिकता का दिशा परिवर्तन ही कह सकते हैं। रेलगाड़ी पटरी की दिशा बदल जाने पर कहीं से कहीं जा पहुँचती है।

महामानवों के सहगामी, महान लक्ष्य के लिए द्रुतगति से हुए अग्रगामी जन्म से ही वैसे न थे। उन्होंने अपने चिंतन, वातावरण एवं सहयोगियों के प्रभाव से प्रेरित होकर ऐसे परिवर्तन प्रस्तुत किए कि उन्हें कुछ से कुछ बन जाते देखा गया। सूर, तुलसी, अजामिल, आम्रपाली, अंगुलिमाल आदि जन्म से ही वैसे न थे, जैसे कि वे बाद में बन गए। गांधी और बुद्ध तक आरंभ में अन्य बालकों या किशोरों की तरह ही पले और बढ़े। किंतु उनकी समर्थता ने जब दिशा बदली, तो उस स्थान तक जा पहुँचे, जिसकी किसी ने कभी आशा न की थी और न अपेक्षा रखी थी। कुंती, मदालसा, सीता, शकुंतला ने अपने महान कर्तृत्व को जिस रूप में प्रस्तुत किया था वैसा कुछ आरंभ से ही दृष्टिगोचर नहीं होता था। विश्वामित्र, भर्तृहरि आदि राजपाट छोड़कर ऋषि स्तर अपनाने के लिए मुड़ गए थे। ऐसे परिवर्तन आश्चर्यजनक तो लगते हैं, पर न कठिन हैं और न असंभव। इसे संकल्प बल का लक्ष्य-परिवर्तन और दिशा-निर्धारण के अतिरिक्त और कुछ नहीं कहा जा सकता।

यह विशेष समय ऐसा है, जिसमें जब रात्रि का अंधकार, प्रातःकाल का अरुणोदय जैसे सर्वथा विपरीत परिवर्तन आते रहते हैं तो मूढ़मति जड़ नर-पशुओं को छोड़कर सभी के मन में ऐसी उमंगें उठनी चाहिए कि युग परिवर्तन की महाक्रांति में अपनी भी कुछ सराहनीय भूमिका वह निभाएँ। यह बन पड़ना सर्वथा संभव है। करना केवल इतना है कि जीवन का लक्ष्य और महत्व समझा जाए और अपने चिंतन तथा समय को उस दिशा में नियोजित किया जाए जिसके लिए कि महाकाल के संकेत निरंतर उभर रहे हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

दीपयज्ञों की अति सरल एवं अत्यंत प्रेरक प्रक्रिया

छोटे बच्चे तो मदारियों, बाजीगरों और सपेरों की डुगडुगी सुनकर भी एकत्रित हो जाते हैं, पर विचारशील लोगों को किसी महत्त्वपूर्ण चर्चा में सम्मिलित होने को बुलाना और प्रस्तुत प्रगतिशील तर्कों तथा तथ्यों को सुनने के लिए एक मंच पर जमा करना आसान नहीं है। कठिन होते हुए सचाई यह भी है कि कोई उपयोगी परिवर्तन लाने या कदम उठाने के लिए भावनाशील एवं प्रबुद्धजनों को एक स्थान पर जमा करने के बिना काम नहीं चलता। जिनका समय बहुमूल्य है और जिनका अपना प्रभावशाली व्यक्तित्व है, वे मात्र तभी कहीं पहुँचते हैं, जब उसकी गरिमा और उपयोगिता के संबंध में आश्वास्त हो जाते हैं।

युग परिवर्तन जैसे महत्त्वपूर्ण परिवर्तन के लिए भावनाशील वर्ग को अभीष्ट विचार-विनिमय के लिए एकत्रित करना और उन्हें प्रगतिशील निर्धारणों पर सहमत करके सहयोगी बनने के लिए तत्पर करना एक बड़ा काम है, जिसे किए बिना बात बनती नहीं। इसके बिना महान परिवर्तन संभव नहीं हो सकते हैं, जिनकी कि इन दिनों सर्वत्र उत्सुकतापूर्वक प्रतीक्षा की जा रही है।

कठिनाई यह है कि व्यर्थ के प्रवचनों और बेकार की लेक्चरबाजी से लोग ऊब गए हैं। इसलिए प्रबुद्ध जनों की ज्ञान-गोष्ठियाँ नियोजित करना असाधारण कठिनाई भरा काम बन गया है। अरुचि के वातावरण में लोग टी०वी० देखकर या ताश खेलकर अपना समय गुजारना अच्छा समझते हैं। ऐसी दशा में प्रगति के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अग्रदूत बनने की भूमिका निभाने में समर्थ लोगों को कैसे एकत्रित किया और एकजुट बनाया जाए? बड़े काम, बड़े लोगों के बड़े संकल्प उभारने और बड़े कदम उठाने पर ही संभव हुए हैं। इन तथ्यों के अनुरूप नवसृजन के अग्रदूतों को, समर्थ ज्ञानगोष्ठियाँ नियोजित करने की बात को समुचित महत्त्व देना ही चाहिए।

दीपयज्ञों की योजना इस प्रयोजन के लिए अतीव सार्थक सिद्ध हुई है। धर्म प्रयोजनों के लिए शिक्षित-प्रशिक्षित सभी में इस गए-गुजरे समय में भी किसी न किसी हद तक श्रद्धा विद्यमान है। इसके अनेकों प्रमाण समय-समय पर देखे जा सकते हैं। इन दिनों नव-नियोजित दीपयज्ञ इस प्रयोजन के लिए अतीव आकर्षक और महत्त्वपूर्ण सिद्ध हो रहे हैं। यज्ञ भारतीय धर्म का जनक माना जाता है। गायत्री भारतीय संस्कृति की जननी कही जाती है। दोनों का सम्मिलन गायत्री यज्ञ बनता है। इस हेतु भारतीय मानस के लोगों में विशेष रूप से और अन्य धर्मावलंबियों में साधारण स्तर पर श्रद्धा-सद्भावना पाई जाती है। कम से कम उनका विरोध तो कदाचित ही कहीं, किसी के द्वारा किया जाता है। गायत्री यज्ञ आयोजन अब तक जब कभी, जहाँ कहीं होते रहे हैं, उनमें विज्ञजन श्रद्धापूर्वक बड़ी संख्या में एकत्रित होते देखे गए हैं।

इतने पर भी इन दिनों एक बड़ी कठिनाई यह है कि पुरातन शैली के यज्ञ आयोजनों में इतना खरच पड़ता है, इतनी भाग-दौड़ करनी पड़ती है कि उसे देखते हुए मध्य वर्ग के लोगों में निराशा ही होती है। दूसरी कठिनाई यह है कि एक वर्ग विशेष के, संस्कृत मंत्रों के मर्मज्ञ, अनेकानेक मंत्रों के उच्चारण में अभ्यस्त लोग इस संचालन के लिए इतनी दान-दक्षिणा माँगते हैं, जो इस महँगाई के जमाने में, अन्यमनस्क मानसिकता में, उत्साह नहीं, उपेक्षा ही उत्पन्न कर सकती है। यही कारण है कि समय-समय पर होने वाले धर्मकृत्य दिन-दिन लुप्त होते जाते हैं। संस्कारों और पर्वों तक को श्रद्धा भरे वातावरण में मनाया जाना संभव नहीं हो पाता।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उलझनों को सुलझाने के लिए एक सरल किंतु अभीष्ट प्रयोजनों की सिद्धि कर सकने वाला एक उपचार खोज निकाला गया है–'दीपयज्ञ'। शास्त्रकारों ने समय-समय पर यह विकल्प लिखा है कि खरचीले और झंझट भरे कर्मकाण्ड न बन पड़ें, तो उस स्थान पर जलांजलि देने सरीखे सरल माध्यम भी अपनाए जा सकते हैं। सूर्य को जल अर्घ्य चढ़ाना, दीपक जलाकर अग्निदेव का आवाहन करना भी ऐसा माध्यम बन सकता है, जिससे श्रद्धा-संवर्द्धन का उद्देश्य पूरा हो सके।

शांतिकुंज द्वारा विचारशील लोगों को धर्म प्रयोजनों के लिए एकत्रित करने और उन्हें प्रेरणाएँ अपनाने, संकल्प भरे कदम उठाने के लिए प्रयुक्त किया गया है। कहना न होगा यह छोटे आयोजन बड़े समारोहों की तरह सफल सिद्ध हुए हैं और विचारशील लोगों की अच्छी उपस्थित संभव बनाते रहे हैं। उन धर्मानुष्ठानों में सम्मिलित होने वालों ने ऐसे प्रगतिशील कदम उठाने का साहस किया है, जिसे देखते हुए हर दृष्टि में उनकी सार्थकता स्वीकार करनी पड़ती है।

गायत्री मंत्र जिन्हें याद है, वे कुछ अगरबत्तियाँ और थोड़े से दीपक जलाकर उन्हें एक समग्र देवता की मान्यता देते हैं तथा अत्यंत सरल कर्मकाण्ड को मिल-जुलकर पूरा कर लेते हैं। हवन सामग्री से विनिर्मित सुगंधमय अगरबत्तियों से यज्ञ का प्रतीक बन जाता है और प्रदीप को प्रकाश की अधिष्ठात्री, सद्ज्ञान की देवी गायत्री का प्रतीक मान लिया जाता है। इन आयोजनों को गायत्री यज्ञों का प्रतीक मान लेने में भी किसी को कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए। यह नवयुग की आरती का एक पूर्वाभ्यास है, जो संसार के कोने-कोने में अधिकाधिक उत्साह के साथ संपन्न होते रहना चाहिए। साप्ताहिक सत्संग निर्धारण का तो दीपयज्ञ अविच्छिन्न अंग है। वार्षिकोत्सव तथा अन्य छोटे-बड़े आयोजन भी इसी प्रक्रिया के साथ बड़े रूप में, बड़ी संख्या में संपन्न हो सकते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

दीपयज्ञ का कर्मकाण्ड यहाँ विस्तारपूर्वक लिखना तो अनावश्यक है, पर वह है ऐसा, जिसे कोई भी मिशन से संबंधित व्यक्ति एक घंटे में भली प्रकार सीख या सिखा सकता है।

हर्षोत्सवों, शुभारंभों, संस्कारों, जन्मदिनों एवं युग चेतना संबंधी किसी भी क्रिया-कृत्यों में दीपयज्ञ जोड़ा जा सकता है। बिना किसी खरच या परावलंबन के संपन्न होने वाली इस विधा से सभी शिक्षित नर-नारी अवगत हो जाएँ, तो अपने घर, दफ्तरों, दुकानों, कार्यालयों में धार्मिक वातावरण का उत्साहपूर्वक आयोजन कर सकते हैं।

लोकशिक्षण भी दीपयज्ञों का एक अविच्छिन्न अंग है। सहगान कीर्तन द्वारा भाव संवेदनाओं को आंदोलित करने वाला बहुत कुछ आधार पर्याप्त मात्रा में इनमें जुड़ा हुआ है। यह भी अति सरल है कि जब, जिस प्रसंग से जोड़कर दीपयज्ञ संपन्न किया जाए, तब उस विषय का प्रतिपादन करके कोई भी प्रबुद्ध व्यक्ति उपस्थित जनों को वह विषय हृदयंगम कराने का प्रयत्न करे।

इनमें सम्मिलित करने के लिए विचारशील नर-नारियों के यहाँ व्यक्तित्ववानों को स्वयं जाना चाहिए और आग्रहपूर्वक अनुरोध करना चाहिए कि उनकी उपस्थित, ऐसे विचार वालों को आंदोलित करने के लिए महत्त्वपूर्ण है। इस प्रसंग में स्वयं तो उपस्थित हों ही, साथ ही अपने स्तर के अन्य लोगों को भी उस आयोजन में घसीट लाने में कुछ भी कमी न रहने दें।

धार्मिकता, आध्यात्मिकता, आस्तिकता के सभी महत्त्वपूर्ण संदर्भ दीपयज्ञ के साथ जुड़ते हैं। साथ में बड़ी बात यह है कि युग परिवर्तन के लिए जिस विचारधारा एवं क्रिया-प्रक्रिया को गतिशील करना है, उनका द्वार इन आयोजनों से खुलता है। साथ ही बिना किसी वंश-वेष का भेदभाव रखे, बिना महँगे साधन जुटाए, वह सब हो सकता है, जो जनमानस के परिष्कार हेतु इन दिनों किया जाना नितांत आवश्यक है।

मुद्रक : युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :

ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता** : विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार** : जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक** : मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।
- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार** : जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्घोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org